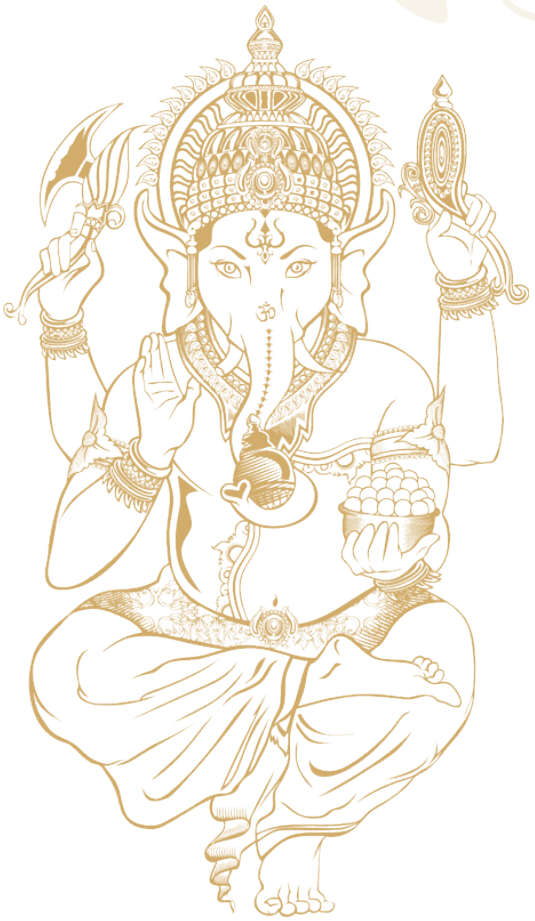

javed bhai

22 Dec 1974

06:25 AM

Mumbai

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121317701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**21-22/12/1974**
दिन	शनि-रविवार
जन्म समय	**06:25:00 घंटे**
इष्ट	58:14:48 घटी
स्थान	**Mumbai**
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	05:46:20 घंटे
वेलान्तर	00:02:06 घंटे
साम्पातिक काल	11:47:09 घंटे
सूर्योदय	07:07:04 घंटे
सूर्यास्त	18:06:07 घंटे
दिनमान	10:59:02 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	06:16:31 धनु
लग्न के अंश	25:49:10 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उ०भाद्रपद - 2**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	व्यतिपात
करण	बव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	थ-थानसिंह
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1896	पौष	1
पंजाबी	संवत : 2031	पौष	8
बंगाली	सन् : 1381	पौष	6
तमिल	संवत : 2031	मार्गड़ी	7
केरल	कोल्लम : 1150	धनु	7
नेपाली	संवत : 2031	पौष	7
चैत्रादि	संवत : 2031	मार्गशीर्ष	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2031	मार्गशीर्ष	शुक्ल 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 12:08:12
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 19:48:05 घंटे
जन्म योग _____: उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____: सिद्धि
योग समाप्ति काल _____: 09:03:31 घंटे
जन्म योग _____: व्यतिपात
सूर्योदय कालीन करण _____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 12:08:12 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 26:32:19
भभोग _____: 65:54:43
भोग्य दशा काल _____: शनि 11 वर्ष 4 मा 21 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

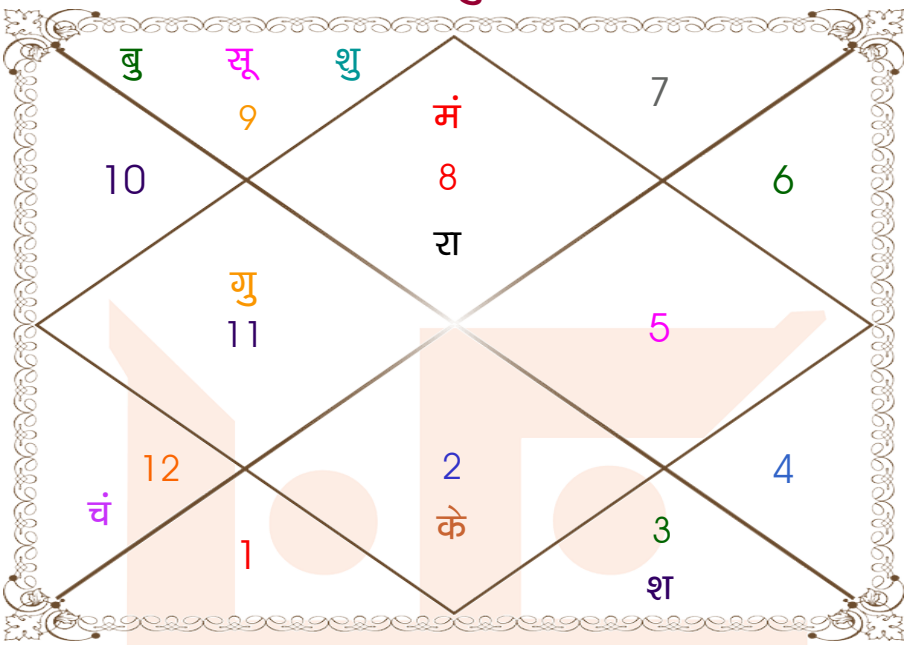

चन्द्र कुंडली

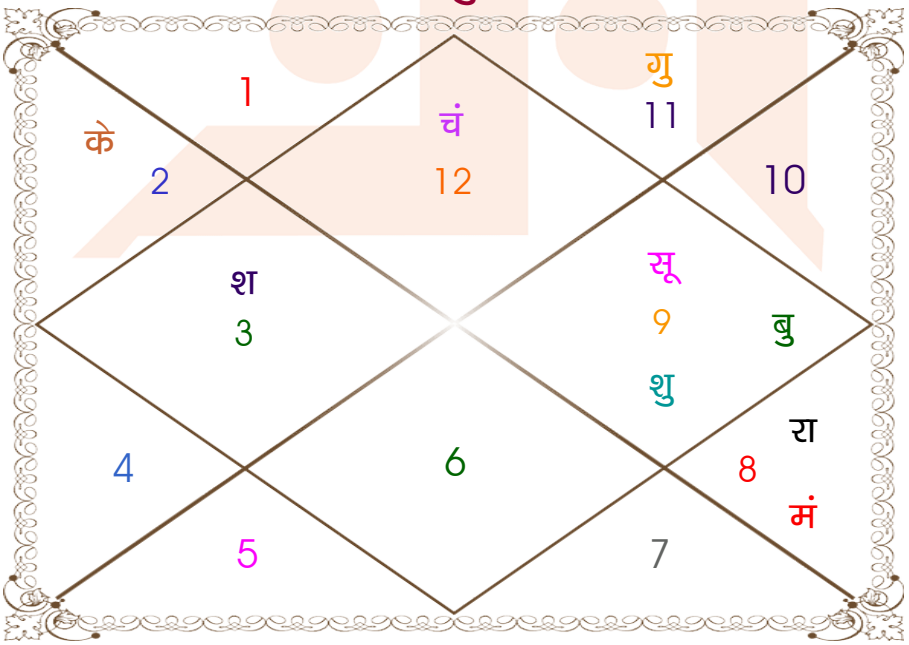

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

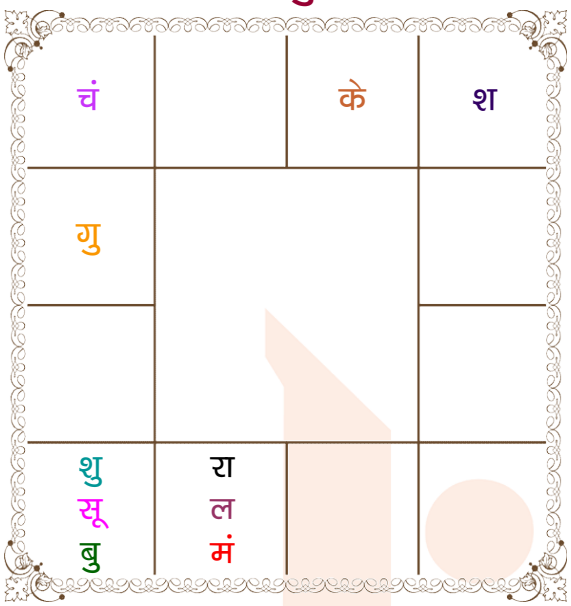

लग्न कुंडली

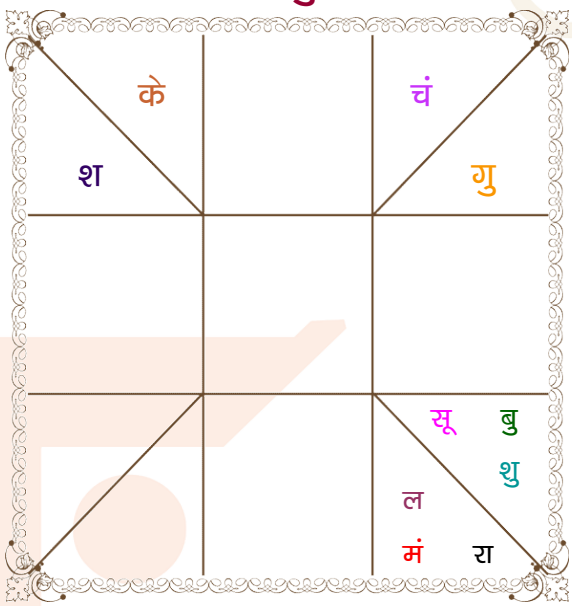

विंशोत्तरी
शनि 11वर्ष 4मा 21दि

शनि

22/12/1974

14/05/2087

शनि	14/05/1986
बुध	14/05/2003
केतु	14/05/2010
शुक्र	14/05/2030
सूर्य	14/05/2036
चन्द्र	14/05/2046
मंगल	14/05/2053
राहु	14/05/2071
गुरु	14/05/2087

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 11मा 29दि

सिद्धा

21/12/2019

21/12/2026

सिद्धा	01/05/2021
संकटा	21/11/2022
मंगला	31/01/2023
पिंगला	22/06/2023
धान्या	21/01/2024
भ्रामरी	31/10/2024
भद्रिका	21/10/2025
उल्का	21/12/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	25:49:10	323:36:17	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
सूर्य			धनु	06:16:31	01:01:06	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	मित्र राशि
चंद्र			मीन	08:40:18	12:06:41	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	सम राशि
मंगल			वृश्चि	14:20:29	00:42:36	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	स्वराशि
बुध		अ	धनु	07:31:20	01:35:16	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	सम राशि
गुरु			कुंभ	18:14:18	00:08:45	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	सम राशि
शुक्र			धनु	17:21:56	01:15:21	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	सम राशि
शनि	व		मिथु	23:09:30	00:04:38	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	मित्र राशि
राहु			वृश्चि	16:33:58	00:00:07	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	शत्रु राशि
केतु			वृष	16:33:58	00:00:07	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	शनि	सम राशि
हर्ष			तुला	08:00:16	00:02:24	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	---
नेप			वृश्चि	16:34:23	00:02:09	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
प्लूटो			कन्या	15:37:09	00:00:43	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	---
दशम भाव			कन्या	02:59:30	--	उ०फाल्गुनी	--	12	बुध	सूर्य	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:30:43

लग्न-चलित

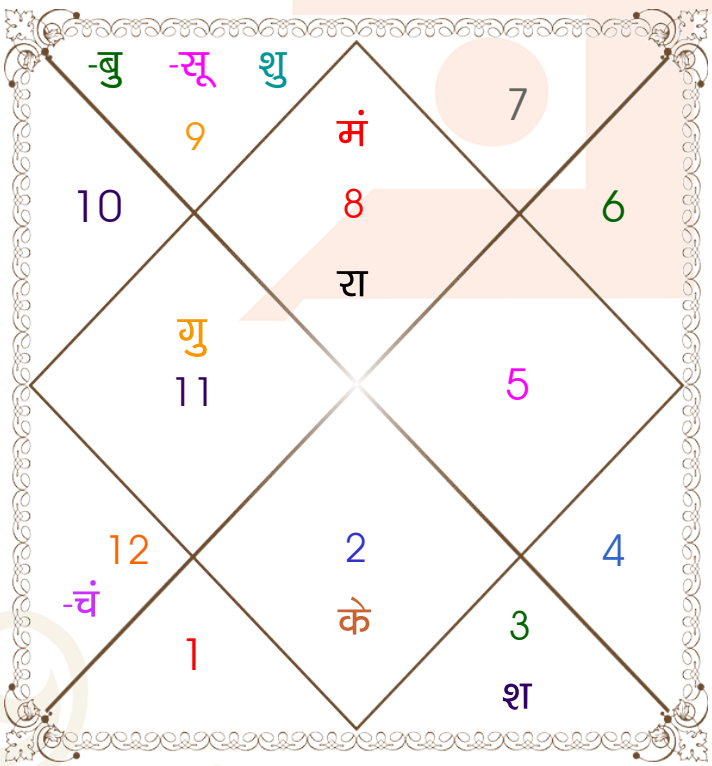

चन्द्र कुंडली

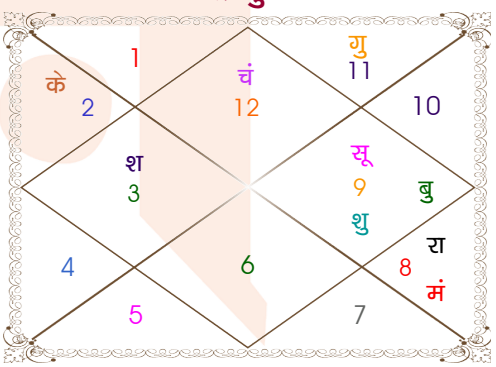

नवमांश कुंडली

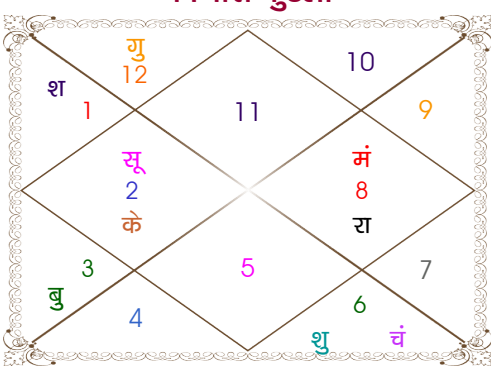

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृश्चिक	12:00:54	वृश्चिक	25:49:10
2	धनु	12:00:54	धनु	28:12:37
3	मकर	14:24:20	कुम्भ	00:36:03
4	कुम्भ	16:47:46	मीन	02:59:30
5	मीन	16:47:46	मेष	00:36:03
6	मेष	14:24:20	मेष	28:12:37
7	वृष	12:00:54	वृष	25:49:10
8	मिथुन	12:00:54	मिथुन	28:12:37
9	कर्क	14:24:20	सिंह	00:36:03
10	सिंह	16:47:46	कन्या	02:59:30
11	कन्या	16:47:46	तुला	00:36:03
12	तुला	14:24:20	तुला	28:12:37

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	25:49:10
2	धनु	26:20:08
3	मकर	29:18:13
4	मीन	02:59:30
5	मेष	04:01:25
6	वृष	01:07:34
7	वृष	25:49:10
8	मिथुन	26:20:08
9	कर्क	29:18:13
10	कन्या	02:59:30
11	तुला	04:01:25
12	वृश्चिक	01:07:34

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

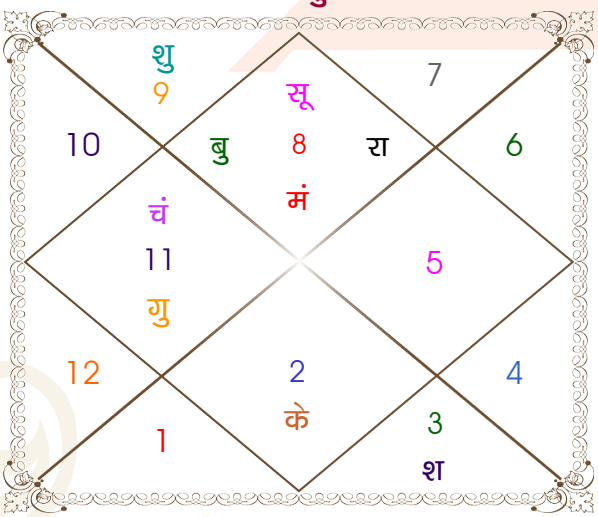

भाव कुंडली

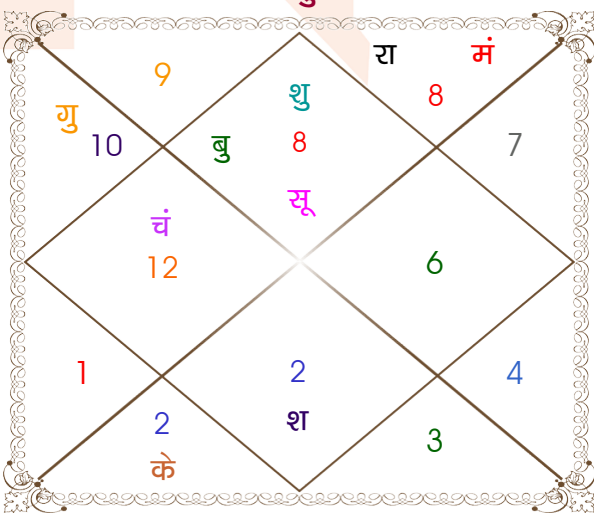

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			-------- अवस्था --------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	कुमार	मुदित	नृत्यलिप्सा	4.17	26 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	वृद्ध	शक्त	आगम	7.54	55 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	युवा	स्वस्थ	कौतुक	4.43	82 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	कुमार	विकल	आगम	0.00	38 %
गुरु	अमात्य	धन	वृद्ध	शक्त	आगम	0.84	64 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	युवा	शान्त	आगम	4.29	39 %
शनि	आत्मा	आयु	वृद्ध	मुदित	नेत्रपाणि	1.75	36 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	खल	प्रकाश	0.00	67 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	शान्त	आगम	0.00	67 %
कुल						23.02	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

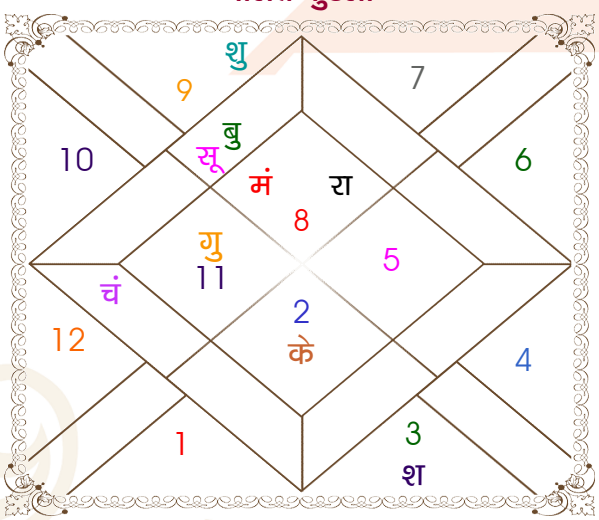

लग्न-चलित

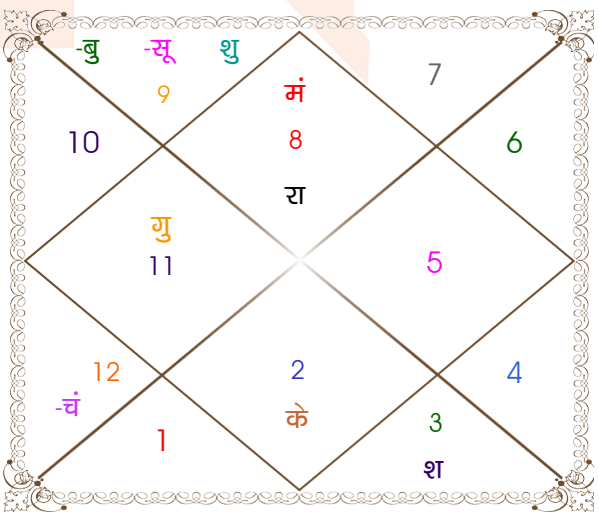

सुदर्शन चक्र

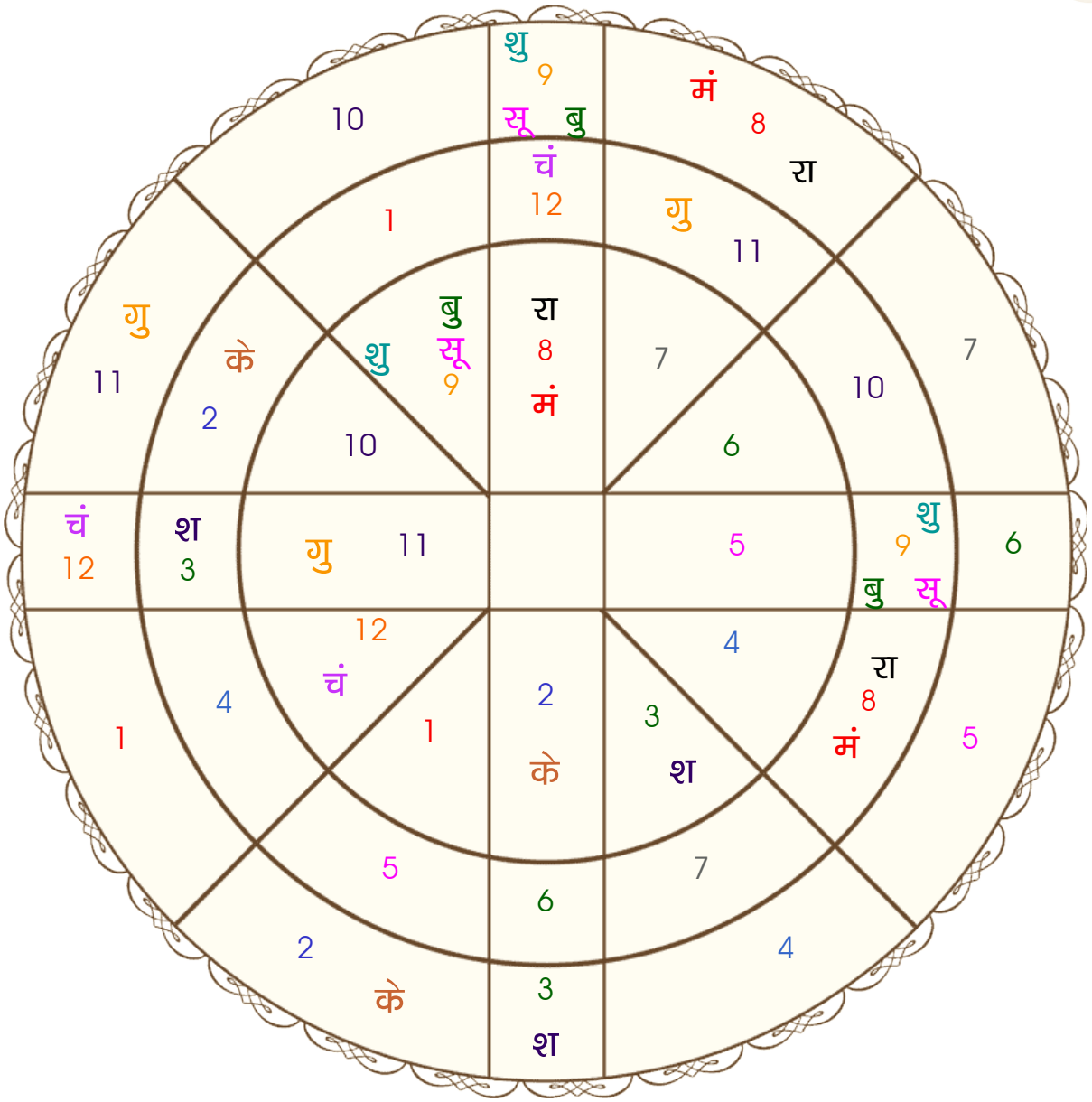

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शनि 11 वर्ष 2 मास 27 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	06:22:55	गुरु	केतु	राहु	शनि
चंद्र		मीन	08:46:42	गुरु	शनि	शुक्र	मंगल
मंगल		वृश्चि	14:26:53	मंगल	शनि	राहु	शुक्र
बुध		धनु	07:37:44	गुरु	केतु	गुरु	गुरु
गुरु		कुंभ	18:20:42	शनि	राहु	चंद्र	राहु
शुक्र		धनु	17:28:20	गुरु	शुक्र	मंगल	राहु
शनि	व	मिथु	23:15:54	बुध	गुरु	शनि	मंगल
राहु		वृश्चि	16:40:22	मंगल	बुध	बुध	
केतु		वृष	16:40:22	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
हर्ष		तुला	08:06:40	शुक्र	राहु	राहु	शुक्र
नेप		वृश्चि	16:40:48	मंगल	बुध	बुध	
प्लूटो		कन्या	15:43:33	बुध	चंद्र	शनि	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	25:55:34	मंगल	बुध	राहु	चंद्र
2	धनु	26:26:32	गुरु	शुक्र	केतु	शनि
3	मक	29:24:37	शनि	मंगल	शनि	राहु
4	मीन	03:05:54	गुरु	गुरु	राहु	चंद्र
5	मेष	04:07:49	मंगल	केतु	चंद्र	गुरु
6	वृष	01:13:59	शुक्र	सूर्य	गुरु	गुरु
7	वृष	25:55:34	शुक्र	मंगल	राहु	चंद्र
8	मिथु	26:26:32	बुध	गुरु	केतु	शनि
9	कर्क	29:24:37	चंद्र	बुध	शनि	राहु
10	कन्या	03:05:54	बुध	सूर्य	शनि	शनि
11	तुला	04:07:49	शुक्र	मंगल	शुक्र	शनि
12	वृश्चि	01:13:59	मंगल	गुरु	मंगल	सूर्य

के.पी. अयनांश : 23:24:19

फॉरच्युना : कुम्भ 28:19:21

लग्न कुंडली

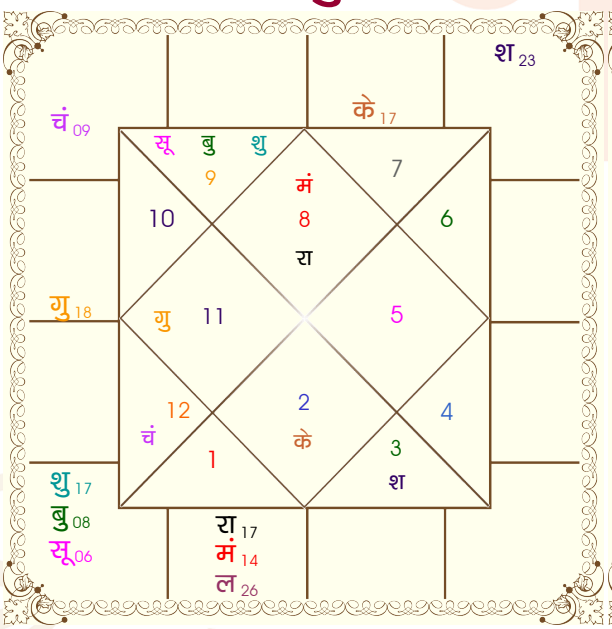

भाव कुंडली

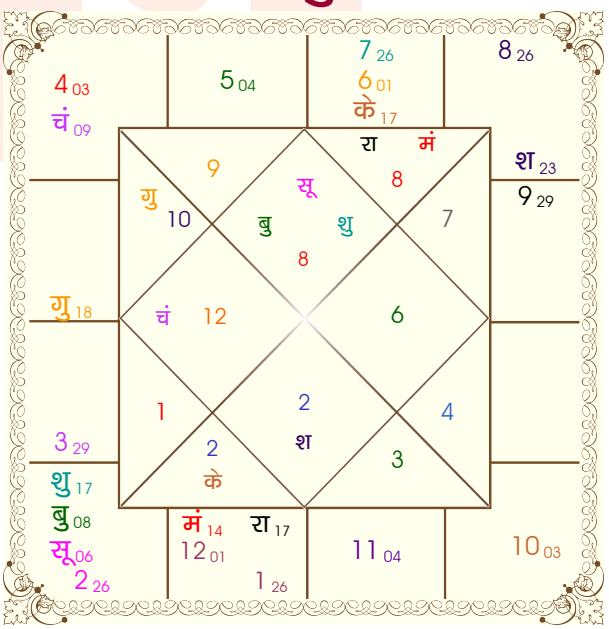

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, मंगल- बुध, शुक्र+ राहु,
2	गुरु- शनि-
3	चंद्र- मंगल- गुरु, शनि+
4	चंद्र, गुरु- शनि- केतु,
5	मंगल-
6	सूर्य, बुध, शुक्र, केतु,
7	चंद्र, मंगल, शुक्र, शनि,
8	बुध- राहु-
9	चंद्र- केतु-
10	बुध- राहु-
11	शुक्र,
12	मंगल, गुरु, राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 6,
चंद्र	3- 4, 7, 9-
मंगल	1- 3- 5- 7, 12,
बुध	1, 6, 8- 10-
गुरु	2- 3, 4- 12,
शुक्र	1+ 6, 7, 11,
शनि	2- 3+ 4- 7,
राहु	1, 8- 10- 12,
केतु	4, 6, 9-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	शु रा	सू बु शु	--	मं
2	--	--	श	गु
3	श	गु	चं मं	श
4	के	चं	श	गु
5	--	--	--	मं
6	सू बु	के	शु	शु
7	चं मं	श	शु	शु
8	--	--	रा	बु
9	--	--	के	चं
10	--	--	रा	बु
11	--	--	शु	शु
12	गु	मं रा	--	मं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	---	6,10	धनु	1
चंद्र	9	---	मीन	4
मंगल	1,5,12	3,7,11	वृश्चिक	12
बुध	8,10	1,9	धनु	1
गुरु	2,4	4,8,12	कुम्भ	3
शुक्र	6,7,11	2	धनु	1
शनि	3	---	मिथुन	7
राहु	---	---	वृश्चिक	12
केतु	---	5	वृष	6

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	5	6	---	---	12
चंद्र	3	---	7	6,7,11	2	1
मंगल	3	---	7	---	---	12
बुध	---	5	6	2,4	4,8,12	3
गुरु	---	---	12	9	---	4
शुक्र	6,7,11	2	1	1,5,12	3,7,11	12
शनि	2,4	4,8,12	3	3	---	7
राहु	8,10	1,9	1	8,10	1,9	1
केतु	9	---	4	3	---	7

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	246.28	338.67	224.34	247.52	318.24	257.37	83.16	226.57	46.57	188.00	226.57	165.62
सूर्य	--	चतु	--	युति	पंचा	युति	--	--	--	--	--	--
246.28	0.00	2.43	0.00	9.91	1.00	3.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त
338.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.47
मंगल	--	पंच	--	--	4था	--	8वां	युति	सप्त	--	युति	--
224.34	0.00	0.26	0.00	0.00	9.18	0.00	6.03	9.73	9.73	0.00	9.73	0.00
बुध	युति	चतु	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
247.52	9.91	2.87	0.00	0.00	0.00	5.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	--	5वां	--	चतु	9वां	--	--
318.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.70	0.00	2.72	4.79	0.00	0.00
शुक्र	युति	--	--	युति	तृती	--	सप्त	--	षष्ठ	--	--	--
257.37	3.98	0.00	0.00	5.14	2.92	0.00	8.22	0.00	0.31	0.00	0.00	0.00
शनि	--	10वा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--
83.16	0.00	0.54	0.00	0.00	0.00	8.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
राहु	--	--	युति	--	चतु	--	--	--	सप्त	--	युति	--
226.57	0.00	0.00	9.73	0.00	2.72	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	10.00	0.00
केतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	सप्त	--	--	सप्त	पंच
46.57	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	10.00	2.91
हर्ष	तृती	षष्ठ	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	--
188.00	2.70	0.50	0.00	2.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	चतु	--	--	युति	सप्त	--	--	--
226.57	0.00	0.00	9.73	0.00	2.72	0.00	0.00	10.00	10.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	तृती	--	--	चतु	--	तृती	--	--	तृती	--
165.62	0.00	7.47	2.83	0.00	0.00	2.69	0.00	2.91	0.00	0.00	2.91	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	235.82	268.21	300.60	332.99	0.60	28.21	55.82	88.21	120.60	152.99	180.60	208.21
सूर्य	--	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
246.28	0.00	0.00	0.26	1.96	0.26	0.00	4.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
338.67	0.00	0.00	0.00	8.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.28	0.00	0.00
मंगल	युति	--	--	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--
224.34	3.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.60	1.18	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
247.52	3.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	युति	--	--	--	5वां	--	सप्त	--	9वां
318.24	0.00	0.00	0.00	0.26	0.00	0.00	0.00	5.03	0.00	0.26	0.00	5.03
शुक्र	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
257.37	0.00	4.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.22	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच
83.16	0.00	8.63	0.00	0.00	7.11	0.00	0.00	8.63	0.00	5.15	0.00	0.74
राहु	युति	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--
226.57	5.66	0.00	0.00	0.00	0.05	0.00	5.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	अष्टां	--
46.57	5.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.66	0.00	0.00	0.00	0.05	0.00
हर्ष	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
188.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.14	0.00
नेप	युति	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--
226.57	5.67	0.00	0.00	0.00	0.04	0.00	5.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	अष्टां	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--
165.62	0.00	0.00	1.00	2.46	0.02	0.00	0.00	0.00	0.00	2.46	0.02	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	235.82	266.34	299.30	332.99	4.02	31.13	55.82	86.34	119.30	152.99	184.02	211.13
सूर्य	--	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
246.28	0.00	0.00	0.00	1.96	2.49	0.00	4.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
338.67	0.00	0.00	0.00	8.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.28	0.00	0.00
मंगल	युति	--	--	--	--	सप्त	सप्त	8वां	--	--	--	युति
224.34	3.60	0.00	0.00	0.00	0.00	1.86	3.60	3.10	0.00	0.00	0.00	1.86
बुध	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
247.52	3.38	0.00	0.00	0.00	1.83	0.00	3.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	युति	--	पंचा	--	5वां	--	सप्त	9वां	9वां
318.24	0.00	0.00	0.00	0.26	0.00	0.18	0.00	6.62	0.00	0.26	0.82	2.19
शुक्र	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
257.37	0.00	5.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.90	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--
83.16	0.00	9.45	0.00	0.00	4.20	0.00	0.00	9.45	0.00	5.15	0.00	0.00
राहु	युति	नवां	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
226.57	5.66	0.94	0.40	0.00	0.00	0.00	5.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	--	--
46.57	5.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.66	0.94	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
188.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.14	0.00
नेप	युति	नवां	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
226.57	5.67	0.93	0.41	0.00	0.00	0.00	5.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
165.62	0.00	0.00	0.00	2.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.46	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

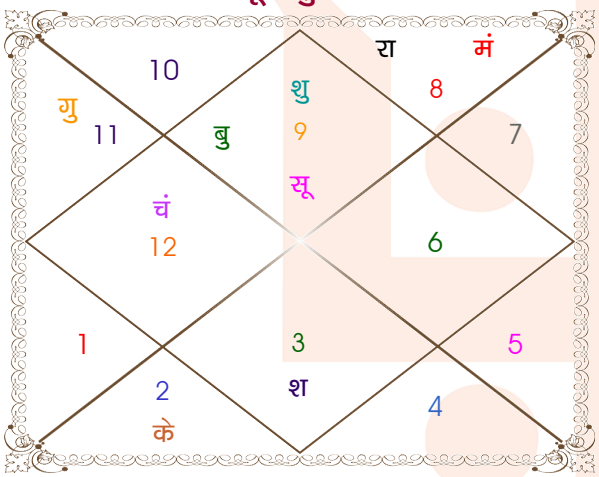

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

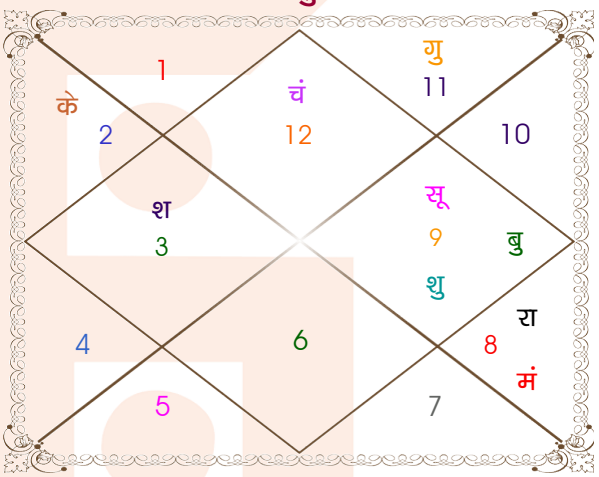

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

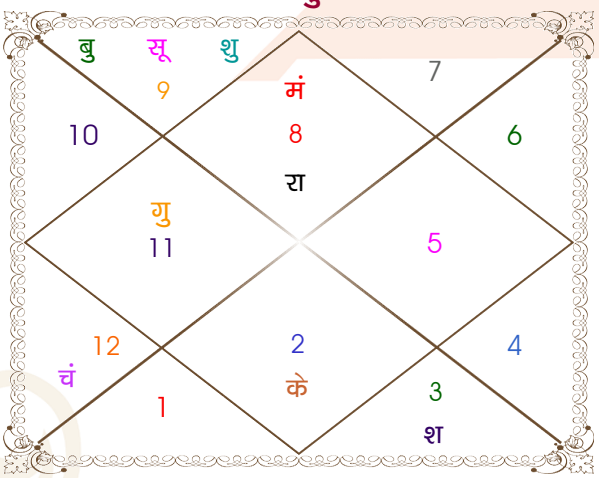

देह विचारः

होरा कुंडली

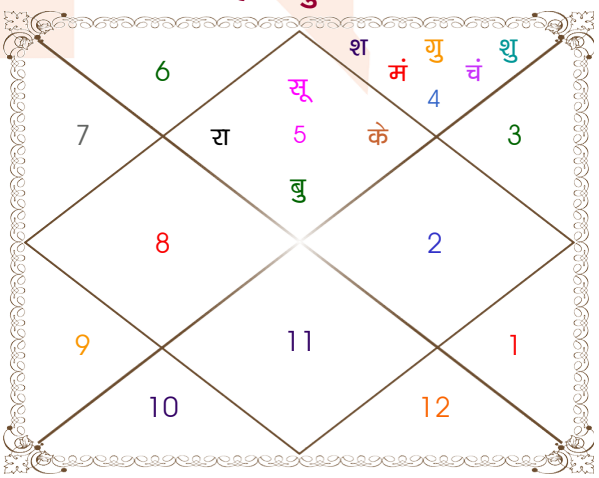

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

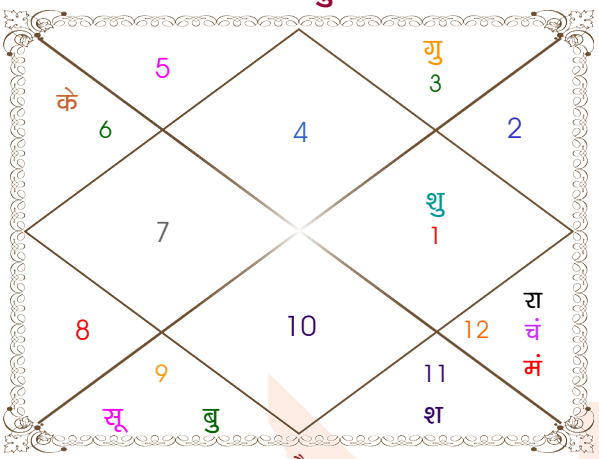

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

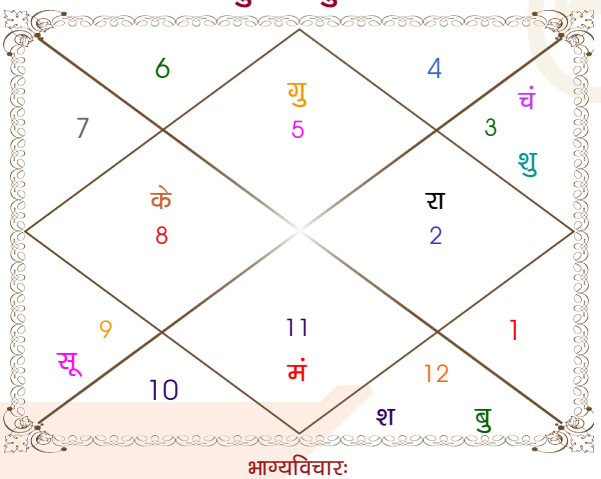

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

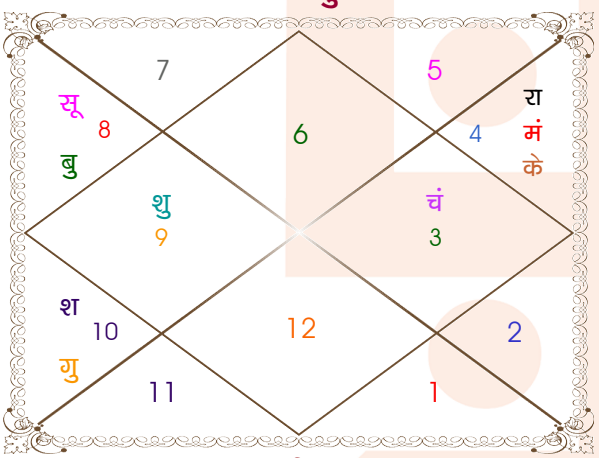

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

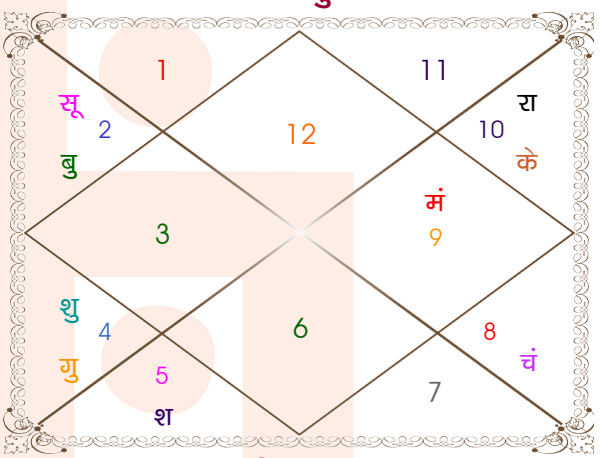

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

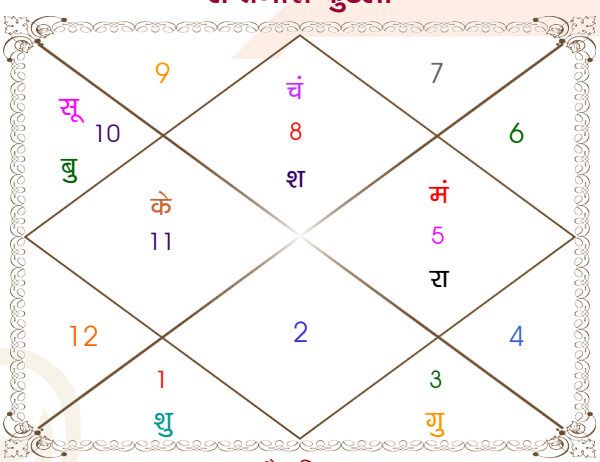

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

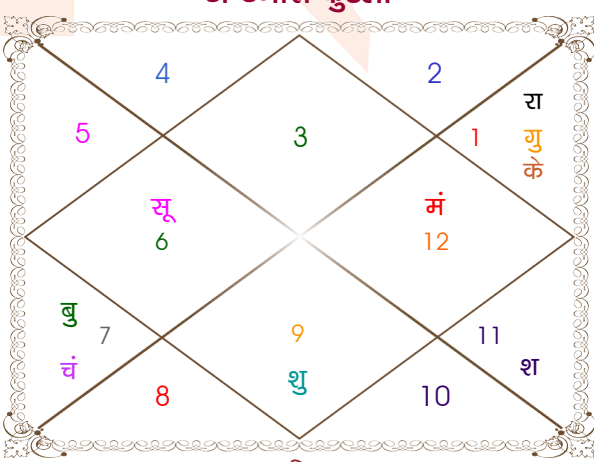

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

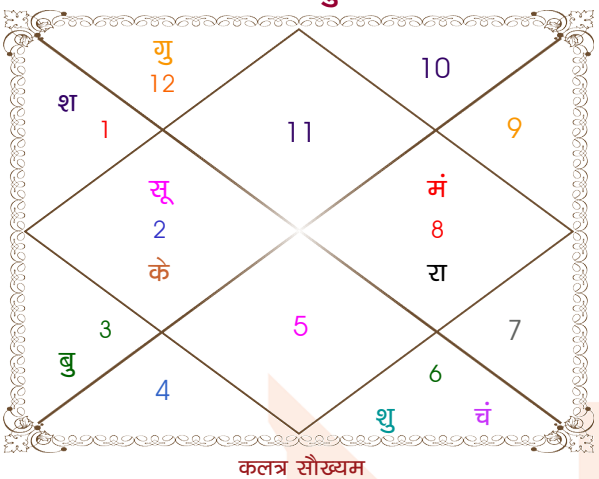

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

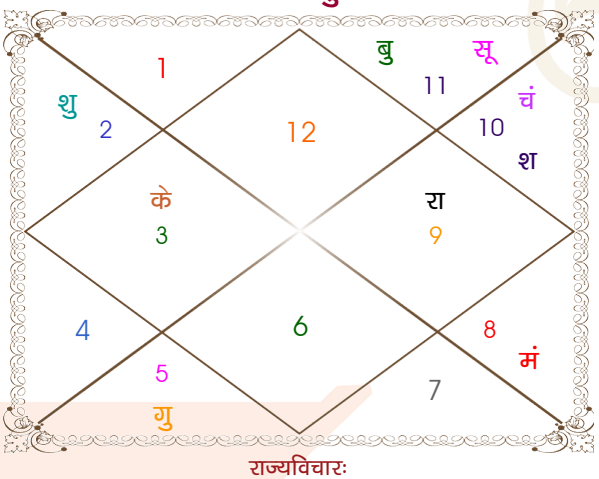

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

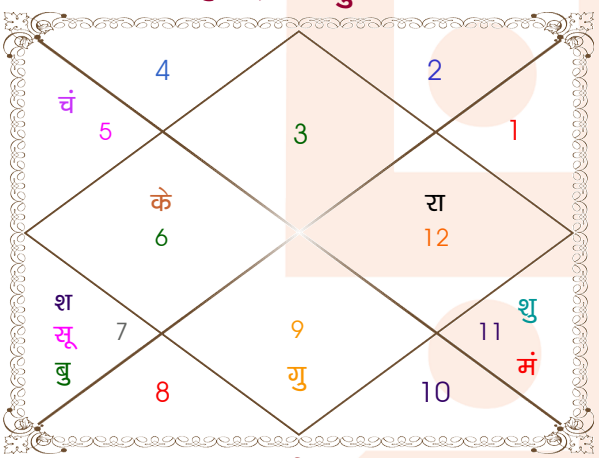

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

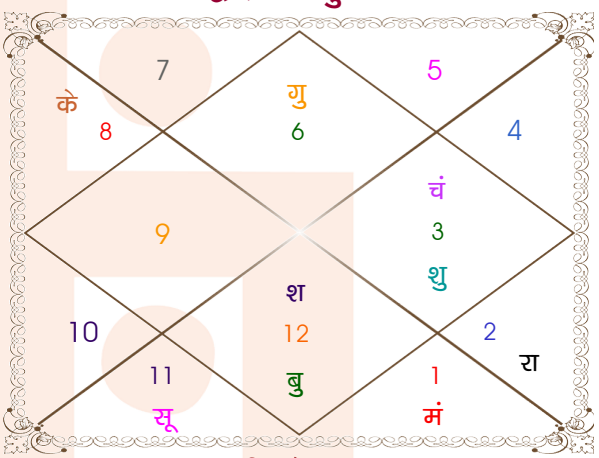

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

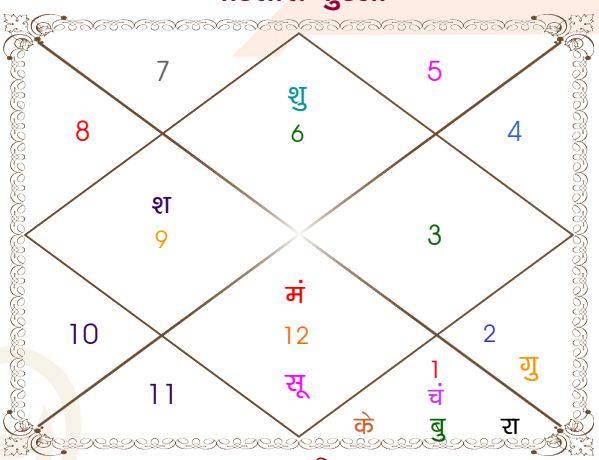

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

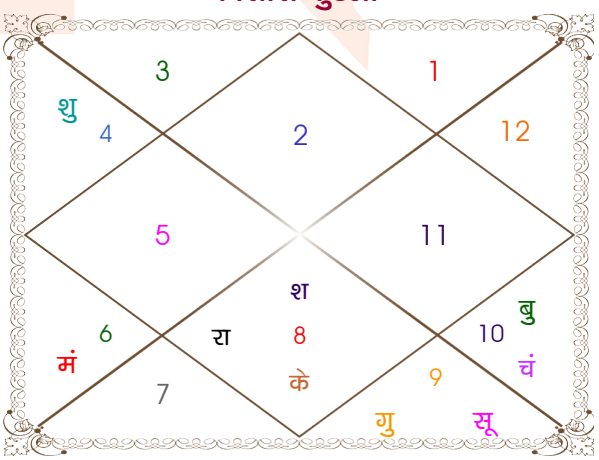

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

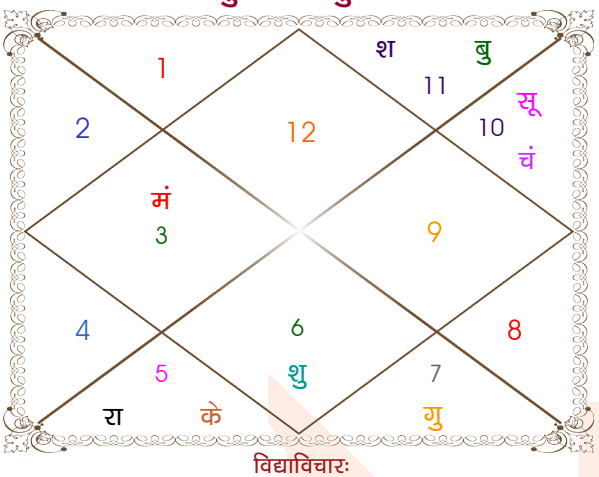

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

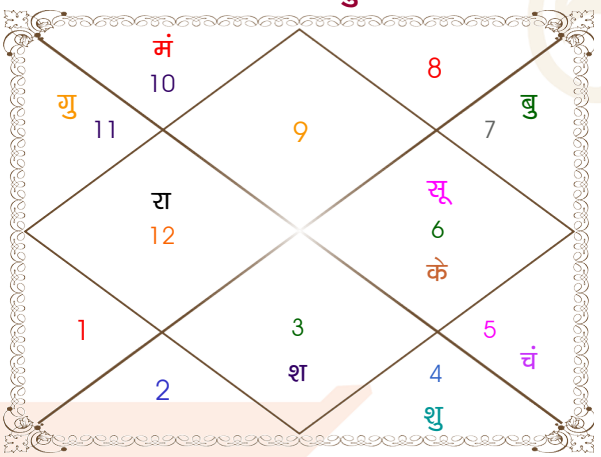

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

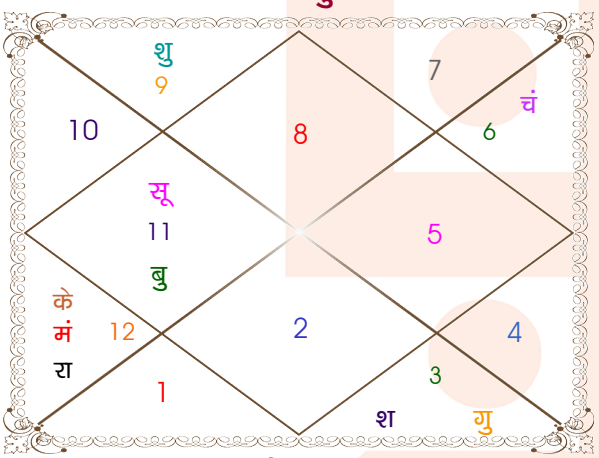

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

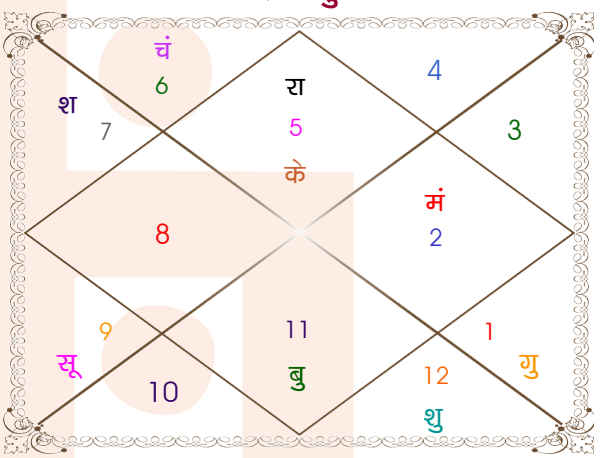

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

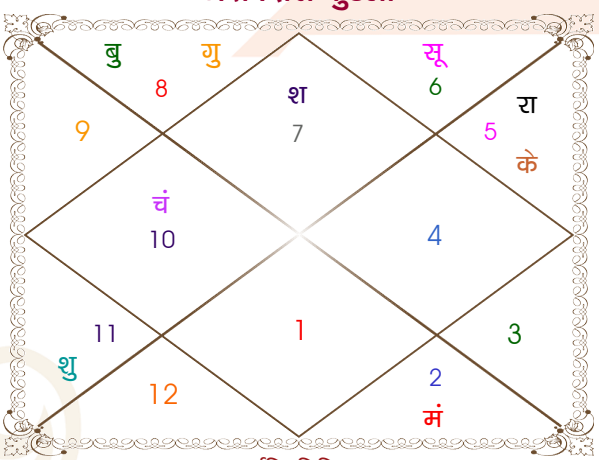

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

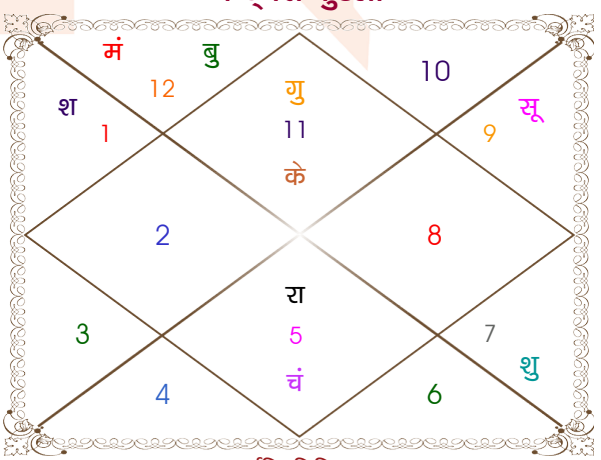

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृश्चि	धनु	मीन	वृश्चि	धनु	कुंभ	धनु	मिथु	वृश्चि	वृष
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कर्क	धनु	मीन	मीन	धनु	मिथु	मेष	कुंभ	मीन	कन्या
चतुर्थांश	सिंह	धनु	मिथु	कुंभ	मीन	सिंह	मिथु	मीन	वृष	वृश्चि
सप्तमांश	वृश्चि	मक	वृश्चि	सिंह	मक	मिथु	मेष	वृश्चि	सिंह	कुंभ
नवमांश	कुंभ	वृष	कन्या	वृश्चि	मिथु	मीन	कन्या	मेष	वृश्चि	वृष
दशमांश	मीन	कुंभ	मक	वृश्चि	कुंभ	सिंह	वृष	मक	धनु	मिथु
द्वादशांश	कन्या	कुंभ	मिथु	मेष	मीन	कन्या	मिथु	मीन	वृष	वृश्चि
षोडशांश	कन्या	मीन	मेष	मीन	मेष	वृष	कन्या	धनु	मेष	मेष
विंशांश	वृष	धनु	मक	कन्या	मक	धनु	कर्क	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	मीन	मक	मक	मिथु	कुंभ	तुला	कन्या	कुंभ	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	धनु	कन्या	सिंह	मक	तुला	कुंभ	कर्क	मिथु	मीन	कन्या
त्रिंशांश	वृश्चि	कुंभ	कन्या	मीन	कुंभ	मिथु	धनु	मिथु	मीन	मीन
खवेदांश	सिंह	धनु	कन्या	वृष	कुंभ	मेष	मीन	तुला	सिंह	सिंह
अक्षवेदांश	तुला	कन्या	मक	वृष	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	तुला	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	कुंभ	धनु	सिंह	मीन	मीन	कुंभ	तुला	मेष	सिंह	कुंभ

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
मंगल	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
शुक्र	0 ---	0 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	1 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.00	16.70	18.50	15.35	12.40	12.75	10.45	9.30	9.15
सप्तवर्ग	11.70	15.63	18.35	14.23	12.30	12.88	9.45	9.43	9.30
दशवर्ग	13.28	15.60	18.15	13.20	10.75	15.13	9.05	10.23	9.55
षोडशवर्ग	13.65	15.75	17.25	13.98	11.75	13.88	8.55	8.90	9.33

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	19	42	35	32	14	27	21
सप्तवर्गज बल	83	131	165	90	86	83	60
ओजयुग्मक बल	15	30	0	30	15	15	30
केन्द्र बल	30	30	60	30	60	30	30
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	161	233	260	182	176	154	141
कुल दिग्बल	29	58	36	56	33	35	51
नतोन्नत बल	29	31	31	60	29	29	31
पक्ष बल	29	62	29	29	31	31	29
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	0	29	2	60	21	1	1
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	58	121	197	149	140	60	136
कुल चेष्टाबल	0	0	8	9	26	8	56
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-1	-30	16	-2	-32	-10	-2
कुल षट्बल	307	434	536	420	377	290	390
रूप षट्बल	5.1	7.2	8.9	7.0	6.3	4.8	6.5
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.0	1.2	1.8	1.0	1.0	0.9	1.3
संबंधित पद	4	3	1	5	6	7	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	1.15	35.92	17.20	16.66	19.39	14.24	34.18
कष्ट फल	49.71	23.00	35.61	37.62	39.32	41.73	13.23

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	536	377	390	377	536	536	290	420	307	420	290	290
भावदिग्बल	0	20	40	60	10	20	30	10	50	30	40	50
भावदृष्टि बल	15	-15	-8	19	24	33	67	97	55	65	46	58
कुल भाव बल	551	382	422	456	569	588	387	527	413	515	376	398
रूप भाव बल	9.2	6.4	7.0	7.6	9.5	9.8	6.4	8.8	6.9	8.6	6.3	6.6
संबंधित पद	3	11	7	6	2	1	10	4	8	5	12	9

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

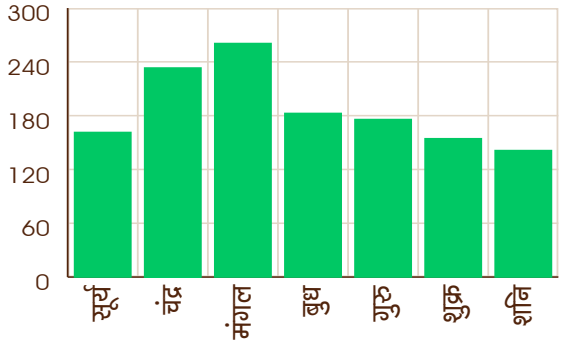

दिग्बल

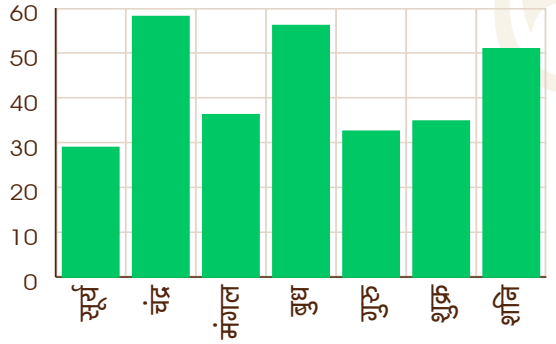

कालबल

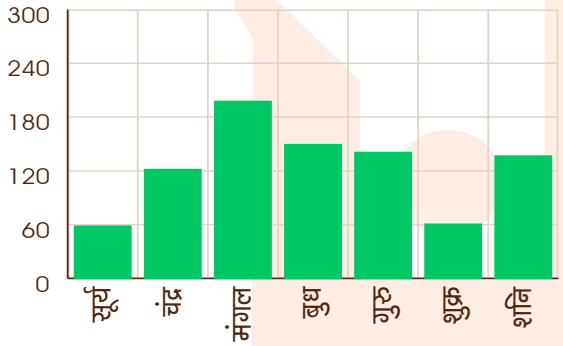

चेष्टाबल

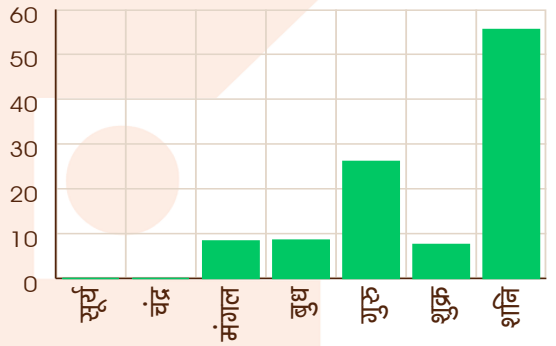

नैसर्गिक बल

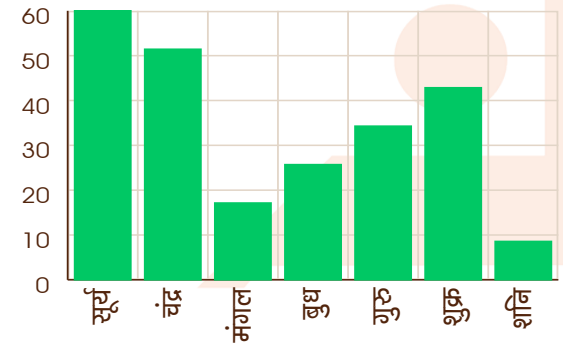

दृग्बल

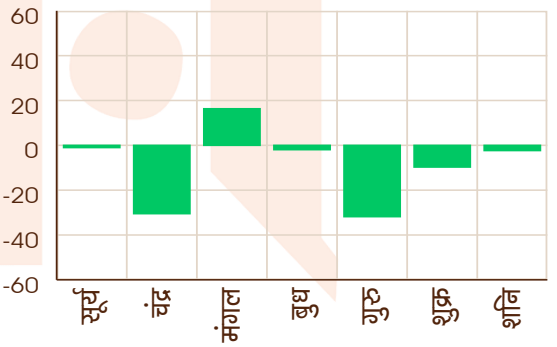

रूप षट्बल

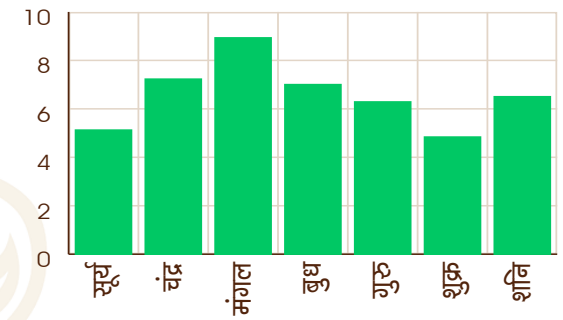

न्यूनतम षट्बल

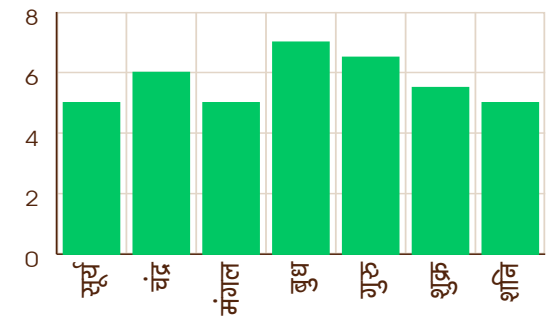

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

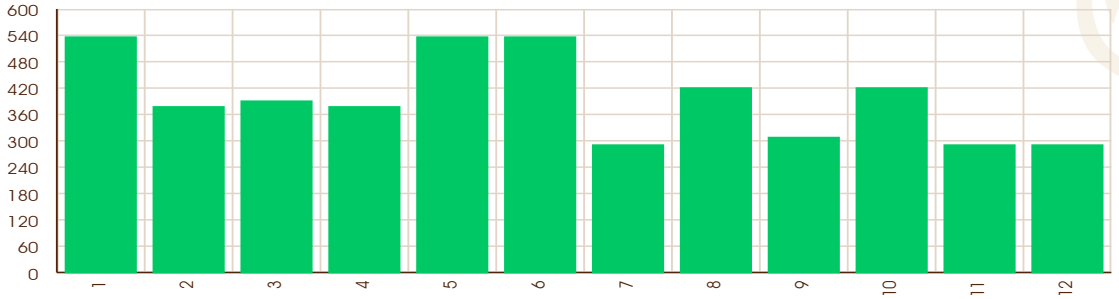

भावदिग्बल

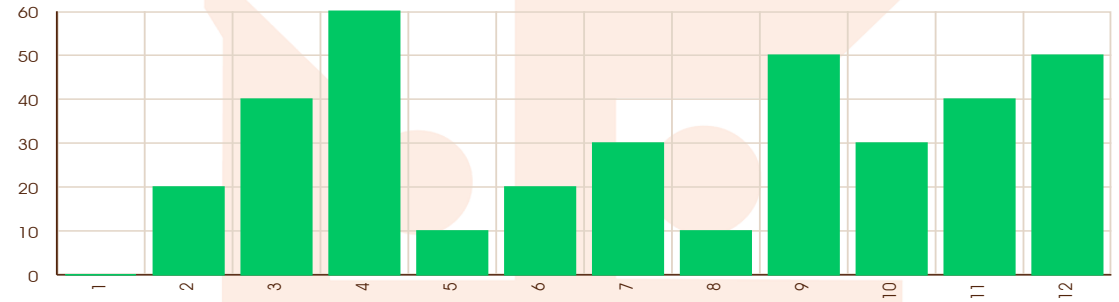

भावदृष्टि बल

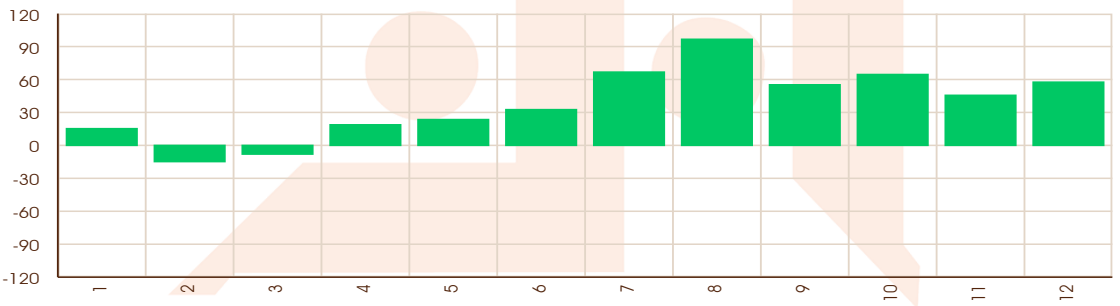

भाव बल

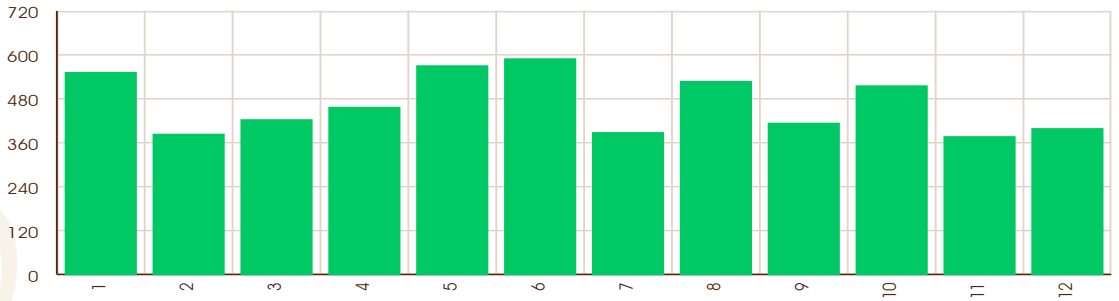

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

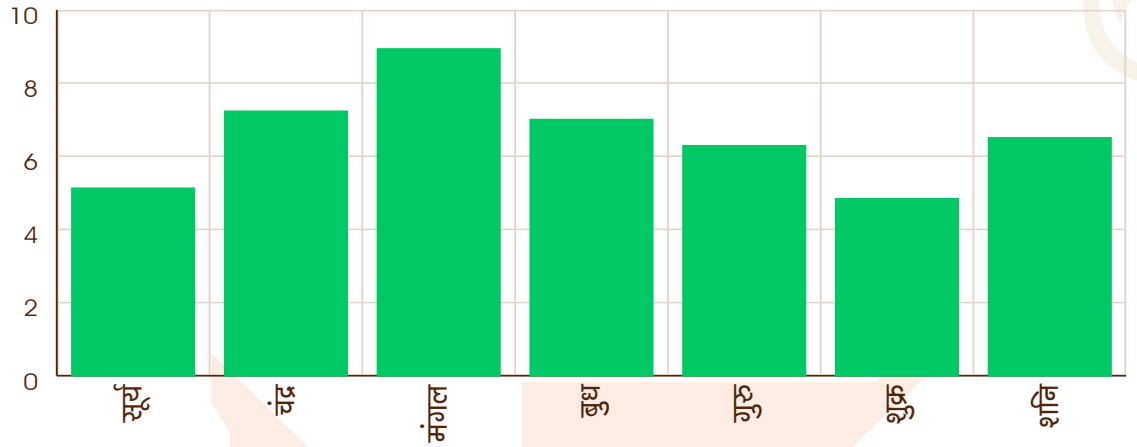

इष्ट - कष्ट फल

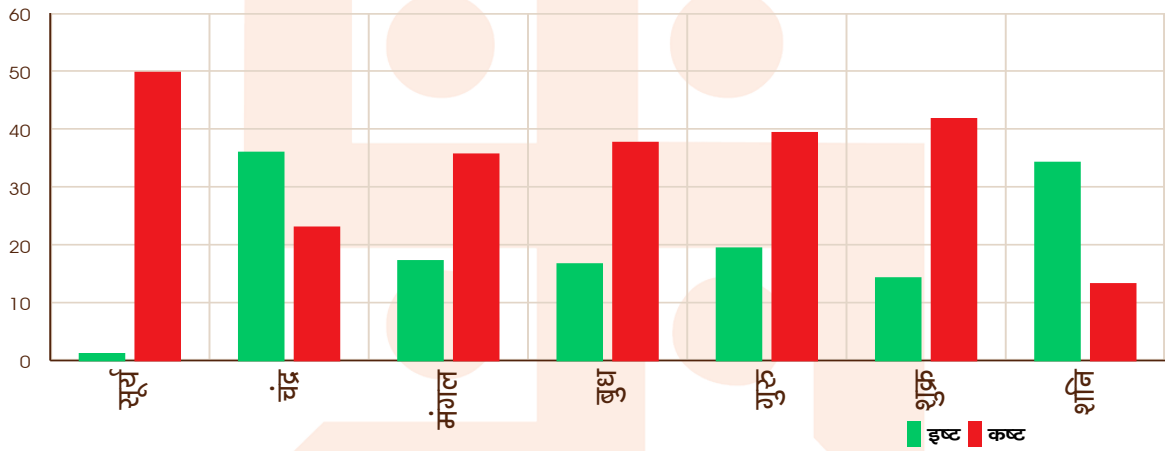

रूप भाव बल

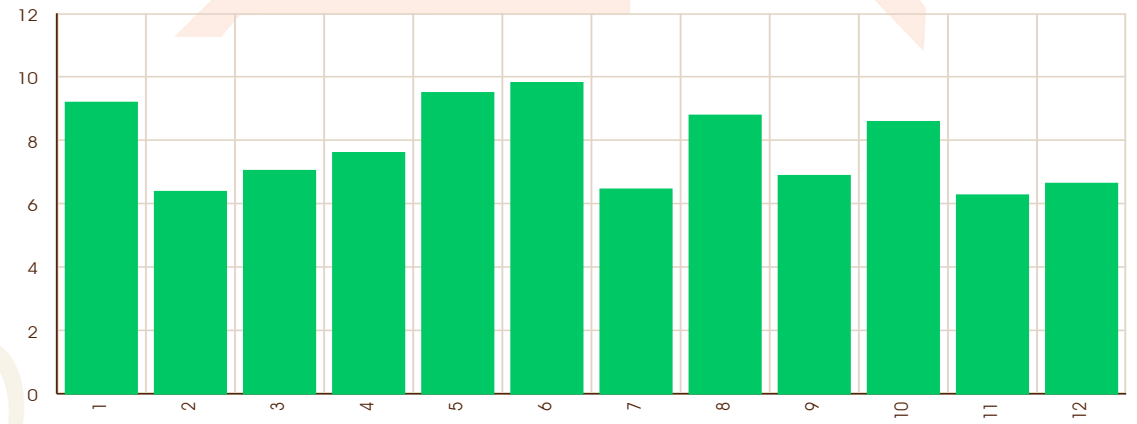

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृश्चि	25:49:10	--	--	ज्येष्ठा	3	18
गुलिक	गु	सिंह	14:02:24	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
काल	का	कन्या	07:08:27	--	--	उ०फाल्गुनी	4	12
मृत्यु	मृ	तुला	22:40:26	--	--	विशाखा	1	16
यमघंटक	यम	मिथु	29:40:47	--	--	पुनर्वसु	3	7
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	वृश्चि	14:17:32	--	--	अनुराधा	4	17
धूम	धू	मेष	19:36:31	--	--	भरणी	2	2
व्यतिपात	व्य	मीन	10:23:29	--	--	उ०भाद्रपद	3	26
परिवेश	परि	कन्या	10:23:29	--	--	हस्त	1	13
इन्द्रचाप	इ	तुला	19:36:31	--	--	स्वाति	4	15
उपकेतु	उप	वृश्चि	06:16:31	--	--	अनुराधा	1	17

प्राणपद	:	कन्या	05:51:46	कारकाँश लग्न	:	मेष	28:25:28
भाव लग्न	:	वृश्चि	15:17:56	होरा लग्न	:	वृश्चि	04:46:42
घटी लग्न	:	तुला	13:40:20	वर्णद लग्न	:	धनु	29:24:08

उपग्रह कुंडली

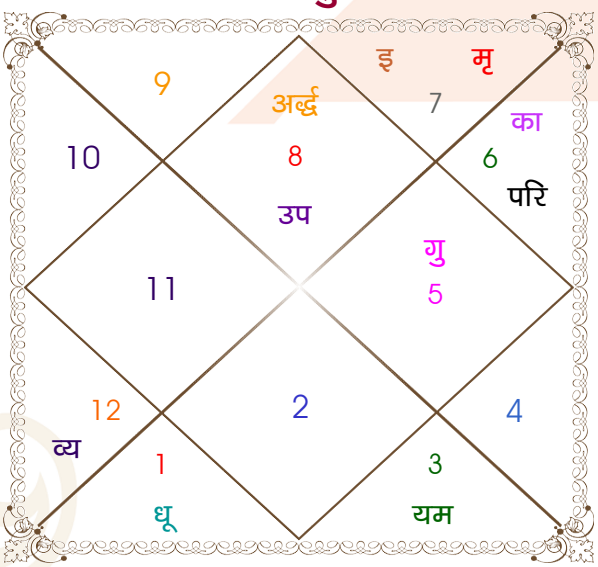

आरूढ़ कुंडली

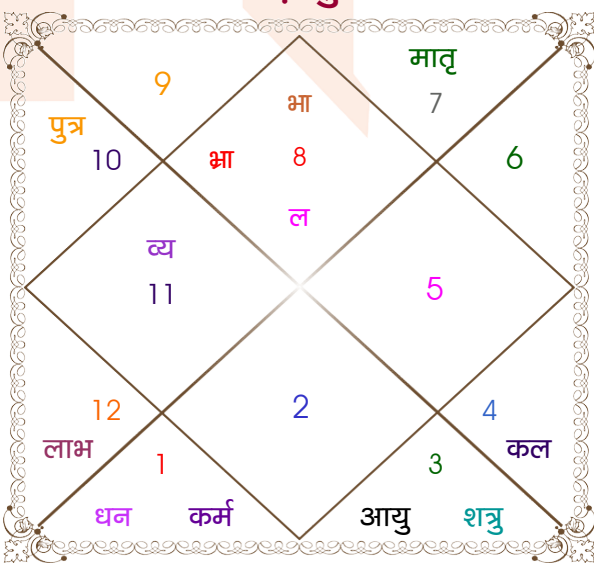

षन्नाडी चक्र

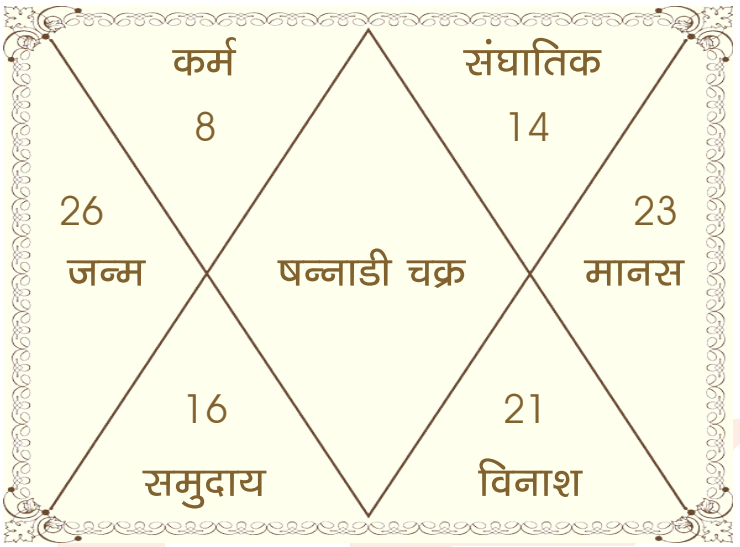

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
कुल	5	4	4	2	3	4	5	4	5	5	4	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
कुल	5	5	3	3	2	6	7	4	3	4	3	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
कुल	4	3	4	4	1	4	5	2	2	3	4	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
कुल	7	4	5	2	6	3	4	4	6	5	4	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
कुल	4	4	5	6	2	3	7	7	4	5	5	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
कुल	3	5	6	4	5	2	3	5	3	5	7	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	3	5	4	5	4	2	5	1	2	3	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
चंद्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	4	5	4	5	4	4	2	3	6	5	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	3	2	3	5	4	5	4	2	5	1	2	39
गुरु	5	6	2	3	7	7	4	5	5	4	4	4	56
मंगल	4	5	2	2	3	4	3	4	3	4	4	1	39
सूर्य	3	4	5	4	5	5	4	3	5	4	4	2	48
शुक्र	5	2	3	5	3	5	7	4	3	5	6	4	52
बुध	6	3	4	4	6	5	4	4	7	4	5	2	54
चंद्र	5	3	3	2	6	7	4	3	4	3	4	5	49
बिन्दु	31	26	21	23	35	37	31	27	29	29	28	20	337
रेखा	25	30	35	33	21	19	25	29	27	27	28	36	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	1	3	1	4	2	0	2	0	0	15
गुरु	0	2	0	0	2	3	2	2	0	0	2	1	14
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	3	0	0	2	0	9
सूर्य	0	0	1	2	2	1	0	1	2	0	0	0	9
शुक्र	2	0	0	1	0	3	4	0	0	3	3	0	16
बुध	0	0	0	2	0	2	0	2	1	1	1	0	9
चंद्र	1	0	0	0	2	4	1	1	0	0	1	3	13
रेखा	5	3	2	7	9	14	12	11	3	6	9	4	85

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	3	0	4	2	0	2	0	0	13
गुरु	0	0	0	0	2	3	0	2	0	0	2	1	10
मंगल	0	0	0	1	0	0	0	3	0	0	2	0	6
सूर्य	0	0	1	2	2	0	0	1	2	0	0	0	8
शुक्र	2	0	0	1	0	3	4	0	0	0	3	0	13
बुध	0	0	0	2	0	2	0	2	1	0	1	0	8
चंद्र	0	0	0	0	2	4	1	1	0	0	1	3	12
रेखा	2	0	2	7	9	12	9	11	3	2	9	4	70

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	62	102	50	54	85	94	96
ग्रह पिंड	47	33	44	43	41	30	21
शोध्य पिंड	109	135	94	97	126	124	117

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

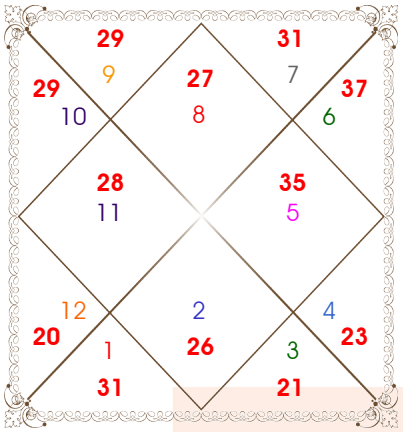

सूर्य का अष्टकवर्ग

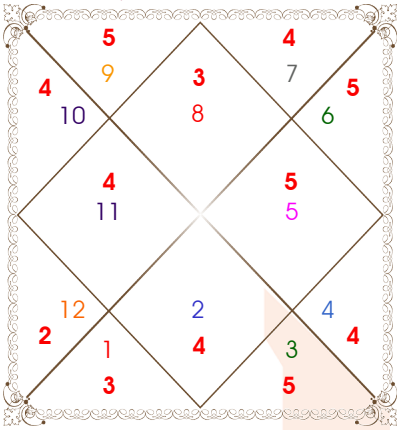

चंद्र का अष्टकवर्ग

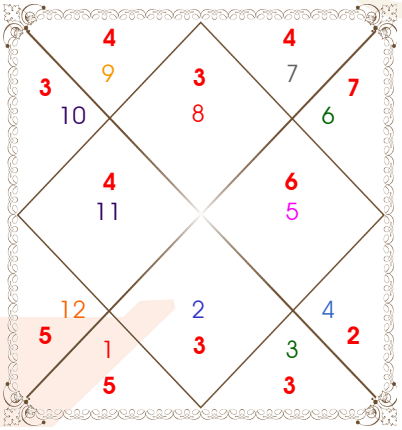

मंगल का अष्टकवर्ग

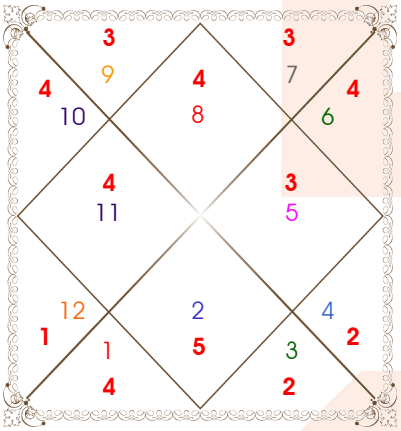

बुध का अष्टकवर्ग

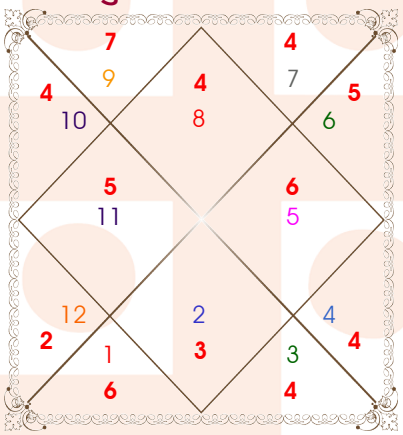

गुरू का अष्टकवर्ग

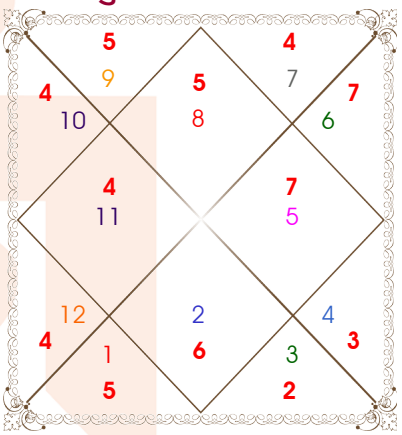

शुक्र का अष्टकवर्ग

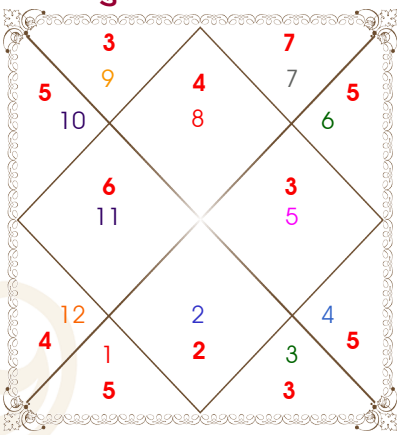

शनि का अष्टकवर्ग

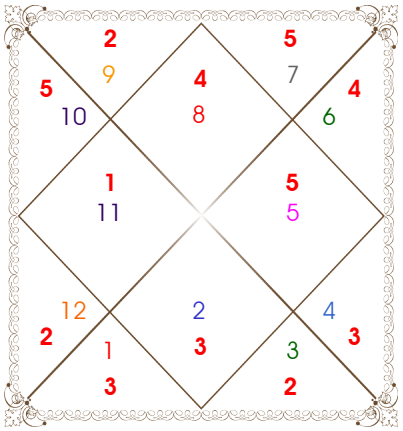

लग्न का अष्टकवर्ग

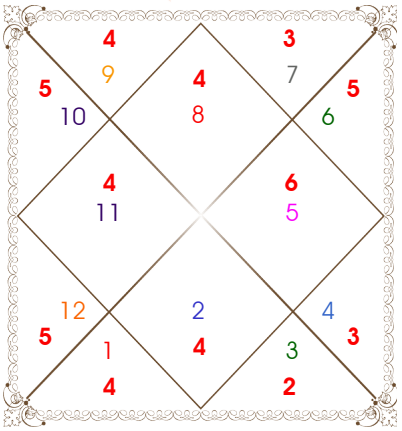

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

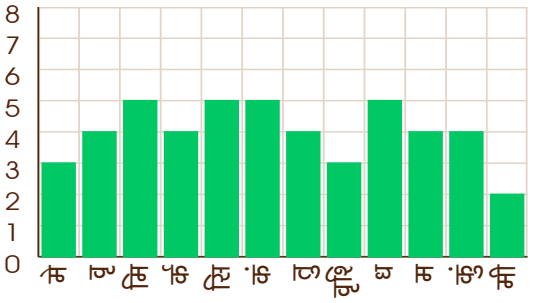

चन्द्र

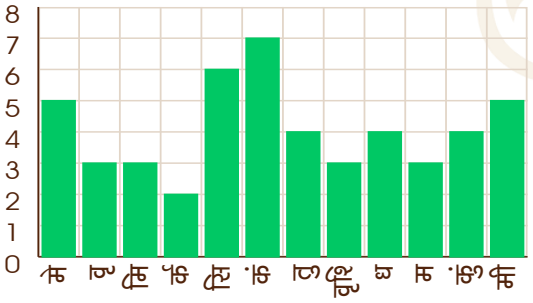

मंगल

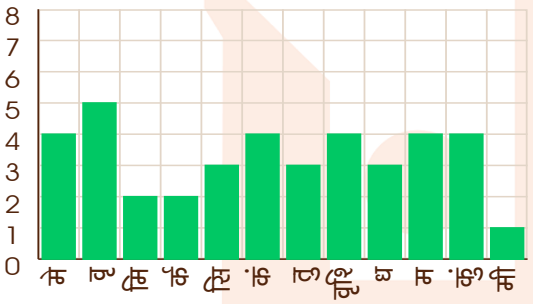

बुध

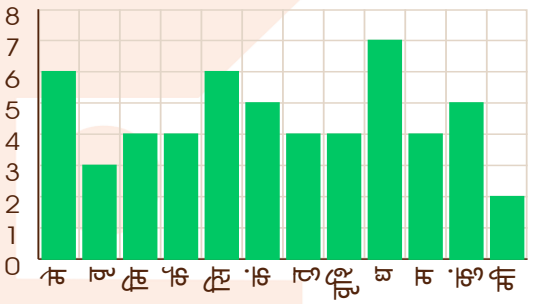

गुरु

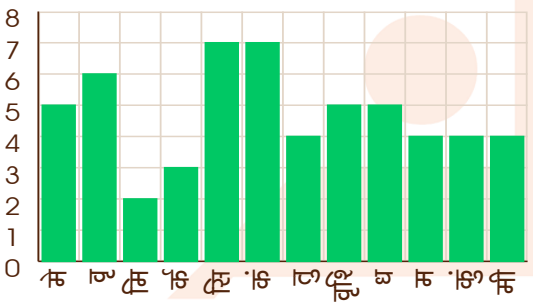

शुक्र

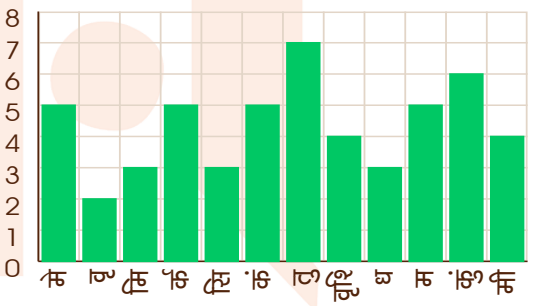

शनि

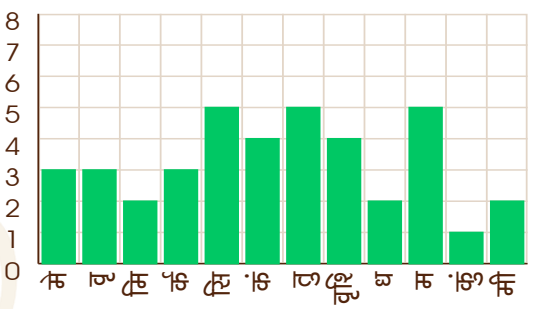

लग्न

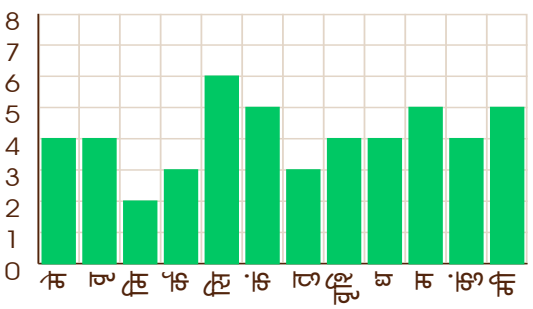

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

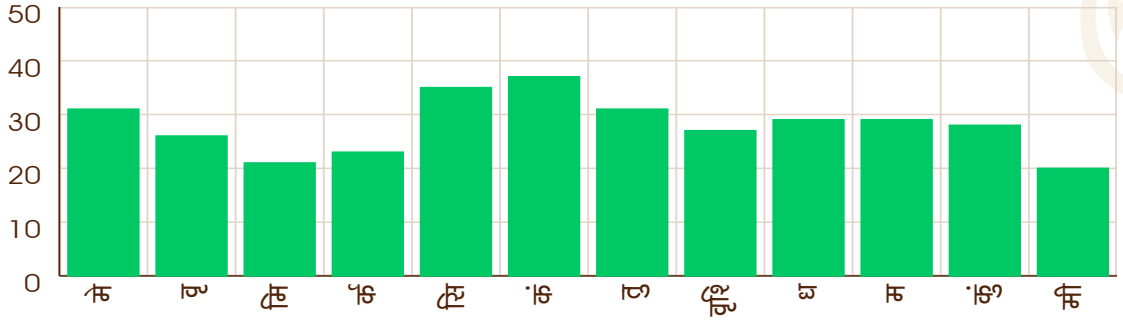

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

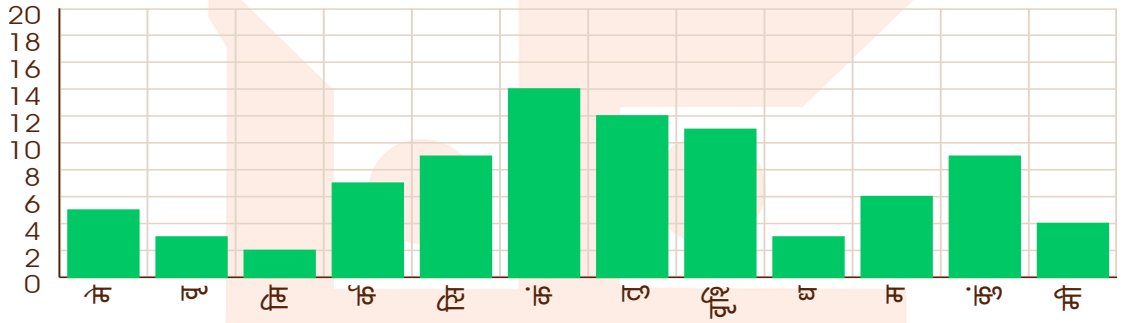

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

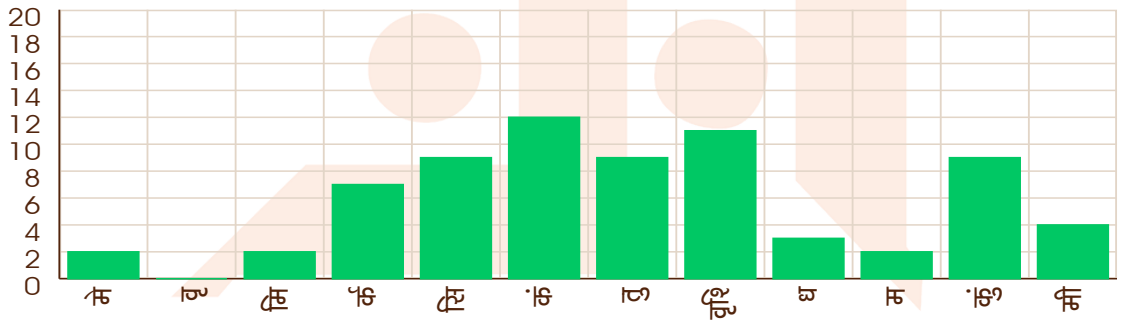

शोध्य पिंड

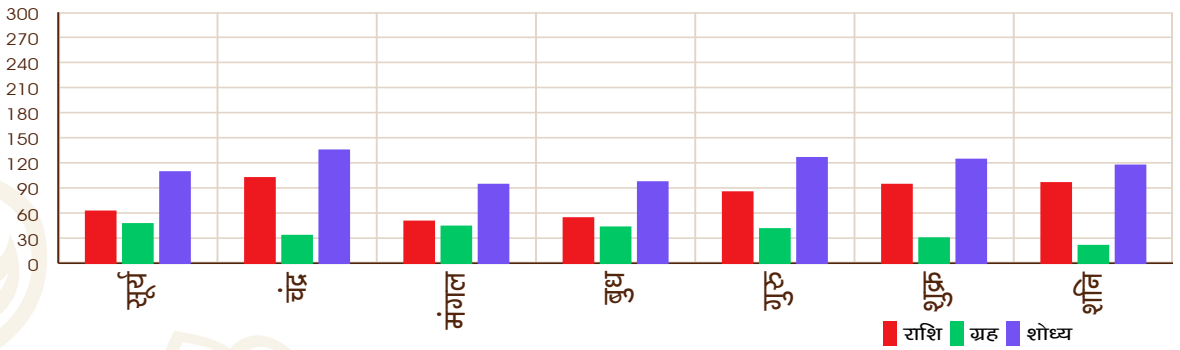

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 11 वर्ष 4 मास 21 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
22/12/1974		14/05/1986		14/05/2003		14/05/2010		14/05/2030	
14/05/1986		14/05/2003		14/05/2010		14/05/2030		14/05/2036	
	00/00/0000	बुध	10/10/1988	केतु	10/10/2003	शुक्र	13/09/2013	सूर्य	01/09/2030
	00/00/0000	केतु	07/10/1989	शुक्र	10/12/2004	सूर्य	13/09/2014	चंद्र	02/03/2031
	22/12/1974	शुक्र	07/08/1992	सूर्य	16/04/2005	चंद्र	14/05/2016	मंगल	08/07/2031
शुक्र	05/05/1977	सूर्य	13/06/1993	चंद्र	15/11/2005	मंगल	14/07/2017	राहु	01/06/2032
सूर्य	17/04/1978	चंद्र	13/11/1994	मंगल	14/04/2006	राहु	13/07/2020	गुरु	20/03/2033
चंद्र	16/11/1979	मंगल	10/11/1995	राहु	02/05/2007	गुरु	14/03/2023	शनि	02/03/2034
मंगल	25/12/1980	राहु	29/05/1998	गुरु	07/04/2008	शनि	14/05/2026	बुध	06/01/2035
राहु	01/11/1983	गुरु	03/09/2000	शनि	17/05/2009	बुध	14/03/2029	केतु	14/05/2035
गुरु	14/05/1986	शनि	14/05/2003	बुध	14/05/2010	केतु	14/05/2030	शुक्र	14/05/2036

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
14/05/2036		14/05/2046		14/05/2053		14/05/2071		14/05/2087	
14/05/2046		14/05/2053		14/05/2071		14/05/2087		00/00/0000	
चंद्र	14/03/2037	मंगल	10/10/2046	राहु	25/01/2056	गुरु	01/07/2073	शनि	17/05/2090
मंगल	13/10/2037	राहु	29/10/2047	गुरु	20/06/2058	शनि	13/01/2076	बुध	24/01/2093
राहु	14/04/2039	गुरु	04/10/2048	शनि	26/04/2061	बुध	20/04/2078	केतु	05/03/2094
गुरु	13/08/2040	शनि	12/11/2049	बुध	13/11/2063	केतु	27/03/2079	शुक्र	22/12/2094
शनि	14/03/2042	बुध	10/11/2050	केतु	30/11/2064	शुक्र	25/11/2081		00/00/0000
बुध	14/08/2043	केतु	08/04/2051	शुक्र	01/12/2067	सूर्य	13/09/2082		00/00/0000
केतु	14/03/2044	शुक्र	07/06/2052	सूर्य	25/10/2068	चंद्र	13/01/2084		00/00/0000
शुक्र	12/11/2045	सूर्य	13/10/2052	चंद्र	26/04/2070	मंगल	19/12/2084		00/00/0000
सूर्य	14/05/2046	चंद्र	14/05/2053	मंगल	14/05/2071	राहु	14/05/2087		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 11 वर्ष 4 मा 6 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
22/12/1974		05/05/1977		17/04/1978		16/11/1979		25/12/1980	
05/05/1977		17/04/1978		16/11/1979		25/12/1980		01/11/1983	
	00/00/0000	सूर्य	22/05/1977	चंद्र	04/06/1978	मंगल	10/12/1979	राहु	30/05/1981
	22/12/1974	चंद्र	20/06/1977	मंगल	08/07/1978	राहु	08/02/1980	गुरु	16/10/1981
चंद्र	15/02/1975	मंगल	10/07/1977	राहु	02/10/1978	गुरु	02/04/1980	शनि	30/03/1982
मंगल	23/04/1975	राहु	31/08/1977	गुरु	18/12/1978	शनि	05/06/1980	बुध	24/08/1982
राहु	14/10/1975	गुरु	16/10/1977	शनि	20/03/1979	बुध	02/08/1980	केतु	24/10/1982
गुरु	16/03/1976	शनि	10/12/1977	बुध	10/06/1979	केतु	25/08/1980	शुक्र	15/04/1983
शनि	15/09/1976	बुध	29/01/1978	केतु	14/07/1979	शुक्र	01/11/1980	सूर्य	06/06/1983
बुध	26/02/1977	केतु	18/02/1978	शुक्र	18/10/1979	सूर्य	21/11/1980	चंद्र	01/09/1983
केतु	05/05/1977	शुक्र	17/04/1978	सूर्य	16/11/1979	चंद्र	25/12/1980	मंगल	01/11/1983

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
01/11/1983		14/05/1986		10/10/1988		07/10/1989		07/08/1992	
14/05/1986		10/10/1988		07/10/1989		07/08/1992		13/06/1993	
गुरु	03/03/1984	बुध	16/09/1986	केतु	31/10/1988	शुक्र	28/03/1990	सूर्य	22/08/1992
शनि	28/07/1984	केतु	06/11/1986	शुक्र	30/12/1988	सूर्य	19/05/1990	चंद्र	17/09/1992
बुध	06/12/1984	शुक्र	02/04/1987	सूर्य	17/01/1989	चंद्र	13/08/1990	मंगल	05/10/1992
केतु	29/01/1985	सूर्य	16/05/1987	चंद्र	16/02/1989	मंगल	13/10/1990	राहु	21/11/1992
शुक्र	02/07/1985	चंद्र	28/07/1987	मंगल	10/03/1989	राहु	17/03/1991	गुरु	01/01/1993
सूर्य	17/08/1985	मंगल	17/09/1987	राहु	03/05/1989	गुरु	02/08/1991	शनि	19/02/1993
चंद्र	02/11/1985	राहु	27/01/1988	गुरु	20/06/1989	शनि	13/01/1992	बुध	04/04/1993
मंगल	26/12/1985	गुरु	23/05/1988	शनि	17/08/1989	बुध	07/06/1992	केतु	22/04/1993
राहु	14/05/1986	शनि	10/10/1988	बुध	07/10/1989	केतु	07/08/1992	शुक्र	13/06/1993

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
13/06/1993		13/11/1994		10/11/1995		29/05/1998		03/09/2000	
13/11/1994		10/11/1995		29/05/1998		03/09/2000		14/05/2003	
चंद्र	26/07/1993	मंगल	04/12/1994	राहु	29/03/1996	गुरु	17/09/1998	शनि	06/02/2001
मंगल	26/08/1993	राहु	27/01/1995	गुरु	31/07/1996	शनि	26/01/1999	बुध	25/06/2001
राहु	11/11/1993	गुरु	16/03/1995	शनि	25/12/1996	बुध	23/05/1999	केतु	21/08/2001
गुरु	19/01/1994	शनि	13/05/1995	बुध	06/05/1997	केतु	10/07/1999	शुक्र	01/02/2002
शनि	11/04/1994	बुध	03/07/1995	केतु	30/06/1997	शुक्र	25/11/1999	सूर्य	22/03/2002
बुध	23/06/1994	केतु	24/07/1995	शुक्र	02/12/1997	सूर्य	06/01/2000	चंद्र	12/06/2002
केतु	24/07/1994	शुक्र	23/09/1995	सूर्य	17/01/1998	चंद्र	15/03/2000	मंगल	09/08/2002
शुक्र	18/10/1994	सूर्य	11/10/1995	चंद्र	05/04/1998	मंगल	02/05/2000	राहु	03/01/2003
सूर्य	13/11/1994	चंद्र	10/11/1995	मंगल	29/05/1998	राहु	03/09/2000	गुरु	14/05/2003

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
14/05/2003		10/10/2003		10/12/2004		16/04/2005		15/11/2005	
10/10/2003		10/12/2004		16/04/2005		15/11/2005		14/04/2006	
केतु	23/05/2003	शुक्र	20/12/2003	सूर्य	16/12/2004	चंद्र	04/05/2005	मंगल	24/11/2005
शुक्र	17/06/2003	सूर्य	11/01/2004	चंद्र	27/12/2004	मंगल	17/05/2005	राहु	17/12/2005
सूर्य	24/06/2003	चंद्र	15/02/2004	मंगल	03/01/2005	राहु	18/06/2005	गुरु	05/01/2006
चंद्र	07/07/2003	मंगल	11/03/2004	राहु	22/01/2005	गुरु	16/07/2005	शनि	29/01/2006
मंगल	15/07/2003	राहु	14/05/2004	गुरु	08/02/2005	शनि	19/08/2005	बुध	19/02/2006
राहु	07/08/2003	गुरु	10/07/2004	शनि	01/03/2005	बुध	18/09/2005	केतु	28/02/2006
गुरु	27/08/2003	शनि	15/09/2004	बुध	19/03/2005	केतु	30/09/2005	शुक्र	25/03/2006
शनि	19/09/2003	बुध	15/11/2004	केतु	26/03/2005	शुक्र	05/11/2005	सूर्य	01/04/2006
बुध	10/10/2003	केतु	10/12/2004	शुक्र	16/04/2005	सूर्य	15/11/2005	चंद्र	14/04/2006

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
14/04/2006		02/05/2007		07/04/2008		17/05/2009		14/05/2010	
02/05/2007		07/04/2008		17/05/2009		14/05/2010		13/09/2013	
राहु	10/06/2006	गुरु	17/06/2007	शनि	10/06/2008	बुध	07/07/2009	शुक्र	03/12/2010
गुरु	31/07/2006	शनि	10/08/2007	बुध	06/08/2008	केतु	28/07/2009	सूर्य	02/02/2011
शनि	30/09/2006	बुध	27/09/2007	केतु	30/08/2008	शुक्र	27/09/2009	चंद्र	14/05/2011
बुध	23/11/2006	केतु	17/10/2007	शुक्र	06/11/2008	सूर्य	15/10/2009	मंगल	24/07/2011
केतु	16/12/2006	शुक्र	13/12/2007	सूर्य	26/11/2008	चंद्र	14/11/2009	राहु	23/01/2012
शुक्र	18/02/2007	सूर्य	30/12/2007	चंद्र	30/12/2008	मंगल	05/12/2009	गुरु	03/07/2012
सूर्य	09/03/2007	चंद्र	27/01/2008	मंगल	22/01/2009	राहु	28/01/2010	शनि	12/01/2013
चंद्र	10/04/2007	मंगल	16/02/2008	राहु	24/03/2009	गुरु	18/03/2010	बुध	04/07/2013
मंगल	02/05/2007	राहु	07/04/2008	गुरु	17/05/2009	शनि	14/05/2010	केतु	13/09/2013

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
13/09/2013		13/09/2014		14/05/2016		14/07/2017		13/07/2020	
13/09/2014		14/05/2016		14/07/2017		13/07/2020		14/03/2023	
सूर्य	01/10/2013	चंद्र	03/11/2014	मंगल	07/06/2016	राहु	25/12/2017	गुरु	20/11/2020
चंद्र	31/10/2013	मंगल	08/12/2014	राहु	10/08/2016	गुरु	20/05/2018	शनि	23/04/2021
मंगल	22/11/2013	राहु	09/03/2015	गुरु	06/10/2016	शनि	10/11/2018	बुध	08/09/2021
राहु	15/01/2014	गुरु	30/05/2015	शनि	13/12/2016	बुध	14/04/2019	केतु	04/11/2021
गुरु	05/03/2014	शनि	03/09/2015	बुध	11/02/2017	केतु	17/06/2019	शुक्र	16/04/2022
शनि	02/05/2014	बुध	28/11/2015	केतु	08/03/2017	शुक्र	16/12/2019	सूर्य	03/06/2022
बुध	23/06/2014	केतु	03/01/2016	शुक्र	18/05/2017	सूर्य	09/02/2020	चंद्र	23/08/2022
केतु	14/07/2014	शुक्र	13/04/2016	सूर्य	08/06/2017	चंद्र	10/05/2020	मंगल	19/10/2022
शुक्र	13/09/2014	सूर्य	14/05/2016	चंद्र	14/07/2017	मंगल	13/07/2020	राहु	14/03/2023

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
14/03/2023		14/05/2026		14/03/2029		14/05/2030		01/09/2030	
14/05/2026		14/03/2029		14/05/2030		01/09/2030		02/03/2031	
शनि	14/09/2023	बुध	08/10/2026	केतु	08/04/2029	सूर्य	20/05/2030	चंद्र	16/09/2030
बुध	24/02/2024	केतु	07/12/2026	शुक्र	18/06/2029	चंद्र	29/05/2030	मंगल	26/09/2030
केतु	02/05/2024	शुक्र	28/05/2027	सूर्य	09/07/2029	मंगल	04/06/2030	राहु	24/10/2030
शुक्र	11/11/2024	सूर्य	19/07/2027	चंद्र	14/08/2029	राहु	20/06/2030	गुरु	17/11/2030
सूर्य	07/01/2025	चंद्र	13/10/2027	मंगल	07/09/2029	गुरु	05/07/2030	शनि	16/12/2030
चंद्र	14/04/2025	मंगल	13/12/2027	राहु	10/11/2029	शनि	22/07/2030	बुध	11/01/2031
मंगल	20/06/2025	राहु	16/05/2028	गुरु	06/01/2030	बुध	07/08/2030	केतु	22/01/2031
राहु	11/12/2025	गुरु	01/10/2028	शनि	15/03/2030	केतु	13/08/2030	शुक्र	21/02/2031
गुरु	14/05/2026	शनि	14/03/2029	बुध	14/05/2030	शुक्र	01/09/2030	सूर्य	02/03/2031

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
02/03/2031		08/07/2031		01/06/2032		20/03/2033		02/03/2034	
08/07/2031		01/06/2032		20/03/2033		02/03/2034		06/01/2035	
मंगल	10/03/2031	राहु	26/08/2031	गुरु	10/07/2032	शनि	14/05/2033	बुध	15/04/2034
राहु	29/03/2031	गुरु	09/10/2031	शनि	25/08/2032	बुध	02/07/2033	केतु	03/05/2034
गुरु	15/04/2031	शनि	30/11/2031	बुध	05/10/2032	केतु	22/07/2033	शुक्र	24/06/2034
शनि	05/05/2031	बुध	16/01/2032	केतु	22/10/2032	शुक्र	18/09/2033	सूर्य	09/07/2034
बुध	23/05/2031	केतु	04/02/2032	शुक्र	10/12/2032	सूर्य	06/10/2033	चंद्र	04/08/2034
केतु	31/05/2031	शुक्र	30/03/2032	सूर्य	25/12/2032	चंद्र	03/11/2033	मंगल	22/08/2034
शुक्र	21/06/2031	सूर्य	15/04/2032	चंद्र	18/01/2033	मंगल	24/11/2033	राहु	08/10/2034
सूर्य	27/06/2031	चंद्र	13/05/2032	मंगल	04/02/2033	राहु	15/01/2034	गुरु	18/11/2034
चंद्र	08/07/2031	मंगल	01/06/2032	राहु	20/03/2033	गुरु	02/03/2034	शनि	06/01/2035

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
06/01/2035		14/05/2035		14/05/2036		14/03/2037		13/10/2037	
14/05/2035		14/05/2036		14/03/2037		13/10/2037		14/04/2039	
केतु	14/01/2035	शुक्र	14/07/2035	चंद्र	08/06/2036	मंगल	26/03/2037	राहु	03/01/2038
शुक्र	04/02/2035	सूर्य	01/08/2035	मंगल	26/06/2036	राहु	27/04/2037	गुरु	17/03/2038
सूर्य	11/02/2035	चंद्र	01/09/2035	राहु	10/08/2036	गुरु	26/05/2037	शनि	12/06/2038
चंद्र	21/02/2035	मंगल	22/09/2035	गुरु	20/09/2036	शनि	28/06/2037	बुध	29/08/2038
मंगल	01/03/2035	राहु	16/11/2035	शनि	07/11/2036	बुध	29/07/2037	केतु	30/09/2038
राहु	20/03/2035	गुरु	04/01/2036	बुध	20/12/2036	केतु	10/08/2037	शुक्र	30/12/2038
गुरु	06/04/2035	शनि	01/03/2036	केतु	07/01/2037	शुक्र	15/09/2037	सूर्य	26/01/2039
शनि	26/04/2035	बुध	22/04/2036	शुक्र	27/02/2037	सूर्य	25/09/2037	चंद्र	13/03/2039
बुध	14/05/2035	केतु	14/05/2036	सूर्य	14/03/2037	चंद्र	13/10/2037	मंगल	14/04/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
14/04/2039		13/08/2040		14/03/2042		14/08/2043		14/03/2044	
13/08/2040		14/03/2042		14/08/2043		14/03/2044		12/11/2045	
गुरु	18/06/2039	शनि	12/11/2040	बुध	26/05/2042	केतु	26/08/2043	शुक्र	23/06/2044
शनि	03/09/2039	बुध	02/02/2041	केतु	26/06/2042	शुक्र	01/10/2043	सूर्य	24/07/2044
बुध	11/11/2039	केतु	08/03/2041	शुक्र	20/09/2042	सूर्य	11/10/2043	चंद्र	12/09/2044
केतु	09/12/2039	शुक्र	12/06/2041	सूर्य	16/10/2042	चंद्र	29/10/2043	मंगल	18/10/2044
शुक्र	28/02/2040	सूर्य	11/07/2041	चंद्र	28/11/2042	मंगल	10/11/2043	राहु	17/01/2045
सूर्य	24/03/2040	चंद्र	29/08/2041	मंगल	28/12/2042	राहु	12/12/2043	गुरु	08/04/2045
चंद्र	03/05/2040	मंगल	01/10/2041	राहु	16/03/2043	गुरु	10/01/2044	शनि	14/07/2045
मंगल	01/06/2040	राहु	27/12/2041	गुरु	24/05/2043	शनि	12/02/2044	बुध	08/10/2045
राहु	13/08/2040	गुरु	14/03/2042	शनि	14/08/2043	बुध	14/03/2044	केतु	12/11/2045

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
12/11/2045		14/05/2046		10/10/2046		29/10/2047		04/10/2048	
14/05/2046		10/10/2046		29/10/2047		04/10/2048		12/11/2049	
सूर्य	22/11/2045	मंगल	23/05/2046	राहु	07/12/2046	गुरु	13/12/2047	शनि	07/12/2048
चंद्र	07/12/2045	राहु	14/06/2046	गुरु	27/01/2047	शनि	05/02/2048	बुध	02/02/2049
मंगल	17/12/2045	गुरु	04/07/2046	शनि	29/03/2047	बुध	24/03/2048	केतु	26/02/2049
राहु	14/01/2046	शनि	28/07/2046	बुध	22/05/2047	केतु	13/04/2048	शुक्र	04/05/2049
गुरु	07/02/2046	बुध	18/08/2046	केतु	13/06/2047	शुक्र	09/06/2048	सूर्य	24/05/2049
शनि	08/03/2046	केतु	26/08/2046	शुक्र	16/08/2047	सूर्य	26/06/2048	चंद्र	27/06/2049
बुध	03/04/2046	शुक्र	20/09/2046	सूर्य	04/09/2047	चंद्र	25/07/2048	मंगल	21/07/2049
केतु	14/04/2046	सूर्य	28/09/2046	चंद्र	06/10/2047	मंगल	13/08/2048	राहु	19/09/2049
शुक्र	14/05/2046	चंद्र	10/10/2046	मंगल	29/10/2047	राहु	04/10/2048	गुरु	12/11/2049

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
12/11/2049		10/11/2050		08/04/2051		07/06/2052		13/10/2052	
10/11/2050		08/04/2051		07/06/2052		13/10/2052		14/05/2053	
बुध	03/01/2050	केतु	18/11/2050	शुक्र	18/06/2051	सूर्य	13/06/2052	चंद्र	30/10/2052
केतु	24/01/2050	शुक्र	13/12/2050	सूर्य	09/07/2051	चंद्र	24/06/2052	मंगल	12/11/2052
शुक्र	25/03/2050	सूर्य	21/12/2050	चंद्र	14/08/2051	मंगल	01/07/2052	राहु	14/12/2052
सूर्य	12/04/2050	चंद्र	02/01/2051	मंगल	07/09/2051	राहु	21/07/2052	गुरु	11/01/2053
चंद्र	13/05/2050	मंगल	11/01/2051	राहु	10/11/2051	गुरु	07/08/2052	शनि	14/02/2053
मंगल	03/06/2050	राहु	02/02/2051	गुरु	06/01/2052	शनि	27/08/2052	बुध	16/03/2053
राहु	27/07/2050	गुरु	22/02/2051	शनि	14/03/2052	बुध	14/09/2052	केतु	29/03/2053
गुरु	13/09/2050	शनि	18/03/2051	बुध	13/05/2052	केतु	21/09/2052	शुक्र	03/05/2053
शनि	10/11/2050	बुध	08/04/2051	केतु	07/06/2052	शुक्र	13/10/2052	सूर्य	14/05/2053

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
14/05/2053		25/01/2056		20/06/2058		26/04/2061		13/11/2063	
25/01/2056		20/06/2058		26/04/2061		13/11/2063		30/11/2064	
राहु	09/10/2053	गुरु	21/05/2056	शनि	01/12/2058	बुध	04/09/2061	केतु	05/12/2063
गुरु	17/02/2054	शनि	07/10/2056	बुध	28/04/2059	केतु	29/10/2061	शुक्र	07/02/2064
शनि	23/07/2054	बुध	08/02/2057	केतु	28/06/2059	शुक्र	02/04/2062	सूर्य	26/02/2064
बुध	10/12/2054	केतु	31/03/2057	शुक्र	18/12/2059	सूर्य	19/05/2062	चंद्र	29/03/2064
केतु	06/02/2055	शुक्र	24/08/2057	सूर्य	08/02/2060	चंद्र	04/08/2062	मंगल	21/04/2064
शुक्र	20/07/2055	सूर्य	07/10/2057	चंद्र	05/05/2060	मंगल	28/09/2062	राहु	17/06/2064
सूर्य	07/09/2055	चंद्र	19/12/2057	मंगल	05/07/2060	राहु	14/02/2063	गुरु	07/08/2064
चंद्र	28/11/2055	मंगल	08/02/2058	राहु	08/12/2060	गुरु	18/06/2063	शनि	07/10/2064
मंगल	25/01/2056	राहु	20/06/2058	गुरु	26/04/2061	शनि	13/11/2063	बुध	30/11/2064

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
30/11/2064		01/12/2067		25/10/2068		26/04/2070		14/05/2071	
01/12/2067		25/10/2068		26/04/2070		14/05/2071		01/07/2073	
शुक्र	01/06/2065	सूर्य	18/12/2067	चंद्र	10/12/2068	मंगल	18/05/2070	गुरु	26/08/2071
सूर्य	26/07/2065	चंद्र	14/01/2068	मंगल	11/01/2069	राहु	15/07/2070	शनि	28/12/2071
चंद्र	25/10/2065	मंगल	02/02/2068	राहु	03/04/2069	गुरु	04/09/2070	बुध	16/04/2072
मंगल	28/12/2065	राहु	22/03/2068	गुरु	15/06/2069	शनि	04/11/2070	केतु	31/05/2072
राहु	10/06/2066	गुरु	05/05/2068	शनि	09/09/2069	बुध	28/12/2070	शुक्र	08/10/2072
गुरु	04/11/2066	शनि	26/06/2068	बुध	26/11/2069	केतु	19/01/2071	सूर्य	16/11/2072
शनि	26/04/2067	बुध	12/08/2068	केतु	28/12/2069	शुक्र	24/03/2071	चंद्र	20/01/2073
बुध	28/09/2067	केतु	31/08/2068	शुक्र	29/03/2070	सूर्य	12/04/2071	मंगल	07/03/2073
केतु	01/12/2067	शुक्र	25/10/2068	सूर्य	26/04/2070	चंद्र	14/05/2071	राहु	01/07/2073

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
01/07/2073		13/01/2076		20/04/2078		27/03/2079		25/11/2081	
13/01/2076		20/04/2078		27/03/2079		25/11/2081		13/09/2082	
शनि	25/11/2073	बुध	09/05/2076	केतु	10/05/2078	शुक्र	05/09/2079	सूर्य	09/12/2081
बुध	05/04/2074	केतु	26/06/2076	शुक्र	05/07/2078	सूर्य	24/10/2079	चंद्र	03/01/2082
केतु	29/05/2074	शुक्र	11/11/2076	सूर्य	22/07/2078	चंद्र	13/01/2080	मंगल	20/01/2082
शुक्र	30/10/2074	सूर्य	23/12/2076	चंद्र	20/08/2078	मंगल	10/03/2080	राहु	04/03/2082
सूर्य	16/12/2074	चंद्र	02/03/2077	मंगल	09/09/2078	राहु	03/08/2080	गुरु	12/04/2082
चंद्र	03/03/2075	मंगल	19/04/2077	राहु	30/10/2078	गुरु	11/12/2080	शनि	29/05/2082
मंगल	26/04/2075	राहु	21/08/2077	गुरु	14/12/2078	शनि	14/05/2081	बुध	09/07/2082
राहु	11/09/2075	गुरु	10/12/2077	शनि	06/02/2079	बुध	29/09/2081	केतु	26/07/2082
गुरु	13/01/2076	शनि	20/04/2078	बुध	27/03/2079	केतु	25/11/2081	शुक्र	13/09/2082

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शनि - गुरु	
11/12/2025 07:48	
14/05/2026 13:00	
गुरु	31/12/2025 21:17
शनि	25/01/2026 07:19
बुध	16/02/2026 03:39
केतु	25/02/2026 03:33
शुक्र	22/03/2026 20:25
सूर्य	30/03/2026 13:29
चंद्र	12/04/2026 09:55
मंगल	21/04/2026 09:49
राहु	14/05/2026 13:00

शुक्र - बुध - बुध	
14/05/2026 13:00	
08/10/2026 03:34	
बुध	04/06/2026 07:28
केतु	12/06/2026 20:43
शुक्र	07/07/2026 07:08
सूर्य	14/07/2026 15:04
चंद्र	26/07/2026 20:17
मंगल	04/08/2026 09:32
राहु	26/08/2026 09:19
गुरु	14/09/2026 22:28
शनि	08/10/2026 03:34

शुक्र - बुध - केतु	
08/10/2026 03:34	
07/12/2026 12:24	
केतु	11/10/2026 16:05
शुक्र	21/10/2026 17:33
सूर्य	24/10/2026 18:00
चंद्र	29/10/2026 18:44
मंगल	02/11/2026 07:15
राहु	11/11/2026 08:34
गुरु	19/11/2026 09:45
शनि	28/11/2026 23:09
बुध	07/12/2026 12:24

शुक्र - बुध - शुक्र	
07/12/2026 12:24	
28/05/2027 23:54	
शुक्र	05/01/2027 06:19
सूर्य	13/01/2027 21:17
चंद्र	28/01/2027 06:15
मंगल	07/02/2027 07:43
राहु	05/03/2027 04:38
गुरु	28/03/2027 04:34
शनि	24/04/2027 12:00
बुध	18/05/2027 22:25
केतु	28/05/2027 23:54

शुक्र - बुध - सूर्य	
28/05/2027 23:54	
19/07/2027 17:45	
सूर्य	31/05/2027 13:59
चंद्र	04/06/2027 21:28
मंगल	07/06/2027 21:55
राहु	15/06/2027 16:12
गुरु	22/06/2027 13:46
शनि	30/06/2027 18:24
बुध	08/07/2027 02:20
केतु	11/07/2027 02:46
शुक्र	19/07/2027 17:45

शुक्र - बुध - चंद्र	
19/07/2027 17:45	
13/10/2027 23:30	
चंद्र	26/07/2027 22:13
मंगल	31/07/2027 22:58
राहु	13/08/2027 21:25
गुरु	25/08/2027 09:23
शनि	08/09/2027 01:06
बुध	20/09/2027 06:19
केतु	25/09/2027 07:03
शुक्र	09/10/2027 16:00
सूर्य	13/10/2027 23:30

शुक्र - बुध - मंगल	
13/10/2027 23:30	
13/12/2027 08:19	
मंगल	17/10/2027 12:01
राहु	26/10/2027 13:20
गुरु	03/11/2027 14:31
शनि	13/11/2027 03:54
बुध	21/11/2027 17:09
केतु	25/11/2027 05:40
शुक्र	05/12/2027 07:09
सूर्य	08/12/2027 07:35
चंद्र	13/12/2027 08:19

शुक्र - बुध - राहु	
13/12/2027 08:19	
16/05/2028 13:52	
राहु	05/01/2028 15:09
गुरु	26/01/2028 07:53
शनि	19/02/2028 21:46
बुध	12/03/2028 21:33
केतु	21/03/2028 22:53
शुक्र	16/04/2028 19:48
सूर्य	24/04/2028 14:05
चंद्र	07/05/2028 12:33
मंगल	16/05/2028 13:52

शुक्र - बुध - गुरु	
16/05/2028 13:52	
01/10/2028 13:28	
गुरु	03/06/2028 23:25
शनि	25/06/2028 19:45
बुध	15/07/2028 08:54
केतु	23/07/2028 10:04
शुक्र	15/08/2028 10:00
सूर्य	22/08/2028 07:35
चंद्र	02/09/2028 19:33
मंगल	10/09/2028 20:44
राहु	01/10/2028 13:28

शुक्र - बुध - शनि	
01/10/2028 13:28	
14/03/2029 10:00	
शनि	27/10/2028 12:07
बुध	19/11/2028 17:14
केतु	29/11/2028 06:37
शुक्र	26/12/2028 14:03
सूर्य	03/01/2029 18:40
चंद्र	17/01/2029 10:23
मंगल	26/01/2029 23:47
राहु	20/02/2029 13:39
गुरु	14/03/2029 10:00

शुक्र - केतु - केतु	
14/03/2029 10:00	
08/04/2029 06:34	
केतु	15/03/2029 20:48
शुक्र	20/03/2029 00:13
सूर्य	21/03/2029 06:03
चंद्र	23/03/2029 07:46
मंगल	24/03/2029 18:34
राहु	28/03/2029 12:03
गुरु	31/03/2029 19:36
शनि	04/04/2029 18:03
बुध	08/04/2029 06:34

शुक्र - केतु - शुक्र	
08/04/2029 06:34	
18/06/2029 07:04	
शुक्र	20/04/2029 02:39
सूर्य	23/04/2029 15:53
चंद्र	29/04/2029 13:55
मंगल	03/05/2029 17:21
राहु	14/05/2029 09:01
गुरु	23/05/2029 20:17
शनि	04/06/2029 02:10
बुध	14/06/2029 03:38
केतु	18/06/2029 07:04

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - केतु - सूर्य	
18/06/2029 07:04	
09/07/2029 14:25	
सूर्य	19/06/2029 08:38
चंद्र	21/06/2029 03:15
मंगल	22/06/2029 09:05
राहु	25/06/2029 13:47
गुरु	28/06/2029 09:58
शनि	01/07/2029 18:55
बुध	04/07/2029 19:22
केतु	06/07/2029 01:12
शुक्र	09/07/2029 14:25

शुक्र - केतु - चंद्र	
09/07/2029 14:25	
14/08/2029 02:40	
चंद्र	12/07/2029 13:26
मंगल	14/07/2029 15:09
राहु	19/07/2029 23:00
गुरु	24/07/2029 16:38
शनि	30/07/2029 07:34
बुध	04/08/2029 08:18
केतु	06/08/2029 10:01
शुक्र	12/08/2029 08:03
सूर्य	14/08/2029 02:40

शुक्र - केतु - मंगल	
14/08/2029 02:40	
07/09/2029 23:15	
मंगल	15/08/2029 13:28
राहु	19/08/2029 06:57
गुरु	22/08/2029 14:30
शनि	26/08/2029 12:57
बुध	30/08/2029 01:28
केतु	31/08/2029 12:16
शुक्र	04/09/2029 15:42
सूर्य	05/09/2029 21:32
चंद्र	07/09/2029 23:15

शुक्र - केतु - राहु	
07/09/2029 23:15	
10/11/2029 21:18	
राहु	17/09/2029 13:21
गुरु	26/09/2029 01:53
शनि	06/10/2029 04:47
बुध	15/10/2029 06:06
केतु	18/10/2029 23:36
शुक्र	29/10/2029 15:16
सूर्य	01/11/2029 19:58
चंद्र	07/11/2029 03:48
मंगल	10/11/2029 21:18

शुक्र - केतु - गुरु	
10/11/2029 21:18	
06/01/2030 16:54	
गुरु	18/11/2029 11:06
शनि	27/11/2029 11:01
बुध	05/12/2029 12:11
केतु	08/12/2029 19:44
शुक्र	18/12/2029 07:00
सूर्य	21/12/2029 03:11
चंद्र	25/12/2029 20:49
मंगल	29/12/2029 04:21
राहु	06/01/2030 16:54

शुक्र - केतु - शनि	
06/01/2030 16:54	
15/03/2030 04:10	
शनि	17/01/2030 09:17
बुध	26/01/2030 22:41
केतु	30/01/2030 21:08
शुक्र	11/02/2030 03:01
सूर्य	14/02/2030 11:59
चंद्र	20/02/2030 02:55
मंगल	24/02/2030 01:22
राहु	06/03/2030 04:16
गुरु	15/03/2030 04:10

शुक्र - केतु - बुध	
15/03/2030 04:10	
14/05/2030 13:00	
बुध	23/03/2030 17:25
केतु	27/03/2030 05:56
शुक्र	06/04/2030 07:24
सूर्य	09/04/2030 07:51
चंद्र	14/04/2030 08:35
मंगल	17/04/2030 21:06
राहु	26/04/2030 22:25
गुरु	04/05/2030 23:36
शनि	14/05/2030 13:00

सूर्य - सूर्य - सूर्य	
14/05/2030 13:00	
20/05/2030 00:29	
सूर्य	14/05/2030 19:34
चंद्र	15/05/2030 06:32
मंगल	15/05/2030 14:12
राहु	16/05/2030 09:55
गुरु	17/05/2030 03:27
शनि	18/05/2030 00:16
बुध	18/05/2030 18:54
केतु	19/05/2030 02:34
शुक्र	20/05/2030 00:29

सूर्य - सूर्य - चंद्र	
20/05/2030 00:29	
29/05/2030 03:38	
चंद्र	20/05/2030 18:45
मंगल	21/05/2030 07:32
राहु	22/05/2030 16:24
गुरु	23/05/2030 21:37
शनि	25/05/2030 08:19
बुध	26/05/2030 15:22
केतु	27/05/2030 04:09
शुक्र	28/05/2030 16:41
सूर्य	29/05/2030 03:38

सूर्य - सूर्य - मंगल	
29/05/2030 03:38	
04/06/2030 13:02	
मंगल	29/05/2030 12:35
राहु	30/05/2030 11:36
गुरु	31/05/2030 08:03
शनि	01/06/2030 08:20
बुध	02/06/2030 06:04
केतु	02/06/2030 15:01
शुक्र	03/06/2030 16:35
सूर्य	04/06/2030 00:15
चंद्र	04/06/2030 13:02

सूर्य - सूर्य - राहु	
04/06/2030 13:02	
20/06/2030 23:31	
राहु	07/06/2030 00:13
गुरु	09/06/2030 04:48
शनि	11/06/2030 19:16
बुध	14/06/2030 03:09
केतु	15/06/2030 02:09
शुक्र	17/06/2030 19:54
सूर्य	18/06/2030 15:38
चंद्र	20/06/2030 00:30
मंगल	20/06/2030 23:31

सूर्य - सूर्य - गुरु	
20/06/2030 23:31	
05/07/2030 14:09	
गुरु	22/06/2030 22:16
शनि	25/06/2030 05:47
बुध	27/06/2030 07:27
केतु	28/06/2030 03:54
शुक्र	30/06/2030 14:21
सूर्य	01/07/2030 07:53
चंद्र	02/07/2030 13:06
मंगल	03/07/2030 09:33
राहु	05/07/2030 14:09

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - सूर्य - शनि		सूर्य - सूर्य - बुध		सूर्य - सूर्य - केतु		सूर्य - सूर्य - शुक्र	
05/07/2030 14:09		22/07/2030 22:32		07/08/2030 11:05		13/08/2030 20:30	
22/07/2030 22:32		07/08/2030 11:05		13/08/2030 20:30		01/09/2030 02:48	
शनि	08/07/2030 08:05	बुध	25/07/2030 03:19	केतु	07/08/2030 20:02	शुक्र	16/08/2030 21:33
बुध	10/07/2030 19:04	केतु	26/07/2030 01:03	शुक्र	08/08/2030 21:36	सूर्य	17/08/2030 19:28
केतु	11/07/2030 19:21	शुक्र	28/07/2030 15:08	सूर्य	09/08/2030 05:17	चंद्र	19/08/2030 07:59
शुक्र	14/07/2030 16:45	सूर्य	29/07/2030 09:46	चंद्र	09/08/2030 18:04	मंगल	20/08/2030 09:33
सूर्य	15/07/2030 13:34	चंद्र	30/07/2030 16:49	मंगल	10/08/2030 03:00	राहु	23/08/2030 03:18
चंद्र	17/07/2030 00:16	मंगल	31/07/2030 14:33	राहु	11/08/2030 02:01	गुरु	25/08/2030 13:44
मंगल	18/07/2030 00:34	राहु	02/08/2030 22:26	गुरु	11/08/2030 22:28	शनि	28/08/2030 11:08
राहु	20/07/2030 15:01	गुरु	05/08/2030 00:06	शनि	12/08/2030 22:46	बुध	31/08/2030 01:14
गुरु	22/07/2030 22:32	शनि	07/08/2030 11:05	बुध	13/08/2030 20:30	केतु	01/09/2030 02:48

सूर्य - चंद्र - चंद्र		सूर्य - चंद्र - मंगल		सूर्य - चंद्र - राहु		सूर्य - चंद्र - गुरु	
01/09/2030 02:48		16/09/2030 08:03		26/09/2030 23:43		24/10/2030 09:10	
16/09/2030 08:03		26/09/2030 23:43		24/10/2030 09:10		17/11/2030 17:34	
चंद्र	02/09/2030 09:14	मंगल	16/09/2030 22:58	राहु	01/10/2030 02:20	गुरु	27/10/2030 15:05
मंगल	03/09/2030 06:32	राहु	18/09/2030 13:19	गुरु	04/10/2030 18:00	शनि	31/10/2030 11:37
राहु	05/09/2030 13:20	गुरु	19/09/2030 23:24	शनि	09/10/2030 02:06	बुध	03/11/2030 22:25
गुरु	07/09/2030 14:02	शनि	21/09/2030 15:53	बुध	12/10/2030 23:14	केतु	05/11/2030 08:30
शनि	09/09/2030 23:51	बुध	23/09/2030 04:06	केतु	14/10/2030 13:35	शुक्र	09/11/2030 09:54
बुध	12/09/2030 03:36	केतु	23/09/2030 19:01	शुक्र	19/10/2030 03:09	सूर्य	10/11/2030 15:07
केतु	13/09/2030 00:54	शुक्र	25/09/2030 13:38	सूर्य	20/10/2030 12:02	चंद्र	12/11/2030 15:49
शुक्र	15/09/2030 13:47	सूर्य	26/09/2030 02:25	चंद्र	22/10/2030 18:49	मंगल	14/11/2030 01:55
सूर्य	16/09/2030 08:03	चंद्र	26/09/2030 23:43	मंगल	24/10/2030 09:10	राहु	17/11/2030 17:34

सूर्य - चंद्र - शनि		सूर्य - चंद्र - बुध		सूर्य - चंद्र - केतु		सूर्य - चंद्र - शुक्र	
17/11/2030 17:34		16/12/2030 15:33		11/01/2031 12:28		22/01/2031 04:09	
16/12/2030 15:33		11/01/2031 12:28		22/01/2031 04:09		21/02/2031 14:39	
शनि	22/11/2030 07:27	बुध	20/12/2030 07:31	केतु	12/01/2031 03:23	शुक्र	27/01/2031 05:54
बुध	26/11/2030 09:46	केतु	21/12/2030 19:44	शुक्र	13/01/2031 22:00	सूर्य	28/01/2031 18:25
केतु	28/11/2030 02:15	शुक्र	26/12/2030 03:13	सूर्य	14/01/2031 10:47	चंद्र	31/01/2031 07:18
शुक्र	02/12/2030 21:54	सूर्य	27/12/2030 10:16	चंद्र	15/01/2031 08:05	मंगल	02/02/2031 01:54
सूर्य	04/12/2030 08:36	चंद्र	29/12/2030 14:00	मंगल	15/01/2031 23:00	राहु	06/02/2031 15:29
चंद्र	06/12/2030 18:26	मंगल	31/12/2030 02:14	राहु	17/01/2031 13:21	गुरु	10/02/2031 16:53
मंगल	08/12/2030 10:55	राहु	03/01/2031 23:22	गुरु	18/01/2031 23:26	शनि	15/02/2031 12:33
राहु	12/12/2030 19:01	गुरु	07/01/2031 10:09	शनि	20/01/2031 15:55	बुध	19/02/2031 20:02
गुरु	16/12/2030 15:33	शनि	11/01/2031 12:28	बुध	22/01/2031 04:09	केतु	21/02/2031 14:39

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - चंद्र - सूर्य	
21/02/2031 14:39	
02/03/2031 17:48	
सूर्य	22/02/2031 01:36
चंद्र	22/02/2031 19:52
मंगल	23/02/2031 08:39
राहु	24/02/2031 17:31
गुरु	25/02/2031 22:44
शनि	27/02/2031 09:26
बुध	28/02/2031 16:29
केतु	01/03/2031 05:16
शुक्र	02/03/2031 17:48

सूर्य - मंगल - मंगल	
02/03/2031 17:48	
10/03/2031 04:46	
मंगल	03/03/2031 04:14
राहु	04/03/2031 07:05
गुरु	05/03/2031 06:57
शनि	06/03/2031 11:17
बुध	07/03/2031 12:38
केतु	07/03/2031 23:04
शुक्र	09/03/2031 04:54
सूर्य	09/03/2031 13:51
चंद्र	10/03/2031 04:46

सूर्य - मंगल - राहु	
10/03/2031 04:46	
29/03/2031 08:59	
राहु	13/03/2031 01:48
गुरु	15/03/2031 15:10
शनि	18/03/2031 16:02
बुध	21/03/2031 09:14
केतु	22/03/2031 12:04
शुक्र	25/03/2031 16:46
सूर्य	26/03/2031 15:47
चंद्र	28/03/2031 06:08
मंगल	29/03/2031 08:59

सूर्य - मंगल - गुरु	
29/03/2031 08:59	
15/04/2031 10:04	
गुरु	31/03/2031 15:32
शनि	03/04/2031 08:18
बुध	05/04/2031 18:15
केतु	06/04/2031 18:07
शुक्र	09/04/2031 14:18
सूर्य	10/04/2031 10:45
चंद्र	11/04/2031 20:50
मंगल	12/04/2031 20:42
राहु	15/04/2031 10:04

सूर्य - मंगल - शनि	
15/04/2031 10:04	
05/05/2031 15:51	
शनि	18/04/2031 14:59
बुध	21/04/2031 11:48
केतु	22/04/2031 16:08
शुक्र	26/04/2031 01:06
सूर्य	27/04/2031 01:23
चंद्र	28/04/2031 17:52
मंगल	29/04/2031 22:12
राहु	02/05/2031 23:04
गुरु	05/05/2031 15:51

सूर्य - मंगल - बुध	
05/05/2031 15:51	
23/05/2031 18:29	
बुध	08/05/2031 05:25
केतु	09/05/2031 06:46
शुक्र	12/05/2031 07:13
सूर्य	13/05/2031 04:57
चंद्र	14/05/2031 17:10
मंगल	15/05/2031 18:31
राहु	18/05/2031 11:43
गुरु	20/05/2031 21:40
शनि	23/05/2031 18:29

सूर्य - मंगल - केतु	
23/05/2031 18:29	
31/05/2031 05:28	
केतु	24/05/2031 04:56
शुक्र	25/05/2031 10:46
सूर्य	25/05/2031 19:43
चंद्र	26/05/2031 10:37
मंगल	26/05/2031 21:04
राहु	27/05/2031 23:55
गुरु	28/05/2031 23:46
शनि	30/05/2031 04:07
बुध	31/05/2031 05:28

सूर्य - मंगल - शुक्र	
31/05/2031 05:28	
21/06/2031 12:49	
शुक्र	03/06/2031 18:41
सूर्य	04/06/2031 20:15
चंद्र	06/06/2031 14:52
मंगल	07/06/2031 20:42
राहु	11/06/2031 01:24
गुरु	13/06/2031 21:35
शनि	17/06/2031 06:33
बुध	20/06/2031 06:59
केतु	21/06/2031 12:49

सूर्य - मंगल - सूर्य	
21/06/2031 12:49	
27/06/2031 22:13	
सूर्य	21/06/2031 20:29
चंद्र	22/06/2031 09:16
मंगल	22/06/2031 18:13
राहु	23/06/2031 17:14
गुरु	24/06/2031 13:41
शनि	25/06/2031 13:58
बुध	26/06/2031 11:42
केतु	26/06/2031 20:39
शुक्र	27/06/2031 22:13

सूर्य - मंगल - चंद्र	
27/06/2031 22:13	
08/07/2031 13:54	
चंद्र	28/06/2031 19:32
मंगल	29/06/2031 10:26
राहु	01/07/2031 00:47
गुरु	02/07/2031 10:53
शनि	04/07/2031 03:22
बुध	05/07/2031 15:35
केतु	06/07/2031 06:30
शुक्र	08/07/2031 01:07
सूर्य	08/07/2031 13:54

सूर्य - राहु - राहु	
08/07/2031 13:54	
26/08/2031 21:18	
राहु	15/07/2031 23:24
गुरु	22/07/2031 13:12
शनि	30/07/2031 08:34
बुध	06/08/2031 08:13
केतु	09/08/2031 05:15
शुक्र	17/08/2031 10:29
सूर्य	19/08/2031 21:39
चंद्र	24/08/2031 00:16
मंगल	26/08/2031 21:18

सूर्य - राहु - गुरु	
26/08/2031 21:18	
09/10/2031 17:13	
गुरु	01/09/2031 17:34
शनि	08/09/2031 16:07
बुध	14/09/2031 21:08
केतु	17/09/2031 10:30
शुक्र	24/09/2031 17:49
सूर्य	26/09/2031 22:25
चंद्र	30/09/2031 14:04
मंगल	03/10/2031 03:26
राहु	09/10/2031 17:13

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - शनि - गुरु - केतु	
16/02/2026 03:39	
25/02/2026 03:33	
केतु	16/02/2026 16:15
शुक्र	18/02/2026 04:14
सूर्य	18/02/2026 15:01
चंद्र	19/02/2026 09:01
मंगल	19/02/2026 21:36
राहु	21/02/2026 06:00
गुरु	22/02/2026 10:47
शनि	23/02/2026 20:58
बुध	25/02/2026 03:33

शुक्र - शनि - गुरु - शुक्र	
25/02/2026 03:33	
22/03/2026 20:25	
शुक्र	01/03/2026 10:22
सूर्य	02/03/2026 17:12
चंद्र	04/03/2026 20:37
मंगल	06/03/2026 08:36
राहु	10/03/2026 05:07
गुरु	13/03/2026 15:22
शनि	17/03/2026 17:03
बुध	21/03/2026 08:26
केतु	22/03/2026 20:25

शुक्र - शनि - गुरु - सूर्य	
22/03/2026 20:25	
30/03/2026 13:29	
सूर्य	23/03/2026 05:40
चंद्र	23/03/2026 21:06
मंगल	24/03/2026 07:53
राहु	25/03/2026 11:39
गुरु	26/03/2026 12:19
शनि	27/03/2026 17:37
बुध	28/03/2026 19:50
केतु	29/03/2026 06:38
शुक्र	30/03/2026 13:29

शुक्र - शनि - गुरु - चंद्र	
30/03/2026 13:29	
12/04/2026 09:55	
चंद्र	31/03/2026 15:11
मंगल	01/04/2026 09:10
राहु	03/04/2026 07:26
गुरु	05/04/2026 00:34
शनि	07/04/2026 01:24
बुध	08/04/2026 21:05
केतु	09/04/2026 15:05
शुक्र	11/04/2026 18:29
सूर्य	12/04/2026 09:55

शुक्र - शनि - गुरु - मंगल	
12/04/2026 09:55	
21/04/2026 09:49	
मंगल	12/04/2026 22:30
राहु	14/04/2026 06:53
गुरु	15/04/2026 11:41
शनि	16/04/2026 21:52
बुध	18/04/2026 04:27
केतु	18/04/2026 17:03
शुक्र	20/04/2026 05:02
सूर्य	20/04/2026 15:49
चंद्र	21/04/2026 09:49

शुक्र - शनि - गुरु - राहु	
21/04/2026 09:49	
14/05/2026 13:00	
राहु	24/04/2026 21:05
गुरु	27/04/2026 23:07
शनि	01/05/2026 15:01
बुध	04/05/2026 21:40
केतु	06/05/2026 06:03
शुक्र	10/05/2026 02:35
सूर्य	11/05/2026 06:21
चंद्र	13/05/2026 04:37
मंगल	14/05/2026 13:00

शुक्र - बुध - बुध - बुध	
14/05/2026 13:00	
04/06/2026 07:28	
बुध	17/05/2026 11:37
केतु	18/05/2026 16:41
शुक्र	22/05/2026 03:46
सूर्य	23/05/2026 04:41
चंद्र	24/05/2026 22:14
मंगल	26/05/2026 03:18
राहु	29/05/2026 06:04
गुरु	01/06/2026 00:32
शनि	04/06/2026 07:28

शुक्र - बुध - बुध - केतु	
04/06/2026 07:28	
12/06/2026 20:43	
केतु	04/06/2026 19:26
शुक्र	06/06/2026 05:38
सूर्य	06/06/2026 15:54
चंद्र	07/06/2026 09:00
मंगल	07/06/2026 20:59
राहु	09/06/2026 03:46
गुरु	10/06/2026 07:08
शनि	11/06/2026 15:38
बुध	12/06/2026 20:43

शुक्र - बुध - बुध - शुक्र	
12/06/2026 20:43	
07/07/2026 07:08	
शुक्र	16/06/2026 22:27
सूर्य	18/06/2026 03:46
चंद्र	20/06/2026 04:38
मंगल	21/06/2026 14:51
राहु	25/06/2026 06:49
गुरु	28/06/2026 13:00
शनि	02/07/2026 09:51
बुध	05/07/2026 20:56
केतु	07/07/2026 07:08

शुक्र - बुध - बुध - सूर्य	
07/07/2026 07:08	
14/07/2026 15:04	
सूर्य	07/07/2026 15:56
चंद्र	08/07/2026 06:36
मंगल	08/07/2026 16:51
राहु	09/07/2026 19:15
गुरु	10/07/2026 18:42
शनि	11/07/2026 22:34
बुध	12/07/2026 23:29
केतु	13/07/2026 09:45
शुक्र	14/07/2026 15:04

शुक्र - बुध - बुध - चंद्र	
14/07/2026 15:04	
26/07/2026 20:17	
चंद्र	15/07/2026 15:30
मंगल	16/07/2026 08:36
राहु	18/07/2026 04:35
गुरु	19/07/2026 19:41
शनि	21/07/2026 18:07
बुध	23/07/2026 11:39
केतु	24/07/2026 04:45
शुक्र	26/07/2026 05:37
सूर्य	26/07/2026 20:17

शुक्र - बुध - बुध - मंगल	
26/07/2026 20:17	
04/08/2026 09:32	
मंगल	27/07/2026 08:15
राहु	28/07/2026 15:03
गुरु	29/07/2026 18:25
शनि	31/07/2026 02:54
बुध	01/08/2026 07:59
केतु	01/08/2026 19:57
शुक्र	03/08/2026 06:10
सूर्य	03/08/2026 16:26
चंद्र	04/08/2026 09:32

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - बुध - बुध - राहु	
04/08/2026 09:32	
26/08/2026 09:19	
राहु	07/08/2026 16:42
गुरु	10/08/2026 15:04
शनि	14/08/2026 02:38
बुध	17/08/2026 05:24
केतु	18/08/2026 12:12
शुक्र	22/08/2026 04:10
सूर्य	23/08/2026 06:33
चंद्र	25/08/2026 02:32
मंगल	26/08/2026 09:19

शुक्र - बुध - बुध - गुरु	
26/08/2026 09:19	
14/09/2026 22:28	
गुरु	28/08/2026 23:52
शनि	01/09/2026 02:09
बुध	03/09/2026 20:37
केतु	04/09/2026 23:59
शुक्र	08/09/2026 06:10
सूर्य	09/09/2026 05:38
चंद्र	10/09/2026 20:43
मंगल	12/09/2026 00:05
राहु	14/09/2026 22:28

शुक्र - बुध - बुध - शनि	
14/09/2026 22:28	
08/10/2026 03:34	
शनि	18/09/2026 14:40
बुध	21/09/2026 21:36
केतु	23/09/2026 06:06
शुक्र	27/09/2026 02:57
सूर्य	28/09/2026 06:48
चंद्र	30/09/2026 05:13
मंगल	01/10/2026 13:43
राहु	05/10/2026 01:17
गुरु	08/10/2026 03:34

शुक्र - बुध - केतु - केतु	
08/10/2026 03:34	
11/10/2026 16:05	
केतु	08/10/2026 08:30
शुक्र	08/10/2026 22:35
सूर्य	09/10/2026 02:49
चंद्र	09/10/2026 09:51
मंगल	09/10/2026 14:47
राहु	10/10/2026 03:28
गुरु	10/10/2026 14:44
शनि	11/10/2026 04:07
बुध	11/10/2026 16:05

शुक्र - बुध - केतु - शुक्र	
11/10/2026 16:05	
21/10/2026 17:33	
शुक्र	13/10/2026 08:20
सूर्य	13/10/2026 20:24
चंद्र	14/10/2026 16:32
मंगल	15/10/2026 06:37
राहु	16/10/2026 18:50
गुरु	18/10/2026 03:02
शनि	19/10/2026 17:16
बुध	21/10/2026 03:28
केतु	21/10/2026 17:33

शुक्र - बुध - केतु - सूर्य	
21/10/2026 17:33	
24/10/2026 18:00	
सूर्य	21/10/2026 21:11
चंद्र	22/10/2026 03:13
मंगल	22/10/2026 07:26
राहु	22/10/2026 18:18
गुरु	23/10/2026 03:58
शनि	23/10/2026 15:26
बुध	24/10/2026 01:42
केतु	24/10/2026 05:55
शुक्र	24/10/2026 18:00

शुक्र - बुध - केतु - चंद्र	
24/10/2026 18:00	
29/10/2026 18:44	
चंद्र	25/10/2026 04:03
मंगल	25/10/2026 11:06
राहु	26/10/2026 05:13
गुरु	26/10/2026 21:19
शनि	27/10/2026 16:26
बुध	28/10/2026 09:32
केतु	28/10/2026 16:34
शुक्र	29/10/2026 12:42
सूर्य	29/10/2026 18:44

शुक्र - बुध - केतु - मंगल	
29/10/2026 18:44	
02/11/2026 07:15	
मंगल	29/10/2026 23:40
राहु	30/10/2026 12:20
गुरु	30/10/2026 23:36
शनि	31/10/2026 12:59
बुध	01/11/2026 00:58
केतु	01/11/2026 05:54
शुक्र	01/11/2026 19:59
सूर्य	02/11/2026 00:12
चंद्र	02/11/2026 07:15

शुक्र - बुध - केतु - राहु	
02/11/2026 07:15	
11/11/2026 08:34	
राहु	03/11/2026 15:51
गुरु	04/11/2026 20:49
शनि	06/11/2026 07:14
बुध	07/11/2026 14:01
केतु	08/11/2026 02:42
शुक्र	09/11/2026 14:55
सूर्य	10/11/2026 01:47
चंद्र	10/11/2026 19:54
मंगल	11/11/2026 08:34

शुक्र - बुध - केतु - गुरु	
11/11/2026 08:34	
19/11/2026 09:45	
गुरु	12/11/2026 10:20
शनि	13/11/2026 16:55
बुध	14/11/2026 20:17
केतु	15/11/2026 07:33
शुक्र	16/11/2026 15:45
सूर्य	17/11/2026 01:24
चंद्र	17/11/2026 17:30
मंगल	18/11/2026 04:46
राहु	19/11/2026 09:45

शुक्र - बुध - केतु - शनि	
19/11/2026 09:45	
28/11/2026 23:09	
शनि	20/11/2026 22:04
बुध	22/11/2026 06:34
केतु	22/11/2026 19:57
शुक्र	24/11/2026 10:11
सूर्य	24/11/2026 21:39
चंद्र	25/11/2026 16:46
मंगल	26/11/2026 06:09
राहु	27/11/2026 16:33
गुरु	28/11/2026 23:09

शुक्र - बुध - केतु - बुध	
28/11/2026 23:09	
07/12/2026 12:24	
बुध	30/11/2026 04:13
केतु	30/11/2026 16:12
शुक्र	02/12/2026 02:24
सूर्य	02/12/2026 12:40
चंद्र	03/12/2026 05:46
मंगल	03/12/2026 17:45
राहु	05/12/2026 00:32
गुरु	06/12/2026 03:54
शनि	07/12/2026 12:24

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 7 वर्ष 9 मास 16 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
22/12/1974		08/10/1982		07/10/1996		08/10/2011		08/10/2027	
08/10/1982		07/10/1996		08/10/2011		08/10/2027		07/10/2044	
	00/00/0000	शनि	16/06/1984	केतु	16/09/1998	चंद्र	22/12/2013	बुध	05/04/2030
	00/00/0000	केतु	08/04/1986	चंद्र	11/10/2000	बुध	27/04/2016	शुक्र	24/11/2032
	22/12/1974	चंद्र	14/03/1988	बुध	23/12/2002	शुक्र	21/10/2018	सूर्य	05/07/2034
चंद्र	08/04/1976	बुध	02/04/1990	शुक्र	21/04/2005	सूर्य	27/04/2020	मंगल	08/04/2036
बुध	05/03/1978	शुक्र	04/06/1992	सूर्य	22/09/2006	मंगल	22/12/2021	गुरु	05/03/2038
शुक्र	10/03/1980	सूर्य	01/10/1993	मंगल	11/04/2008	गुरु	08/10/2023	शनि	23/03/2040
सूर्य	04/06/1981	मंगल	14/03/1995	गुरु	16/12/2009	शनि	13/09/2025	केतु	04/06/2042
मंगल	08/10/1982	गुरु	07/10/1996	शनि	08/10/2011	केतु	08/10/2027	चंद्र	07/10/2044

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
07/10/2044		08/10/2062		08/10/2073		08/10/2085	
08/10/2062		08/10/2073		08/10/2085		00/00/0000	
शुक्र	25/07/2047	सूर्य	24/10/2063	मंगल	04/01/2075	गुरु	24/03/2087
सूर्य	08/04/2049	मंगल	13/12/2064	गुरु	09/05/2076	शनि	17/10/2088
मंगल	17/02/2051	गुरु	08/03/2066	शनि	20/10/2077	केतु	23/06/2090
गुरु	23/02/2053	शनि	06/07/2067	केतु	10/05/2079	चंद्र	22/12/2090
शनि	27/04/2055	केतु	06/12/2068	चंद्र	04/01/2081		00/00/0000
केतु	25/08/2057	चंद्र	13/06/2070	बुध	08/10/2082		00/00/0000
चंद्र	17/02/2060	बुध	23/01/2072	शुक्र	18/08/2084		00/00/0000
बुध	08/10/2062	शुक्र	08/10/2073	सूर्य	08/10/2085		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
22/12/1974		08/04/1976		05/03/1978		10/03/1980		04/06/1981	
08/04/1976		05/03/1978		10/03/1980		04/06/1981		08/10/1982	
	22/12/1974	बुध	19/07/1976	शुक्र	27/06/1978	सूर्य	22/04/1980	मंगल	25/07/1981
बुध	26/12/1974	शुक्र	04/11/1976	सूर्य	05/09/1978	मंगल	08/06/1980	गुरु	18/09/1981
शुक्र	07/04/1975	सूर्य	09/01/1977	मंगल	20/11/1978	गुरु	28/07/1980	शनि	16/11/1981
सूर्य	08/06/1975	मंगल	22/03/1977	गुरु	11/02/1979	शनि	21/09/1980	केतु	18/01/1982
मंगल	15/08/1975	गुरु	08/06/1977	शनि	11/05/1979	केतु	18/11/1980	चंद्र	27/03/1982
गुरु	27/10/1975	शनि	31/08/1977	केतु	14/08/1979	चंद्र	19/01/1981	बुध	07/06/1982
शनि	14/01/1976	केतु	29/11/1977	चंद्र	24/11/1979	बुध	26/03/1981	शुक्र	22/08/1982
केतु	08/04/1976	चंद्र	05/03/1978	बुध	10/03/1980	शुक्र	04/06/1981	सूर्य	08/10/1982

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
08/10/1982		16/06/1984		08/04/1986		14/03/1988		02/04/1990	
16/06/1984		08/04/1986		14/03/1988		02/04/1990		04/06/1992	
शनि	21/12/1982	केतु	10/09/1984	चंद्र	15/07/1986	बुध	01/07/1988	शुक्र	03/08/1990
केतु	11/03/1983	चंद्र	10/12/1984	बुध	26/10/1986	शुक्र	26/10/1988	सूर्य	17/10/1990
चंद्र	04/06/1983	बुध	17/03/1985	शुक्र	12/02/1987	सूर्य	05/01/1989	मंगल	07/01/1991
बुध	03/09/1983	शुक्र	27/06/1985	सूर्य	20/04/1987	मंगल	23/03/1989	गुरु	06/04/1991
शुक्र	08/12/1983	सूर्य	29/08/1985	मंगल	02/07/1987	गुरु	15/06/1989	शनि	11/07/1991
सूर्य	04/02/1984	मंगल	05/11/1985	गुरु	19/09/1987	शनि	14/09/1989	केतु	22/10/1991
मंगल	08/04/1984	गुरु	19/01/1986	शनि	13/12/1987	केतु	20/12/1989	चंद्र	08/02/1992
गुरु	16/06/1984	शनि	08/04/1986	केतु	14/03/1988	चंद्र	02/04/1990	बुध	04/06/1992

शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र	
04/06/1992		01/10/1993		14/03/1995		07/10/1996		16/09/1998	
01/10/1993		14/03/1995		07/10/1996		16/09/1998		11/10/2000	
सूर्य	19/07/1992	मंगल	25/11/1993	गुरु	18/05/1995	केतु	07/01/1997	चंद्र	29/12/1998
मंगल	08/09/1992	गुरु	23/01/1994	शनि	26/07/1995	चंद्र	15/04/1997	बुध	19/04/1999
गुरु	01/11/1992	शनि	28/03/1994	केतु	08/10/1995	बुध	28/07/1997	शुक्र	14/08/1999
शनि	30/12/1992	केतु	05/06/1994	चंद्र	26/12/1995	शुक्र	15/11/1997	सूर्य	25/10/1999
केतु	02/03/1993	चंद्र	17/08/1994	बुध	19/03/1996	सूर्य	21/01/1998	मंगल	11/01/2000
चंद्र	08/05/1993	बुध	02/11/1994	शुक्र	16/06/1996	मंगल	04/04/1998	गुरु	05/04/2000
बुध	18/07/1993	शुक्र	23/01/1995	सूर्य	09/08/1996	गुरु	22/06/1998	शनि	05/07/2000
शुक्र	01/10/1993	सूर्य	14/03/1995	मंगल	07/10/1996	शनि	16/09/1998	केतु	11/10/2000

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु	
11/10/2000		23/12/2002		21/04/2005		22/09/2006		11/04/2008	
23/12/2002		21/04/2005		22/09/2006		11/04/2008		16/12/2009	
बुध	05/02/2001	शुक्र	03/05/2003	सूर्य	09/06/2005	मंगल	20/11/2006	गुरु	19/06/2008
शुक्र	10/06/2001	सूर्य	23/07/2003	मंगल	02/08/2005	गुरु	22/01/2007	शनि	01/09/2008
सूर्य	25/08/2001	मंगल	19/10/2003	गुरु	29/09/2005	शनि	01/04/2007	केतु	19/11/2008
मंगल	16/11/2001	गुरु	22/01/2004	शनि	01/12/2005	केतु	13/06/2007	चंद्र	12/02/2009
गुरु	14/02/2002	शनि	04/05/2004	केतु	06/02/2006	चंद्र	30/08/2007	बुध	13/05/2009
शनि	22/05/2002	केतु	22/08/2004	चंद्र	18/04/2006	बुध	21/11/2007	शुक्र	16/08/2009
केतु	03/09/2002	चंद्र	17/12/2004	बुध	04/07/2006	शुक्र	17/02/2008	सूर्य	13/10/2009
चंद्र	23/12/2002	बुध	21/04/2005	शुक्र	22/09/2006	सूर्य	11/04/2008	मंगल	16/12/2009

केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
16/12/2009		08/10/2011		22/12/2013		27/04/2016		21/10/2018	
08/10/2011		22/12/2013		27/04/2016		21/10/2018		27/04/2020	
शनि	06/03/2010	चंद्र	27/01/2012	बुध	27/04/2014	शुक्र	14/09/2016	सूर्य	12/12/2018
केतु	30/05/2010	बुध	25/05/2012	शुक्र	07/09/2014	सूर्य	09/12/2016	मंगल	07/02/2019
चंद्र	29/08/2010	शुक्र	27/09/2012	सूर्य	27/11/2014	मंगल	13/03/2017	गुरु	11/04/2019
बुध	04/12/2010	सूर्य	12/12/2012	मंगल	23/02/2015	गुरु	23/06/2017	शनि	16/06/2019
शुक्र	17/03/2011	मंगल	05/03/2013	गुरु	30/05/2015	शनि	10/10/2017	केतु	27/08/2019
सूर्य	19/05/2011	गुरु	04/06/2013	शनि	11/09/2015	केतु	05/02/2018	चंद्र	12/11/2019
मंगल	26/07/2011	शनि	09/09/2013	केतु	31/12/2015	चंद्र	10/06/2018	बुध	01/02/2020
गुरु	08/10/2011	केतु	22/12/2013	चंद्र	27/04/2016	बुध	21/10/2018	शुक्र	27/04/2020

चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध	
27/04/2020		22/12/2021		08/10/2023		13/09/2025		08/10/2027	
22/12/2021		08/10/2023		13/09/2025		08/10/2027		05/04/2030	
मंगल	28/06/2020	गुरु	06/03/2022	शनि	01/01/2024	केतु	19/12/2025	बुध	19/02/2028
गुरु	04/09/2020	शनि	24/05/2022	केतु	02/04/2024	चंद्र	02/04/2026	शुक्र	09/07/2028
शनि	16/11/2020	केतु	16/08/2022	चंद्र	08/07/2024	बुध	22/07/2026	सूर्य	03/10/2028
केतु	02/02/2021	चंद्र	15/11/2022	बुध	19/10/2024	शुक्र	16/11/2026	मंगल	05/01/2029
चंद्र	27/04/2021	बुध	19/02/2023	शुक्र	06/02/2025	सूर्य	27/01/2027	गुरु	17/04/2029
बुध	24/07/2021	शुक्र	31/05/2023	सूर्य	14/04/2025	मंगल	15/04/2027	शनि	05/08/2029
शुक्र	26/10/2021	सूर्य	01/08/2023	मंगल	25/06/2025	गुरु	09/07/2027	केतु	01/12/2029
सूर्य	22/12/2021	मंगल	08/10/2023	गुरु	13/09/2025	शनि	08/10/2027	चंद्र	05/04/2030

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि	
05/04/2030		24/11/2032		05/07/2034		08/04/2036		05/03/2038	
24/11/2032		05/07/2034		08/04/2036		05/03/2038		23/03/2040	
शुक्र	02/09/2030	सूर्य	19/01/2033	मंगल	10/09/2034	गुरु	25/06/2036	शनि	03/06/2038
सूर्य	02/12/2030	मंगल	20/03/2033	गुरु	21/11/2034	शनि	17/09/2036	केतु	08/09/2038
मंगल	12/03/2031	गुरु	25/05/2033	शनि	06/02/2035	केतु	16/12/2036	चंद्र	20/12/2038
गुरु	28/06/2031	शनि	04/08/2033	केतु	01/05/2035	चंद्र	22/03/2037	बुध	09/04/2039
शनि	22/10/2031	केतु	20/10/2033	चंद्र	28/07/2035	बुध	02/07/2037	शुक्र	04/08/2039
केतु	24/02/2032	चंद्र	09/01/2034	बुध	30/10/2035	शुक्र	18/10/2037	सूर्य	14/10/2039
चंद्र	05/07/2032	बुध	05/04/2034	शुक्र	07/02/2036	सूर्य	23/12/2037	मंगल	30/12/2039
बुध	24/11/2032	शुक्र	05/07/2034	सूर्य	08/04/2036	मंगल	05/03/2038	गुरु	23/03/2040

बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल	
23/03/2040		04/06/2042		07/10/2044		25/07/2047		08/04/2049	
04/06/2042		07/10/2044		25/07/2047		08/04/2049		17/02/2051	
केतु	05/07/2040	चंद्र	30/09/2042	शुक्र	15/03/2045	सूर्य	22/09/2047	मंगल	17/06/2049
चंद्र	24/10/2040	बुध	03/02/2043	सूर्य	20/06/2045	मंगल	25/11/2047	गुरु	02/09/2049
बुध	18/02/2041	शुक्र	16/06/2043	मंगल	03/10/2045	गुरु	03/02/2048	शनि	23/11/2049
शुक्र	23/06/2041	सूर्य	05/09/2043	गुरु	25/01/2046	शनि	18/04/2048	केतु	19/02/2050
सूर्य	07/09/2041	मंगल	02/12/2043	शनि	28/05/2046	केतु	08/07/2048	चंद्र	23/05/2050
मंगल	29/11/2041	गुरु	07/03/2044	केतु	07/10/2046	चंद्र	02/10/2048	बुध	31/08/2050
गुरु	27/02/2042	शनि	19/06/2044	चंद्र	25/02/2047	बुध	01/01/2049	शुक्र	15/12/2050
शनि	04/06/2042	केतु	07/10/2044	बुध	25/07/2047	शुक्र	08/04/2049	सूर्य	17/02/2051

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध	
17/02/2051		23/02/2053		27/04/2055		25/08/2057		17/02/2060	
23/02/2053		27/04/2055		25/08/2057		17/02/2060		08/10/2062	
गुरु	11/05/2051	शनि	30/05/2053	केतु	15/08/2055	चंद्र	28/12/2057	बुध	08/07/2060
शनि	08/08/2051	केतु	09/09/2053	चंद्र	11/12/2055	बुध	10/05/2058	शुक्र	04/12/2060
केतु	11/11/2051	चंद्र	28/12/2053	बुध	13/04/2056	शुक्र	27/09/2058	सूर्य	06/03/2061
चंद्र	21/02/2052	बुध	23/04/2054	शुक्र	23/08/2056	सूर्य	22/12/2058	मंगल	13/06/2061
बुध	08/06/2052	शुक्र	24/08/2054	सूर्य	12/11/2056	मंगल	26/03/2059	गुरु	29/09/2061
शुक्र	30/09/2052	सूर्य	07/11/2054	मंगल	08/02/2057	गुरु	06/07/2059	शनि	23/01/2062
सूर्य	09/12/2052	मंगल	29/01/2055	गुरु	14/05/2057	शनि	23/10/2059	केतु	28/05/2062
मंगल	23/02/2053	गुरु	27/04/2055	शनि	25/08/2057	केतु	17/02/2060	चंद्र	08/10/2062

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु	
08/10/2062		24/10/2063		13/12/2064		08/03/2066		06/07/2067	
24/10/2063		13/12/2064		08/03/2066		06/07/2067		06/12/2068	
सूर्य	13/11/2062	मंगल	06/12/2063	गुरु	01/02/2065	शनि	05/05/2066	केतु	11/09/2067
मंगल	22/12/2062	गुरु	22/01/2064	शनि	27/03/2065	केतु	07/07/2066	चंद्र	22/11/2067
गुरु	03/02/2063	शनि	12/03/2064	केतु	25/05/2065	चंद्र	12/09/2066	बुध	06/02/2068
शनि	21/03/2063	केतु	04/05/2064	चंद्र	26/07/2065	बुध	22/11/2066	शुक्र	26/04/2068
केतु	09/05/2063	चंद्र	01/07/2064	बुध	30/09/2065	शुक्र	05/02/2067	सूर्य	15/06/2068
चंद्र	01/07/2063	बुध	31/08/2064	शुक्र	09/12/2065	सूर्य	23/03/2067	मंगल	07/08/2068
बुध	26/08/2063	शुक्र	03/11/2064	सूर्य	20/01/2066	मंगल	12/05/2067	गुरु	05/10/2068
शुक्र	24/10/2063	सूर्य	13/12/2064	मंगल	08/03/2066	गुरु	06/07/2067	शनि	06/12/2068

सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु	
06/12/2068		13/06/2070		23/01/2072		08/10/2073		04/01/2075	
13/06/2070		23/01/2072		08/10/2073		04/01/2075		09/05/2076	
चंद्र	21/02/2069	बुध	08/09/2070	शुक्र	29/04/2072	मंगल	24/11/2073	गुरु	28/02/2075
बुध	13/05/2069	शुक्र	08/12/2070	सूर्य	27/06/2072	गुरु	13/01/2074	शनि	28/04/2075
शुक्र	07/08/2069	सूर्य	02/02/2071	मंगल	31/08/2072	शनि	09/03/2074	केतु	01/07/2075
सूर्य	28/09/2069	मंगल	04/04/2071	गुरु	08/11/2072	केतु	07/05/2074	चंद्र	07/09/2075
मंगल	25/11/2069	गुरु	09/06/2071	शनि	23/01/2073	चंद्र	08/07/2074	बुध	18/11/2075
गुरु	26/01/2070	शनि	19/08/2071	केतु	13/04/2073	बुध	13/09/2074	शुक्र	02/02/2076
शनि	03/04/2070	केतु	03/11/2071	चंद्र	08/07/2073	शुक्र	22/11/2074	सूर्य	20/03/2076
केतु	13/06/2070	चंद्र	23/01/2072	बुध	08/10/2073	सूर्य	04/01/2075	मंगल	09/05/2076

मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र	
09/05/2076		20/10/2077		10/05/2079		04/01/2081		08/10/2082	
20/10/2077		10/05/2079		04/01/2081		08/10/2082		18/08/2084	
शनि	12/07/2076	केतु	02/01/2078	चंद्र	01/08/2079	बुध	08/04/2081	शुक्र	21/01/2083
केतु	19/09/2076	चंद्र	21/03/2078	बुध	29/10/2079	शुक्र	16/07/2081	सूर्य	27/03/2083
चंद्र	01/12/2076	बुध	12/06/2078	शुक्र	31/01/2080	सूर्य	15/09/2081	मंगल	05/06/2083
बुध	16/02/2077	शुक्र	08/09/2078	सूर्य	28/03/2080	मंगल	21/11/2081	गुरु	21/08/2083
शुक्र	09/05/2077	सूर्य	01/11/2078	मंगल	30/05/2080	गुरु	01/02/2082	शनि	11/11/2083
सूर्य	28/06/2077	मंगल	29/12/2078	गुरु	05/08/2080	शनि	19/04/2082	केतु	07/02/2084
मंगल	22/08/2077	गुरु	03/03/2079	शनि	17/10/2080	केतु	11/07/2082	चंद्र	10/05/2084
गुरु	20/10/2077	शनि	10/05/2079	केतु	04/01/2081	चंद्र	08/10/2082	बुध	18/08/2084

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 7 वर्ष 7 मास 4 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
22/12/1974		27/07/1982		25/11/1993		27/07/1998		26/11/2011	
27/07/1982		25/11/1993		27/07/1998		26/11/2011		26/11/2015	
	00/00/0000	बुध	04/03/1984	केतु	05/03/1994	शुक्र	16/10/2000	सूर्य	07/02/2012
	00/00/0000	केतु	01/11/1984	शुक्र	14/12/1994	सूर्य	16/06/2001	चंद्र	08/06/2012
	22/12/1974	शुक्र	22/09/1986	सूर्य	09/03/1995	चंद्र	27/07/2002	मंगल	01/09/2012
शुक्र	20/07/1976	सूर्य	17/04/1987	चंद्र	29/07/1995	मंगल	07/05/2003	राहु	08/04/2013
सूर्य	09/03/1977	चंद्र	27/03/1988	मंगल	06/11/1995	राहु	07/05/2005	गुरु	20/10/2013
चंद्र	29/03/1978	मंगल	23/11/1988	राहु	18/07/1996	गुरु	15/02/2007	शनि	08/06/2014
मंगल	24/12/1978	राहु	06/08/1990	गुरु	03/03/1997	शनि	27/03/2009	बुध	01/01/2015
राहु	17/11/1980	गुरु	09/02/1992	शनि	27/11/1997	बुध	15/02/2011	केतु	27/03/2015
गुरु	27/07/1982	शनि	25/11/1993	बुध	27/07/1998	केतु	26/11/2011	शुक्र	26/11/2015

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
26/11/2015		27/07/2022		27/03/2027		27/03/2039		25/11/2049	
27/07/2022		27/03/2027		27/03/2039		25/11/2049		00/00/0000	
चंद्र	16/06/2016	मंगल	03/11/2022	राहु	13/01/2029	गुरु	28/08/2040	शनि	28/11/2051
मंगल	05/11/2016	राहु	17/07/2023	गुरु	20/08/2030	शनि	07/05/2042	बुध	13/09/2053
राहु	05/11/2017	गुरु	29/02/2024	शनि	14/07/2032	बुध	10/11/2043	केतु	10/06/2054
गुरु	26/09/2018	शनि	25/11/2024	बुध	27/03/2034	केतु	24/06/2044	शुक्र	22/12/2054
शनि	16/10/2019	बुध	25/07/2025	केतु	08/12/2034	शुक्र	04/04/2046		00/00/0000
बुध	25/09/2020	केतु	01/11/2025	शुक्र	07/12/2036	सूर्य	16/10/2046		00/00/0000
केतु	14/02/2021	शुक्र	12/08/2026	सूर्य	15/07/2037	चंद्र	06/09/2047		00/00/0000
शुक्र	27/03/2022	सूर्य	05/11/2026	चंद्र	15/07/2038	मंगल	20/04/2048		00/00/0000
सूर्य	27/07/2022	चंद्र	27/03/2027	मंगल	27/03/2039	राहु	25/11/2049		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
22/12/1974		20/07/1976		09/03/1977		29/03/1978		24/12/1978	
20/07/1976		09/03/1977		29/03/1978		24/12/1978		17/11/1980	
	00/00/0000	सूर्य	01/08/1976	चंद्र	10/04/1977	मंगल	14/04/1978	राहु	07/04/1979
	22/12/1974	चंद्र	20/08/1976	मंगल	02/05/1977	राहु	24/05/1978	गुरु	09/07/1979
चंद्र	28/01/1975	मंगल	03/09/1976	राहु	29/06/1977	गुरु	29/06/1978	शनि	27/10/1979
मंगल	14/03/1975	राहु	07/10/1976	गुरु	20/08/1977	शनि	11/08/1978	बुध	02/02/1980
राहु	07/07/1975	गुरु	07/11/1976	शनि	20/10/1977	बुध	18/09/1978	केतु	13/03/1980
गुरु	18/10/1975	शनि	14/12/1976	बुध	13/12/1977	केतु	04/10/1978	शुक्र	07/07/1980
शनि	17/02/1976	बुध	16/01/1977	केतु	05/01/1978	शुक्र	18/11/1978	सूर्य	11/08/1980
बुध	05/06/1976	केतु	29/01/1977	शुक्र	10/03/1978	सूर्य	02/12/1978	चंद्र	08/10/1980
केतु	20/07/1976	शुक्र	09/03/1977	सूर्य	29/03/1978	चंद्र	24/12/1978	मंगल	17/11/1980

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
17/11/1980		27/07/1982		04/03/1984		01/11/1984		22/09/1986	
27/07/1982		04/03/1984		01/11/1984		22/09/1986		17/04/1987	
गुरु	07/02/1981	बुध	18/10/1982	केतु	18/03/1984	शुक्र	24/02/1985	सूर्य	02/10/1986
शनि	16/05/1981	केतु	21/11/1982	शुक्र	28/04/1984	सूर्य	30/03/1985	चंद्र	19/10/1986
बुध	11/08/1981	शुक्र	27/02/1983	सूर्य	10/05/1984	चंद्र	27/05/1985	मंगल	31/10/1986
केतु	16/09/1981	सूर्य	28/03/1983	चंद्र	30/05/1984	मंगल	06/07/1985	राहु	01/12/1986
शुक्र	28/12/1981	चंद्र	16/05/1983	मंगल	13/06/1984	राहु	18/10/1985	गुरु	29/12/1986
सूर्य	28/01/1982	मंगल	19/06/1983	राहु	19/07/1984	गुरु	18/01/1986	शनि	31/01/1987
चंद्र	20/03/1982	राहु	15/09/1983	गुरु	20/08/1984	शनि	07/05/1986	बुध	01/03/1987
मंगल	25/04/1982	गुरु	03/12/1983	शनि	28/09/1984	बुध	13/08/1986	केतु	13/03/1987
राहु	27/07/1982	शनि	04/03/1984	बुध	01/11/1984	केतु	22/09/1986	शुक्र	17/04/1987

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
17/04/1987		27/03/1988		23/11/1988		06/08/1990		09/02/1992	
27/03/1988		23/11/1988		06/08/1990		09/02/1992		25/11/1993	
चंद्र	15/05/1987	मंगल	10/04/1988	राहु	24/02/1989	गुरु	19/10/1990	शनि	23/05/1992
मंगल	05/06/1987	राहु	16/05/1988	गुरु	18/05/1989	शनि	14/01/1991	बुध	24/08/1992
राहु	26/07/1987	गुरु	17/06/1988	शनि	24/08/1989	बुध	02/04/1991	केतु	01/10/1992
गुरु	10/09/1987	शनि	25/07/1988	बुध	20/11/1989	केतु	04/05/1991	शुक्र	18/01/1993
शनि	04/11/1987	बुध	29/08/1988	केतु	27/12/1989	शुक्र	04/08/1991	सूर्य	20/02/1993
बुध	23/12/1987	केतु	12/09/1988	शुक्र	09/04/1990	सूर्य	01/09/1991	चंद्र	16/04/1993
केतु	12/01/1988	शुक्र	22/10/1988	सूर्य	10/05/1990	चंद्र	17/10/1991	मंगल	24/05/1993
शुक्र	09/03/1988	सूर्य	03/11/1988	चंद्र	01/07/1990	मंगल	18/11/1991	राहु	30/08/1993
सूर्य	27/03/1988	चंद्र	23/11/1988	मंगल	06/08/1990	राहु	09/02/1992	गुरु	25/11/1993

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
25/11/1993		05/03/1994		14/12/1994		09/03/1995		29/07/1995	
05/03/1994		14/12/1994		09/03/1995		29/07/1995		06/11/1995	
केतु	01/12/1993	शुक्र	21/04/1994	सूर्य	18/12/1994	चंद्र	21/03/1995	मंगल	04/08/1995
शुक्र	18/12/1993	सूर्य	05/05/1994	चंद्र	25/12/1994	मंगल	29/03/1995	राहु	19/08/1995
सूर्य	23/12/1993	चंद्र	29/05/1994	मंगल	30/12/1994	राहु	20/04/1995	गुरु	01/09/1995
चंद्र	31/12/1993	मंगल	15/06/1994	राहु	12/01/1995	गुरु	09/05/1995	शनि	17/09/1995
मंगल	06/01/1994	राहु	27/07/1994	गुरु	23/01/1995	शनि	31/05/1995	बुध	01/10/1995
राहु	21/01/1994	गुरु	03/09/1994	शनि	06/02/1995	बुध	20/06/1995	केतु	07/10/1995
गुरु	03/02/1994	शनि	18/10/1994	बुध	18/02/1995	केतु	28/06/1995	शुक्र	23/10/1995
शनि	19/02/1994	बुध	27/11/1994	केतु	23/02/1995	शुक्र	22/07/1995	सूर्य	28/10/1995
बुध	05/03/1994	केतु	14/12/1994	शुक्र	09/03/1995	सूर्य	29/07/1995	चंद्र	06/11/1995

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
06/11/1995		18/07/1996		03/03/1997		27/11/1997		27/07/1998	
18/07/1996		03/03/1997		27/11/1997		27/07/1998		16/10/2000	
राहु	14/12/1995	गुरु	18/08/1996	शनि	14/04/1997	बुध	01/01/1998	शुक्र	09/12/1998
गुरु	17/01/1996	शनि	23/09/1996	बुध	23/05/1997	केतु	15/01/1998	सूर्य	19/01/1999
शनि	27/02/1996	बुध	25/10/1996	केतु	07/06/1997	शुक्र	24/02/1998	चंद्र	27/03/1999
बुध	03/04/1996	केतु	07/11/1996	शुक्र	22/07/1997	सूर्य	08/03/1998	मंगल	14/05/1999
केतु	18/04/1996	शुक्र	15/12/1996	सूर्य	05/08/1997	चंद्र	28/03/1998	राहु	13/09/1999
शुक्र	30/05/1996	सूर्य	26/12/1996	चंद्र	27/08/1997	मंगल	11/04/1998	गुरु	30/12/1999
सूर्य	12/06/1996	चंद्र	14/01/1997	मंगल	12/09/1997	राहु	18/05/1998	शनि	06/05/2000
चंद्र	03/07/1996	मंगल	28/01/1997	राहु	22/10/1997	गुरु	19/06/1998	बुध	29/08/2000
मंगल	18/07/1996	राहु	03/03/1997	गुरु	27/11/1997	शनि	27/07/1998	केतु	16/10/2000

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
16/10/2000		16/06/2001		27/07/2002		07/05/2003		07/05/2005	
16/06/2001		27/07/2002		07/05/2003		07/05/2005		15/02/2007	
सूर्य	28/10/2000	चंद्र	20/07/2001	मंगल	13/08/2002	राहु	25/08/2003	गुरु	01/08/2005
चंद्र	17/11/2000	मंगल	13/08/2001	राहु	24/09/2002	गुरु	30/11/2003	शनि	12/11/2005
मंगल	01/12/2000	राहु	12/10/2001	गुरु	01/11/2002	शनि	25/03/2004	बुध	12/02/2006
राहु	07/01/2001	गुरु	06/12/2001	शनि	16/12/2002	बुध	06/07/2004	केतु	22/03/2006
गुरु	08/02/2001	शनि	08/02/2002	बुध	25/01/2003	केतु	18/08/2004	शुक्र	08/07/2006
शनि	19/03/2001	बुध	06/04/2002	केतु	11/02/2003	शुक्र	18/12/2004	सूर्य	09/08/2006
बुध	22/04/2001	केतु	30/04/2002	शुक्र	30/03/2003	सूर्य	23/01/2005	चंद्र	03/10/2006
केतु	07/05/2001	शुक्र	07/07/2002	सूर्य	13/04/2003	चंद्र	25/03/2005	मंगल	09/11/2006
शुक्र	16/06/2001	सूर्य	27/07/2002	चंद्र	07/05/2003	मंगल	07/05/2005	राहु	15/02/2007

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
15/02/2007		27/03/2009		15/02/2011		26/11/2011		07/02/2012	
27/03/2009		15/02/2011		26/11/2011		07/02/2012		08/06/2012	
शनि	17/06/2007	बुध	03/07/2009	केतु	03/03/2011	सूर्य	30/11/2011	चंद्र	17/02/2012
बुध	04/10/2007	केतु	12/08/2009	शुक्र	20/04/2011	चंद्र	06/12/2011	मंगल	24/02/2012
केतु	18/11/2007	शुक्र	05/12/2009	सूर्य	04/05/2011	मंगल	10/12/2011	राहु	14/03/2012
शुक्र	26/03/2008	सूर्य	08/01/2010	चंद्र	28/05/2011	राहु	21/12/2011	गुरु	30/03/2012
सूर्य	03/05/2008	चंद्र	07/03/2010	मंगल	13/06/2011	गुरु	31/12/2011	शनि	18/04/2012
चंद्र	06/07/2008	मंगल	16/04/2010	राहु	26/07/2011	शनि	11/01/2012	बुध	05/05/2012
मंगल	20/08/2008	राहु	29/07/2010	गुरु	02/09/2011	बुध	22/01/2012	केतु	12/05/2012
राहु	14/12/2008	गुरु	29/10/2010	शनि	17/10/2011	केतु	26/01/2012	शुक्र	02/06/2012
गुरु	27/03/2009	शनि	15/02/2011	बुध	26/11/2011	शुक्र	07/02/2012	सूर्य	08/06/2012

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
08/06/2012		01/09/2012		08/04/2013		20/10/2013		08/06/2014	
01/09/2012		08/04/2013		20/10/2013		08/06/2014		01/01/2015	
मंगल	13/06/2012	राहु	04/10/2012	गुरु	04/05/2013	शनि	26/11/2013	बुध	08/07/2014
राहु	26/06/2012	गुरु	02/11/2012	शनि	04/06/2013	बुध	28/12/2013	केतु	20/07/2014
गुरु	07/07/2012	शनि	07/12/2012	बुध	02/07/2013	केतु	11/01/2014	शुक्र	23/08/2014
शनि	20/07/2012	बुध	07/01/2013	केतु	13/07/2013	शुक्र	18/02/2014	सूर्य	02/09/2014
बुध	01/08/2012	केतु	20/01/2013	शुक्र	14/08/2013	सूर्य	02/03/2014	चंद्र	20/09/2014
केतु	06/08/2012	शुक्र	25/02/2013	सूर्य	24/08/2013	चंद्र	21/03/2014	मंगल	02/10/2014
शुक्र	21/08/2012	सूर्य	08/03/2013	चंद्र	09/09/2013	मंगल	04/04/2014	राहु	02/11/2014
सूर्य	25/08/2012	चंद्र	26/03/2013	मंगल	21/09/2013	राहु	08/05/2014	गुरु	29/11/2014
चंद्र	01/09/2012	मंगल	08/04/2013	राहु	20/10/2013	गुरु	08/06/2014	शनि	01/01/2015

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
01/01/2015		27/03/2015		26/11/2015		16/06/2016		05/11/2016	
27/03/2015		26/11/2015		16/06/2016		05/11/2016		05/11/2017	
केतु	06/01/2015	शुक्र	07/05/2015	चंद्र	13/12/2015	मंगल	24/06/2016	राहु	30/12/2016
शुक्र	20/01/2015	सूर्य	19/05/2015	मंगल	25/12/2015	राहु	15/07/2016	गुरु	16/02/2017
सूर्य	25/01/2015	चंद्र	09/06/2015	राहु	24/01/2016	गुरु	03/08/2016	शनि	15/04/2017
चंद्र	01/02/2015	मंगल	23/06/2015	गुरु	20/02/2016	शनि	26/08/2016	बुध	06/06/2017
मंगल	06/02/2015	राहु	29/07/2015	शनि	23/03/2016	बुध	15/09/2016	केतु	27/06/2017
राहु	19/02/2015	गुरु	31/08/2015	बुध	21/04/2016	केतु	23/09/2016	शुक्र	27/08/2017
गुरु	02/03/2015	शनि	08/10/2015	केतु	03/05/2016	शुक्र	17/10/2016	सूर्य	14/09/2017
शनि	15/03/2015	बुध	12/11/2015	शुक्र	06/06/2016	सूर्य	24/10/2016	चंद्र	15/10/2017
बुध	27/03/2015	केतु	26/11/2015	सूर्य	16/06/2016	चंद्र	05/11/2016	मंगल	05/11/2017

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
05/11/2017		26/09/2018		16/10/2019		25/09/2020		14/02/2021	
26/09/2018		16/10/2019		25/09/2020		14/02/2021		27/03/2022	
गुरु	18/12/2017	शनि	26/11/2018	बुध	04/12/2019	केतु	04/10/2020	शुक्र	23/04/2021
शनि	08/02/2018	बुध	19/01/2019	केतु	24/12/2019	शुक्र	27/10/2020	सूर्य	13/05/2021
बुध	26/03/2018	केतु	11/02/2019	शुक्र	20/02/2020	सूर्य	03/11/2020	चंद्र	16/06/2021
केतु	14/04/2018	शुक्र	16/04/2019	सूर्य	08/03/2020	चंद्र	15/11/2020	मंगल	10/07/2021
शुक्र	07/06/2018	सूर्य	06/05/2019	चंद्र	06/04/2020	मंगल	24/11/2020	राहु	09/09/2021
सूर्य	23/06/2018	चंद्र	07/06/2019	मंगल	26/04/2020	राहु	15/12/2020	गुरु	02/11/2021
चंद्र	20/07/2018	मंगल	29/06/2019	राहु	17/06/2020	गुरु	03/01/2021	शनि	05/01/2022
मंगल	08/08/2018	राहु	26/08/2019	गुरु	02/08/2020	शनि	25/01/2021	बुध	04/03/2022
राहु	26/09/2018	गुरु	16/10/2019	शनि	25/09/2020	बुध	14/02/2021	केतु	27/03/2022

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
27/03/2022		27/07/2022		03/11/2022		17/07/2023		29/02/2024	
27/07/2022		03/11/2022		17/07/2023		29/02/2024		25/11/2024	
सूर्य	02/04/2022	मंगल	02/08/2022	राहु	12/12/2022	गुरु	16/08/2023	शनि	12/04/2024
चंद्र	12/04/2022	राहु	17/08/2022	गुरु	15/01/2023	शनि	21/09/2023	बुध	20/05/2024
मंगल	20/04/2022	गुरु	30/08/2022	शनि	24/02/2023	बुध	24/10/2023	केतु	05/06/2024
राहु	08/05/2022	शनि	15/09/2022	बुध	02/04/2023	केतु	06/11/2023	शुक्र	20/07/2024
गुरु	24/05/2022	बुध	29/09/2022	केतु	16/04/2023	शुक्र	14/12/2023	सूर्य	03/08/2024
शनि	12/06/2022	केतु	05/10/2022	शुक्र	29/05/2023	सूर्य	25/12/2023	चंद्र	25/08/2024
बुध	30/06/2022	शुक्र	21/10/2022	सूर्य	11/06/2023	चंद्र	13/01/2024	मंगल	10/09/2024
केतु	07/07/2022	सूर्य	26/10/2022	चंद्र	02/07/2023	मंगल	26/01/2024	राहु	20/10/2024
शुक्र	27/07/2022	चंद्र	03/11/2022	मंगल	17/07/2023	राहु	29/02/2024	गुरु	25/11/2024

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
25/11/2024		25/07/2025		01/11/2025		12/08/2026		05/11/2026	
25/07/2025		01/11/2025		12/08/2026		05/11/2026		27/03/2027	
बुध	29/12/2024	केतु	30/07/2025	शुक्र	18/12/2025	सूर्य	16/08/2026	चंद्र	17/11/2026
केतु	12/01/2025	शुक्र	16/08/2025	सूर्य	02/01/2026	चंद्र	24/08/2026	मंगल	26/11/2026
शुक्र	22/02/2025	सूर्य	21/08/2025	चंद्र	25/01/2026	मंगल	29/08/2026	राहु	17/12/2026
सूर्य	06/03/2025	चंद्र	29/08/2025	मंगल	11/02/2026	राहु	10/09/2026	गुरु	05/01/2027
चंद्र	26/03/2025	मंगल	04/09/2025	राहु	26/03/2026	गुरु	22/09/2026	शनि	27/01/2027
मंगल	09/04/2025	राहु	19/09/2025	गुरु	02/05/2026	शनि	05/10/2026	बुध	16/02/2027
राहु	15/05/2025	गुरु	02/10/2025	शनि	16/06/2026	बुध	17/10/2026	केतु	25/02/2027
गुरु	16/06/2025	शनि	18/10/2025	बुध	27/07/2026	केतु	22/10/2026	शुक्र	20/03/2027
शनि	25/07/2025	बुध	01/11/2025	केतु	12/08/2026	शुक्र	05/11/2026	सूर्य	27/03/2027

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
27/03/2027		13/01/2029		20/08/2030		14/07/2032		27/03/2034	
13/01/2029		20/08/2030		14/07/2032		27/03/2034		08/12/2034	
राहु	04/07/2027	गुरु	01/04/2029	शनि	08/12/2030	बुध	10/10/2032	केतु	11/04/2034
गुरु	30/09/2027	शनि	02/07/2029	बुध	16/03/2031	केतु	15/11/2032	शुक्र	24/05/2034
शनि	12/01/2028	बुध	23/09/2029	केतु	26/04/2031	शुक्र	27/02/2033	सूर्य	06/06/2034
बुध	14/04/2028	केतु	27/10/2029	शुक्र	20/08/2031	सूर्य	30/03/2033	चंद्र	27/06/2034
केतु	22/05/2028	शुक्र	02/02/2030	सूर्य	23/09/2031	चंद्र	21/05/2033	मंगल	12/07/2034
शुक्र	09/09/2028	सूर्य	03/03/2030	चंद्र	20/11/2031	मंगल	26/06/2033	राहु	19/08/2034
सूर्य	12/10/2028	चंद्र	21/04/2030	मंगल	31/12/2031	राहु	27/09/2033	गुरु	22/09/2034
चंद्र	06/12/2028	मंगल	25/05/2030	राहु	13/04/2032	गुरु	19/12/2033	शनि	02/11/2034
मंगल	13/01/2029	राहु	20/08/2030	गुरु	14/07/2032	शनि	27/03/2034	बुध	08/12/2034

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
08/12/2034		07/12/2036		15/07/2037		15/07/2038		27/03/2039	
07/12/2036		15/07/2037		15/07/2038		27/03/2039		28/08/2040	
शुक्र	09/04/2035	सूर्य	18/12/2036	चंद्र	14/08/2037	मंगल	30/07/2038	गुरु	05/06/2039
सूर्य	15/05/2035	चंद्र	06/01/2037	मंगल	04/09/2037	राहु	06/09/2038	शनि	26/08/2039
चंद्र	15/07/2035	मंगल	18/01/2037	राहु	29/10/2037	गुरु	10/10/2038	बुध	08/11/2039
मंगल	27/08/2035	राहु	20/02/2037	गुरु	17/12/2037	शनि	20/11/2038	केतु	08/12/2039
राहु	14/12/2035	गुरु	21/03/2037	शनि	13/02/2038	बुध	26/12/2038	शुक्र	03/03/2040
गुरु	21/03/2036	शनि	25/04/2037	बुध	05/04/2038	केतु	10/01/2039	सूर्य	29/03/2040
शनि	14/07/2036	बुध	26/05/2037	केतु	27/04/2038	शुक्र	21/02/2039	चंद्र	12/05/2040
बुध	26/10/2036	केतु	08/06/2037	शुक्र	27/06/2038	सूर्य	06/03/2039	मंगल	11/06/2040
केतु	07/12/2036	शुक्र	15/07/2037	सूर्य	15/07/2038	चंद्र	27/03/2039	राहु	28/08/2040

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
28/08/2040		07/05/2042		10/11/2043		24/06/2044		04/04/2046	
07/05/2042		10/11/2043		24/06/2044		04/04/2046		16/10/2046	
शनि	04/12/2040	बुध	24/07/2042	केतु	23/11/2043	शुक्र	10/10/2044	सूर्य	14/04/2046
बुध	01/03/2041	केतु	25/08/2042	शुक्र	31/12/2043	सूर्य	12/11/2044	चंद्र	30/04/2046
केतु	06/04/2041	शुक्र	25/11/2042	सूर्य	11/01/2044	चंद्र	05/01/2045	मंगल	12/05/2046
शुक्र	18/07/2041	सूर्य	23/12/2042	चंद्र	30/01/2044	मंगल	12/02/2045	राहु	10/06/2046
सूर्य	18/08/2041	चंद्र	07/02/2043	मंगल	12/02/2044	राहु	20/05/2045	गुरु	06/07/2046
चंद्र	08/10/2041	मंगल	11/03/2043	राहु	18/03/2044	गुरु	15/08/2045	शनि	06/08/2046
मंगल	13/11/2041	राहु	02/06/2043	गुरु	17/04/2044	शनि	25/11/2045	बुध	02/09/2046
राहु	14/02/2042	गुरु	14/08/2043	शनि	23/05/2044	बुध	25/02/2046	केतु	14/09/2046
गुरु	07/05/2042	शनि	10/11/2043	बुध	24/06/2044	केतु	04/04/2046	शुक्र	16/10/2046

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 10 वर्ष 4 मास 23 दिन

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष	
22/12/1974		16/05/1985		16/05/2006		16/05/2012		16/05/2027	
16/05/1985		16/05/2006		16/05/2012		16/05/2027		16/05/2035	
	22/12/1974	शुक्र	15/06/1989	सूर्य	15/09/2006	चंद्र	16/06/2014	मंगल	19/12/2027
शुक्र	14/01/1977	सूर्य	15/08/1990	चंद्र	16/07/2007	मंगल	26/07/2015	बुध	23/03/2029
सूर्य	15/09/1977	चंद्र	16/07/1993	मंगल	26/12/2007	बुध	05/12/2017	शनि	18/12/2029
चंद्र	16/05/1979	मंगल	04/02/1995	बुध	04/12/2008	शनि	26/04/2019	गुरु	16/05/2031
मंगल	05/04/1980	बुध	26/05/1998	शनि	25/06/2009	गुरु	15/12/2021	राहु	05/04/2032
बुध	24/02/1982	शनि	05/05/2000	गुरु	16/07/2010	राहु	16/08/2023	शुक्र	25/10/2033
शनि	06/04/1983	गुरु	15/01/2004	राहु	16/03/2011	शुक्र	16/07/2026	सूर्य	05/04/2034
गुरु	16/05/1985	राहु	16/05/2006	शुक्र	16/05/2012	सूर्य	16/05/2027	चंद्र	16/05/2035

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
16/05/2035		16/05/2052		16/05/2062		16/05/2081	
16/05/2052		16/05/2062		16/05/2081		00/00/0000	
बुध	18/01/2038	शनि	19/04/2053	गुरु	18/09/2065	राहु	15/09/2082
शनि	16/08/2039	गुरु	21/01/2055	राहु	29/10/2067	शुक्र	22/12/2082
गुरु	12/08/2042	राहु	02/03/2056	शुक्र	09/07/2071		00/00/0000
राहु	02/07/2044	शुक्र	10/02/2058	सूर्य	29/07/2072		00/00/0000
शुक्र	22/10/2047	सूर्य	01/09/2058	चंद्र	20/03/2075		00/00/0000
सूर्य	01/10/2048	चंद्र	22/01/2060	मंगल	15/08/2076		00/00/0000
चंद्र	11/02/2051	मंगल	18/10/2060	बुध	12/08/2079		00/00/0000
मंगल	16/05/2052	बुध	16/05/2062	शनि	16/05/2081		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
22/12/1974		14/01/1977		15/09/1977		16/05/1979		05/04/1980	
14/01/1977		15/09/1977		16/05/1979		05/04/1980		24/02/1982	
शुक्र	28/02/1975	सूर्य	28/01/1977	चंद्र	08/12/1977	मंगल	09/06/1979	बुध	23/07/1980
सूर्य	16/04/1975	चंद्र	02/03/1977	मंगल	22/01/1978	बुध	30/07/1979	शनि	24/09/1980
चंद्र	12/08/1975	मंगल	20/03/1977	बुध	28/04/1978	शनि	30/08/1979	गुरु	24/01/1981
मंगल	14/10/1975	बुध	28/04/1977	शनि	23/06/1978	गुरु	26/10/1979	राहु	11/04/1981
बुध	26/02/1976	शनि	20/05/1977	गुरु	08/10/1978	राहु	01/12/1979	शुक्र	23/08/1981
शनि	14/05/1976	गुरु	02/07/1977	राहु	15/12/1978	शुक्र	02/02/1980	सूर्य	30/09/1981
गुरु	11/10/1976	राहु	29/07/1977	शुक्र	13/04/1979	सूर्य	20/02/1980	चंद्र	04/01/1982
राहु	14/01/1977	शुक्र	15/09/1977	सूर्य	16/05/1979	चंद्र	05/04/1980	मंगल	24/02/1982

राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
24/02/1982		06/04/1983		16/05/1985		15/06/1989		15/08/1990	
06/04/1983		16/05/1985		15/06/1989		15/08/1990		16/07/1993	
शनि	02/04/1982	गुरु	19/08/1983	शुक्र	02/03/1986	सूर्य	09/07/1989	चंद्र	10/01/1991
गुरु	13/06/1982	राहु	13/11/1983	सूर्य	24/05/1986	चंद्र	06/09/1989	मंगल	30/03/1991
राहु	28/07/1982	शुक्र	11/04/1984	चंद्र	17/12/1986	मंगल	08/10/1989	बुध	14/09/1991
शुक्र	15/10/1982	सूर्य	24/05/1984	मंगल	06/04/1987	बुध	14/12/1989	शनि	22/12/1991
सूर्य	06/11/1982	चंद्र	08/09/1984	बुध	27/11/1987	शनि	22/01/1990	गुरु	26/06/1992
चंद्र	02/01/1983	मंगल	04/11/1984	शनि	13/04/1988	गुरु	07/04/1990	राहु	22/10/1992
मंगल	01/02/1983	बुध	05/03/1985	गुरु	01/01/1989	राहु	25/05/1990	शुक्र	18/05/1993
बुध	06/04/1983	शनि	16/05/1985	राहु	15/06/1989	शुक्र	15/08/1990	सूर्य	16/07/1993

शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु	
16/07/1993		04/02/1995		26/05/1998		05/05/2000		15/01/2004	
04/02/1995		26/05/1998		05/05/2000		15/01/2004		16/05/2006	
मंगल	27/08/1993	बुध	13/08/1995	शनि	31/07/1998	गुरु	29/12/2000	राहु	19/04/2004
बुध	24/11/1993	शनि	03/12/1995	गुरु	03/12/1998	राहु	28/05/2001	शुक्र	01/10/2004
शनि	16/01/1994	गुरु	02/07/1996	राहु	20/02/1999	शुक्र	14/02/2002	सूर्य	18/11/2004
गुरु	26/04/1994	राहु	13/11/1996	शुक्र	08/07/1999	सूर्य	30/04/2002	चंद्र	16/03/2005
राहु	28/06/1994	शुक्र	06/07/1997	सूर्य	16/08/1999	चंद्र	04/11/2002	मंगल	18/05/2005
शुक्र	16/10/1994	सूर्य	11/09/1997	चंद्र	23/11/1999	मंगल	11/02/2003	बुध	29/09/2005
सूर्य	17/11/1994	चंद्र	26/02/1998	मंगल	15/01/2000	बुध	12/09/2003	शनि	17/12/2005
चंद्र	04/02/1995	मंगल	26/05/1998	बुध	05/05/2000	शनि	15/01/2004	गुरु	16/05/2006

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि	
16/05/2006		15/09/2006		16/07/2007		26/12/2007		04/12/2008	
15/09/2006		16/07/2007		26/12/2007		04/12/2008		25/06/2009	
सूर्य	23/05/2006	चंद्र	27/10/2006	मंगल	28/07/2007	बुध	18/02/2008	शनि	23/12/2008
चंद्र	09/06/2006	मंगल	19/11/2006	बुध	23/08/2007	शनि	21/03/2008	गुरु	28/01/2009
मंगल	18/06/2006	बुध	06/01/2007	शनि	07/09/2007	गुरु	20/05/2008	राहु	20/02/2009
बुध	07/07/2006	शनि	03/02/2007	गुरु	05/10/2007	राहु	28/06/2008	शुक्र	31/03/2009
शनि	18/07/2006	गुरु	28/03/2007	राहु	23/10/2007	शुक्र	03/09/2008	सूर्य	11/04/2009
गुरु	09/08/2006	राहु	01/05/2007	शुक्र	24/11/2007	सूर्य	22/09/2008	चंद्र	09/05/2009
राहु	22/08/2006	शुक्र	29/06/2007	सूर्य	03/12/2007	चंद्र	09/11/2008	मंगल	24/05/2009
शुक्र	15/09/2006	सूर्य	16/07/2007	चंद्र	26/12/2007	मंगल	04/12/2008	बुध	25/06/2009

सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
25/06/2009		16/07/2010		16/03/2011		16/05/2012		16/06/2014	
16/07/2010		16/03/2011		16/05/2012		16/06/2014		26/07/2015	
गुरु	01/09/2009	राहु	12/08/2010	शुक्र	07/06/2011	चंद्र	29/08/2012	मंगल	16/07/2014
राहु	14/10/2009	शुक्र	28/09/2010	सूर्य	01/07/2011	मंगल	25/10/2012	बुध	17/09/2014
शुक्र	28/12/2009	सूर्य	12/10/2010	चंद्र	29/08/2011	बुध	21/02/2013	शनि	25/10/2014
सूर्य	18/01/2010	चंद्र	15/11/2010	मंगल	30/09/2011	शनि	03/05/2013	गुरु	04/01/2015
चंद्र	13/03/2010	मंगल	03/12/2010	बुध	06/12/2011	गुरु	14/09/2013	राहु	19/02/2015
मंगल	11/04/2010	बुध	10/01/2011	शनि	14/01/2012	राहु	07/12/2013	शुक्र	08/05/2015
बुध	10/06/2010	शनि	02/02/2011	गुरु	29/03/2012	शुक्र	04/05/2014	सूर्य	31/05/2015
शनि	16/07/2010	गुरु	16/03/2011	राहु	16/05/2012	सूर्य	16/06/2014	चंद्र	26/07/2015

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
26/07/2015		05/12/2017		26/04/2019		15/12/2021		16/08/2023	
05/12/2017		26/04/2019		15/12/2021		16/08/2023		16/07/2026	
बुध	09/12/2015	शनि	21/01/2018	गुरु	13/10/2019	राहु	21/02/2022	शुक्र	10/03/2024
शनि	27/02/2016	गुरु	20/04/2018	राहु	28/01/2020	शुक्र	19/06/2022	सूर्य	08/05/2024
गुरु	28/07/2016	राहु	15/06/2018	शुक्र	02/08/2020	सूर्य	23/07/2022	चंद्र	03/10/2024
राहु	31/10/2016	शुक्र	22/09/2018	सूर्य	25/09/2020	चंद्र	15/10/2022	मंगल	21/12/2024
शुक्र	17/04/2017	सूर्य	20/10/2018	चंद्र	06/02/2021	मंगल	29/11/2022	बुध	07/06/2025
सूर्य	04/06/2017	चंद्र	30/12/2018	मंगल	18/04/2021	बुध	05/03/2023	शनि	13/09/2025
चंद्र	02/10/2017	मंगल	05/02/2019	बुध	17/09/2021	शनि	01/05/2023	गुरु	20/03/2026
मंगल	05/12/2017	बुध	26/04/2019	शनि	15/12/2021	गुरु	16/08/2023	राहु	16/07/2026

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
16/07/2026		16/05/2027		19/12/2027		23/03/2029		18/12/2029	
16/05/2027		19/12/2027		23/03/2029		18/12/2029		16/05/2031	
सूर्य	02/08/2026	मंगल	01/06/2027	बुध	29/02/2028	शनि	17/04/2029	गुरु	19/03/2030
चंद्र	13/09/2026	बुध	05/07/2027	शनि	12/04/2028	गुरु	03/06/2029	राहु	15/05/2030
मंगल	06/10/2026	शनि	25/07/2027	गुरु	02/07/2028	राहु	03/07/2029	शुक्र	23/08/2030
बुध	23/11/2026	गुरु	02/09/2027	राहु	22/08/2028	शुक्र	25/08/2029	सूर्य	20/09/2030
शनि	21/12/2026	राहु	26/09/2027	शुक्र	19/11/2028	सूर्य	09/09/2029	चंद्र	01/12/2030
गुरु	12/02/2027	शुक्र	07/11/2027	सूर्य	15/12/2028	चंद्र	17/10/2029	मंगल	08/01/2031
राहु	18/03/2027	सूर्य	19/11/2027	चंद्र	17/02/2029	मंगल	06/11/2029	बुध	30/03/2031
शुक्र	16/05/2027	चंद्र	19/12/2027	मंगल	23/03/2029	बुध	18/12/2029	शनि	16/05/2031

मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध	
16/05/2031		05/04/2032		25/10/2033		05/04/2034		16/05/2035	
05/04/2032		25/10/2033		05/04/2034		16/05/2035		18/01/2038	
राहु	21/06/2031	शुक्र	24/07/2032	सूर्य	03/11/2033	चंद्र	01/06/2034	बुध	17/10/2035
शुक्र	24/08/2031	सूर्य	25/08/2032	चंद्र	26/11/2033	मंगल	01/07/2034	शनि	16/01/2036
सूर्य	11/09/2031	चंद्र	12/11/2032	मंगल	08/12/2033	बुध	03/09/2034	गुरु	06/07/2036
चंद्र	26/10/2031	मंगल	24/12/2032	बुध	02/01/2034	शनि	10/10/2034	राहु	22/10/2036
मंगल	19/11/2031	बुध	23/03/2033	शनि	17/01/2034	गुरु	21/12/2034	शुक्र	30/04/2037
बुध	09/01/2032	शनि	15/05/2033	गुरु	15/02/2034	राहु	04/02/2035	सूर्य	24/06/2037
शनि	08/02/2032	गुरु	23/08/2033	राहु	05/03/2034	शुक्र	24/04/2035	चंद्र	06/11/2037
गुरु	05/04/2032	राहु	25/10/2033	शुक्र	05/04/2034	सूर्य	16/05/2035	मंगल	18/01/2038

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
18/01/2038		16/08/2039		12/08/2042		02/07/2044		22/10/2047	
16/08/2039		12/08/2042		02/07/2044		22/10/2047		01/10/2048	
शनि	12/03/2038	गुरु	24/02/2040	राहु	28/10/2042	शुक्र	22/02/2045	सूर्य	10/11/2047
गुरु	21/06/2038	राहु	24/06/2040	शुक्र	11/03/2043	सूर्य	30/04/2045	चंद्र	28/12/2047
राहु	24/08/2038	शुक्र	23/01/2041	सूर्य	18/04/2043	चंद्र	14/10/2045	मंगल	23/01/2048
शुक्र	14/12/2038	सूर्य	24/03/2041	चंद्र	23/07/2043	मंगल	12/01/2046	बुध	17/03/2048
सूर्य	15/01/2039	चंद्र	23/08/2041	मंगल	12/09/2043	बुध	21/07/2046	शनि	18/04/2048
चंद्र	05/04/2039	मंगल	12/11/2041	बुध	30/12/2043	शनि	10/11/2046	गुरु	18/06/2048
मंगल	17/05/2039	बुध	03/05/2042	शनि	03/03/2044	गुरु	10/06/2047	राहु	26/07/2048
बुध	16/08/2039	शनि	12/08/2042	गुरु	02/07/2044	राहु	22/10/2047	शुक्र	01/10/2048

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
01/10/2048		11/02/2051		16/05/2052		19/04/2053		21/01/2055	
11/02/2051		16/05/2052		19/04/2053		21/01/2055		02/03/2056	
चंद्र	29/01/2049	मंगल	17/03/2051	शनि	16/06/2052	गुरु	10/08/2053	राहु	07/03/2055
मंगल	03/04/2049	बुध	28/05/2051	गुरु	14/08/2052	राहु	20/10/2053	शुक्र	25/05/2055
बुध	17/08/2049	शनि	10/07/2051	राहु	21/09/2052	शुक्र	22/02/2054	सूर्य	17/06/2055
शनि	04/11/2049	गुरु	29/09/2051	शुक्र	26/11/2052	सूर्य	30/03/2054	चंद्र	12/08/2055
गुरु	05/04/2050	राहु	19/11/2051	सूर्य	15/12/2052	चंद्र	27/06/2054	मंगल	11/09/2055
राहु	10/07/2050	शुक्र	16/02/2052	चंद्र	30/01/2053	मंगल	14/08/2054	बुध	14/11/2055
शुक्र	25/12/2050	सूर्य	13/03/2052	मंगल	25/02/2053	बुध	23/11/2054	शनि	22/12/2055
सूर्य	11/02/2051	चंद्र	16/05/2052	बुध	19/04/2053	शनि	21/01/2055	गुरु	02/03/2056

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
02/03/2056		10/02/2058		01/09/2058		22/01/2060		18/10/2060	
10/02/2058		01/09/2058		22/01/2060		18/10/2060		16/05/2062	
शुक्र	18/07/2056	सूर्य	22/02/2058	चंद्र	11/11/2058	मंगल	11/02/2060	बुध	17/01/2061
सूर्य	27/08/2056	चंद्र	22/03/2058	मंगल	18/12/2058	बुध	24/03/2060	शनि	11/03/2061
चंद्र	03/12/2056	मंगल	06/04/2058	बुध	08/03/2059	शनि	18/04/2060	गुरु	20/06/2061
मंगल	25/01/2057	बुध	08/05/2058	शनि	24/04/2059	गुरु	05/06/2060	राहु	23/08/2061
बुध	17/05/2057	शनि	27/05/2058	गुरु	22/07/2059	राहु	05/07/2060	शुक्र	13/12/2061
शनि	22/07/2057	गुरु	01/07/2058	राहु	17/09/2059	शुक्र	27/08/2060	सूर्य	14/01/2062
गुरु	23/11/2057	राहु	24/07/2058	शुक्र	24/12/2059	सूर्य	11/09/2060	चंद्र	03/04/2062
राहु	10/02/2058	शुक्र	01/09/2058	सूर्य	22/01/2060	चंद्र	18/10/2060	मंगल	16/05/2062

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
16/05/2062		18/09/2065		29/10/2067		09/07/2071		29/07/2072	
18/09/2065		29/10/2067		09/07/2071		29/07/2072		20/03/2075	
गुरु	17/12/2062	राहु	13/12/2065	शुक्र	17/07/2068	सूर्य	31/07/2071	चंद्र	10/12/2072
राहु	02/05/2063	शुक्र	12/05/2066	सूर्य	30/09/2068	चंद्र	22/09/2071	मंगल	19/02/2073
शुक्र	25/12/2063	सूर्य	23/06/2066	चंद्र	06/04/2069	मंगल	21/10/2071	बुध	21/07/2073
सूर्य	02/03/2064	चंद्र	08/10/2066	मंगल	15/07/2069	बुध	21/12/2071	शनि	18/10/2073
चंद्र	18/08/2064	मंगल	05/12/2066	बुध	12/02/2070	शनि	25/01/2072	गुरु	06/04/2074
मंगल	17/11/2064	बुध	05/04/2067	शनि	17/06/2070	गुरु	02/04/2072	राहु	22/07/2074
बुध	28/05/2065	शनि	15/06/2067	गुरु	10/02/2071	राहु	15/05/2072	शुक्र	25/01/2075
शनि	18/09/2065	गुरु	29/10/2067	राहु	09/07/2071	शुक्र	29/07/2072	सूर्य	20/03/2075

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 2 वर्ष 11 मास 29 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
22/12/1974		21/12/1977		21/12/1983		21/12/1990		21/12/1998	
21/12/1977		21/12/1983		21/12/1990		21/12/1998		21/12/1999	
	00/00/0000	उल्क	21/12/1978	सिद्ध	01/05/1985	संक	30/09/1992	मंग	31/12/1998
	22/12/1974	सिद्ध	20/02/1980	संक	21/11/1986	मंग	21/12/1992	पिंग	21/01/1999
सिद्ध	22/06/1975	संक	21/06/1981	मंग	31/01/1987	पिंग	01/06/1993	धांय	20/02/1999
संक	01/08/1976	मंग	21/08/1981	पिंग	22/06/1987	धांय	30/01/1994	भ्राम	02/04/1999
मंग	20/09/1976	पिंग	21/12/1981	धांय	21/01/1988	भ्राम	21/12/1994	भद्रि	22/05/1999
पिंग	31/12/1976	धांय	21/06/1982	भ्राम	31/10/1988	भद्रि	31/01/1996	उल्क	22/07/1999
धांय	01/06/1977	भ्राम	20/02/1983	भद्रि	21/10/1989	उल्क	01/06/1997	सिद्ध	01/10/1999
भ्राम	21/12/1977	भद्रि	21/12/1983	उल्क	21/12/1990	सिद्ध	21/12/1998	संक	21/12/1999

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
21/12/1999		21/12/2001		21/12/2004		21/12/2008		21/12/2013	
21/12/2001		21/12/2004		21/12/2008		21/12/2013		21/12/2019	
पिंग	31/01/2000	धांय	22/03/2002	भ्राम	01/06/2005	भद्रि	31/08/2009	उल्क	21/12/2014
धांय	01/04/2000	भ्राम	22/07/2002	भद्रि	21/12/2005	उल्क	02/07/2010	सिद्ध	20/02/2016
भ्राम	21/06/2000	भद्रि	21/12/2002	उल्क	21/08/2006	सिद्ध	22/06/2011	संक	21/06/2017
भद्रि	30/09/2000	उल्क	22/06/2003	सिद्ध	01/06/2007	संक	01/08/2012	मंग	21/08/2017
उल्क	30/01/2001	सिद्ध	21/01/2004	संक	21/04/2008	मंग	20/09/2012	पिंग	21/12/2017
सिद्ध	21/06/2001	संक	20/09/2004	मंग	01/06/2008	पिंग	31/12/2012	धांय	21/06/2018
संक	01/12/2001	मंग	21/10/2004	पिंग	21/08/2008	धांय	01/06/2013	भ्राम	20/02/2019
मंग	21/12/2001	पिंग	21/12/2004	धांय	21/12/2008	भ्राम	21/12/2013	भद्रि	21/12/2019

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
21/12/2019		21/12/2026		21/12/2034		21/12/2035		21/12/2037	
21/12/2026		21/12/2034		21/12/2035		21/12/2037		21/12/2040	
सिद्ध	01/05/2021	संक	30/09/2028	मंग	31/12/2034	पिंग	31/01/2036	धांय	22/03/2038
संक	21/11/2022	मंग	21/12/2028	पिंग	21/01/2035	धांय	01/04/2036	भ्राम	22/07/2038
मंग	31/01/2023	पिंग	01/06/2029	धांय	20/02/2035	भ्राम	21/06/2036	भद्रि	21/12/2038
पिंग	22/06/2023	धांय	30/01/2030	भ्राम	02/04/2035	भद्रि	30/09/2036	उल्क	22/06/2039
धांय	21/01/2024	भ्राम	21/12/2030	भद्रि	22/05/2035	उल्क	30/01/2037	सिद्ध	21/01/2040
भ्राम	31/10/2024	भद्रि	31/01/2032	उल्क	22/07/2035	सिद्ध	21/06/2037	संक	20/09/2040
भद्रि	21/10/2025	उल्क	01/06/2033	सिद्ध	01/10/2035	संक	01/12/2037	मंग	21/10/2040
उल्क	21/12/2026	सिद्ध	21/12/2034	संक	21/12/2035	मंग	21/12/2037	पिंग	21/12/2040

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
21/12/2040		21/12/2044		21/12/2049		21/12/2055		21/12/2062	
21/12/2044		21/12/2049		21/12/2055		21/12/2062		21/12/2070	
भ्राम	01/06/2041	भद्रि	31/08/2045	उल्क	21/12/2050	सिद्ध	01/05/2057	संक	30/09/2064
भद्रि	21/12/2041	उल्क	02/07/2046	सिद्ध	20/02/2052	संक	21/11/2058	मंग	21/12/2064
उल्क	21/08/2042	सिद्ध	22/06/2047	संक	21/06/2053	मंग	31/01/2059	पिंग	01/06/2065
सिद्ध	01/06/2043	संक	01/08/2048	मंग	21/08/2053	पिंग	22/06/2059	धांय	30/01/2066
संक	21/04/2044	मंग	20/09/2048	पिंग	21/12/2053	धांय	21/01/2060	भ्राम	21/12/2066
मंग	01/06/2044	पिंग	31/12/2048	धांय	21/06/2054	भ्राम	31/10/2060	भद्रि	31/01/2068
पिंग	21/08/2044	धांय	01/06/2049	भ्राम	20/02/2055	भद्रि	21/10/2061	उल्क	01/06/2069
धांय	21/12/2044	भ्राम	21/12/2049	भद्रि	21/12/2055	उल्क	21/12/2062	सिद्ध	21/12/2070

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
21/12/2070		21/12/2071		21/12/2073		21/12/2076		21/12/2080	
21/12/2071		21/12/2073		21/12/2076		21/12/2080		00/00/0000	
मंग	31/12/2070	पिंग	31/01/2072	धांय	22/03/2074	भ्राम	01/06/2077	भद्रि	31/08/2081
पिंग	21/01/2071	धांय	01/04/2072	भ्राम	22/07/2074	भद्रि	21/12/2077	उल्क	02/07/2082
धांय	20/02/2071	भ्राम	21/06/2072	भद्रि	21/12/2074	उल्क	21/08/2078	सिद्ध	22/12/2082
भ्राम	02/04/2071	भद्रि	30/09/2072	उल्क	22/06/2075	सिद्ध	01/06/2079		00/00/0000
भद्रि	22/05/2071	उल्क	30/01/2073	सिद्ध	21/01/2076	संक	21/04/2080		00/00/0000
उल्क	22/07/2071	सिद्ध	21/06/2073	संक	20/09/2076	मंग	01/06/2080		00/00/0000
सिद्ध	01/10/2071	संक	01/12/2073	मंग	21/10/2076	पिंग	21/08/2080		00/00/0000
संक	21/12/2071	मंग	21/12/2073	पिंग	21/12/2076	धांय	21/12/2080		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय	
21/10/2025		21/12/2026		30/09/2028		21/12/2028		01/06/2029	
21/12/2026		30/09/2028		21/12/2028		01/06/2029		30/01/2030	
उल्क	31/12/2025	संक	14/05/2027	मंग	03/10/2028	पिंग	30/12/2028	धांय	21/06/2029
सिद्ध	24/03/2026	मंग	01/06/2027	पिंग	07/10/2028	धांय	12/01/2029	भ्राम	18/07/2029
संक	27/06/2026	पिंग	07/07/2027	धांय	14/10/2028	भ्राम	30/01/2029	भद्रि	21/08/2029
मंग	08/07/2026	धांय	31/08/2027	भ्राम	23/10/2028	भद्रि	22/02/2029	उल्क	01/10/2029
पिंग	01/08/2026	भ्राम	11/11/2027	भद्रि	03/11/2028	उल्क	21/03/2029	सिद्ध	17/11/2029
धांय	06/09/2026	भद्रि	09/02/2028	उल्क	17/11/2028	सिद्ध	21/04/2029	संक	10/01/2030
भ्राम	23/10/2026	उल्क	27/05/2028	सिद्ध	03/12/2028	संक	27/05/2029	मंग	17/01/2030
भद्रि	21/12/2026	सिद्ध	30/09/2028	संक	21/12/2028	मंग	01/06/2029	पिंग	30/01/2030

संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग	
30/01/2030		21/12/2030		31/01/2032		01/06/2033		21/12/2034	
21/12/2030		31/01/2032		01/06/2033		21/12/2034		31/12/2034	
भ्राम	07/03/2030	भद्रि	15/02/2031	उल्क	21/04/2032	सिद्ध	19/09/2033	मंग	21/12/2034
भद्रि	22/04/2030	उल्क	24/04/2031	सिद्ध	25/07/2032	संक	24/01/2034	पिंग	22/12/2034
उल्क	15/06/2030	सिद्ध	12/07/2031	संक	10/11/2032	मंग	08/02/2034	धांय	23/12/2034
सिद्ध	17/08/2030	संक	10/10/2031	मंग	24/11/2032	पिंग	12/03/2034	भ्राम	24/12/2034
संक	28/10/2030	मंग	21/10/2031	पिंग	21/12/2032	धांय	28/04/2034	भद्रि	25/12/2034
मंग	06/11/2030	पिंग	13/11/2031	धांय	30/01/2033	भ्राम	30/06/2034	उल्क	27/12/2034
पिंग	24/11/2030	धांय	17/12/2031	भ्राम	25/03/2033	भद्रि	17/09/2034	सिद्ध	29/12/2034
धांय	21/12/2030	भ्राम	31/01/2032	भद्रि	01/06/2033	उल्क	21/12/2034	संक	31/12/2034

मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क	
31/12/2034		21/01/2035		20/02/2035		02/04/2035		22/05/2035	
21/01/2035		20/02/2035		02/04/2035		22/05/2035		22/07/2035	
पिंग	01/01/2035	धांय	23/01/2035	भ्राम	24/02/2035	भद्रि	09/04/2035	उल्क	01/06/2035
धांय	03/01/2035	भ्राम	26/01/2035	भद्रि	02/03/2035	उल्क	17/04/2035	सिद्ध	13/06/2035
भ्राम	05/01/2035	भद्रि	31/01/2035	उल्क	09/03/2035	सिद्ध	27/04/2035	संक	27/06/2035
भद्रि	08/01/2035	उल्क	05/02/2035	सिद्ध	17/03/2035	संक	08/05/2035	मंग	28/06/2035
उल्क	12/01/2035	सिद्ध	11/02/2035	संक	26/03/2035	मंग	10/05/2035	पिंग	02/07/2035
सिद्ध	15/01/2035	संक	17/02/2035	मंग	27/03/2035	पिंग	12/05/2035	धांय	07/07/2035
संक	20/01/2035	मंग	18/02/2035	पिंग	29/03/2035	धांय	17/05/2035	भ्राम	14/07/2035
मंग	21/01/2035	पिंग	20/02/2035	धांय	02/04/2035	भ्राम	22/05/2035	भद्रि	22/07/2035

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम	
22/07/2035		01/10/2035		21/12/2035		31/01/2036		01/04/2036	
01/10/2035		21/12/2035		31/01/2036		01/04/2036		21/06/2036	
सिद्ध	05/08/2035	संक	19/10/2035	पिंग	24/12/2035	धांय	05/02/2036	भ्राम	10/04/2036
संक	21/08/2035	मंग	21/10/2035	धांय	27/12/2035	भ्राम	12/02/2036	भद्रि	21/04/2036
मंग	23/08/2035	पिंग	26/10/2035	भ्राम	31/12/2035	भद्रि	20/02/2036	उल्क	05/05/2036
पिंग	27/08/2035	धांय	02/11/2035	भद्रि	06/01/2036	उल्क	01/03/2036	सिद्ध	20/05/2036
धांय	02/09/2035	भ्राम	11/11/2035	उल्क	13/01/2036	सिद्ध	13/03/2036	संक	07/06/2036
भ्राम	09/09/2035	भद्रि	22/11/2035	सिद्ध	21/01/2036	संक	27/03/2036	मंग	10/06/2036
भद्रि	19/09/2035	उल्क	06/12/2035	संक	30/01/2036	मंग	28/03/2036	पिंग	14/06/2036
उल्क	01/10/2035	सिद्ध	21/12/2035	मंग	31/01/2036	पिंग	01/04/2036	धांय	21/06/2036

पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग	
21/06/2036		30/09/2036		30/01/2037		21/06/2037		01/12/2037	
30/09/2036		30/01/2037		21/06/2037		01/12/2037		21/12/2037	
भद्रि	05/07/2036	उल्क	21/10/2036	सिद्ध	27/02/2037	संक	27/07/2037	मंग	01/12/2037
उल्क	22/07/2036	सिद्ध	13/11/2036	संक	30/03/2037	मंग	01/08/2037	पिंग	02/12/2037
सिद्ध	11/08/2036	संक	10/12/2036	मंग	03/04/2037	पिंग	10/08/2037	धांय	04/12/2037
संक	02/09/2036	मंग	14/12/2036	पिंग	11/04/2037	धांय	23/08/2037	भ्राम	06/12/2037
मंग	05/09/2036	पिंग	21/12/2036	धांय	23/04/2037	भ्राम	10/09/2037	भद्रि	09/12/2037
पिंग	11/09/2036	धांय	31/12/2036	भ्राम	09/05/2037	भद्रि	03/10/2037	उल्क	12/12/2037
धांय	19/09/2036	भ्राम	13/01/2037	भद्रि	29/05/2037	उल्क	30/10/2037	सिद्ध	16/12/2037
भ्राम	30/09/2036	भद्रि	30/01/2037	उल्क	21/06/2037	सिद्ध	01/12/2037	संक	21/12/2037

धांय - धांय		धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध	
21/12/2037		22/03/2038		22/07/2038		21/12/2038		22/06/2039	
22/03/2038		22/07/2038		21/12/2038		22/06/2039		21/01/2040	
धांय	28/12/2037	भ्राम	05/04/2038	भद्रि	12/08/2038	उल्क	21/01/2039	सिद्ध	02/08/2039
भ्राम	08/01/2038	भद्रि	22/04/2038	उल्क	06/09/2038	सिद्ध	25/02/2039	संक	18/09/2039
भद्रि	20/01/2038	उल्क	12/05/2038	सिद्ध	06/10/2038	संक	07/04/2039	मंग	24/09/2039
उल्क	04/02/2038	सिद्ध	05/06/2038	संक	09/11/2038	मंग	12/04/2039	पिंग	06/10/2039
सिद्ध	22/02/2038	संक	02/07/2038	मंग	13/11/2038	पिंग	22/04/2039	धांय	24/10/2039
संक	15/03/2038	मंग	05/07/2038	पिंग	21/11/2038	धांय	07/05/2039	भ्राम	17/11/2039
मंग	17/03/2038	पिंग	12/07/2038	धांय	04/12/2038	भ्राम	27/05/2039	भद्रि	16/12/2039
पिंग	22/03/2038	धांय	22/07/2038	भ्राम	21/12/2038	भद्रि	22/06/2039	उल्क	21/01/2040

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 19 वर्ष 10 मास 14 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : उ०भाद्रपद - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
22/12/1974		06/11/1994		06/11/1999		05/11/2008		05/11/2012	
06/11/1994		06/11/1999		05/11/2008		05/11/2012		05/11/2016	
कर्क	13/01/1979	सिंह	21/02/1995	कन्या	19/10/2000	कुंभ	13/01/2009	मक	13/01/2013
सिंह	09/04/1980	कन्या	02/09/1995	कुंभ	23/03/2001	मक	23/03/2009	धनु	04/07/2013
कन्या	30/06/1982	कुंभ	27/11/1995	मक	24/08/2001	धनु	11/09/2009	मेष	01/11/2013
कुंभ	26/06/1983	मक	21/02/1996	धनु	15/09/2002	मेष	09/01/2010	वृष	03/08/2014
मक	21/06/1984	धनु	23/09/1996	मेष	13/06/2003	वृष	11/10/2010	मिथु	05/01/2015
धनु	10/12/1986	मेष	21/02/1997	वृष	21/02/2005	मिथु	15/03/2011	कर्क	01/01/2016
मेष	02/09/1988	वृष	30/01/1998	मिथु	04/02/2006	कर्क	10/03/2012	सिंह	27/03/2016
वृष	16/08/1992	मिथु	12/08/1998	कर्क	26/04/2008	सिंह	03/06/2012	कन्या	28/08/2016
मिथु	06/11/1994	कर्क	06/11/1999	सिंह	05/11/2008	कन्या	05/11/2012	कुंभ	05/11/2016

धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
05/11/2016		06/11/2026		05/11/2033		05/11/2049		06/11/2058	
06/11/2026		05/11/2033		05/11/2049		06/11/2058		00/00/0000	
धनु	09/01/2018	मेष	04/06/2027	वृष	09/11/2036	मिथु	19/10/2050	कर्क	22/12/2059
मेष	06/11/2018	वृष	27/09/2028	मिथु	21/07/2038	कर्क	09/01/2053		00/00/0000
वृष	23/09/2020	मिथु	25/06/2029	कर्क	04/07/2042	सिंह	21/07/2053		00/00/0000
मिथु	15/10/2021	कर्क	19/03/2031	सिंह	13/06/2043	कन्या	04/07/2054		00/00/0000
कर्क	04/04/2024	सिंह	16/08/2031	कन्या	21/02/2045	कुंभ	06/12/2054		00/00/0000
सिंह	05/11/2024	कन्या	13/05/2032	कुंभ	23/11/2045	मक	09/05/2055		00/00/0000
कन्या	27/11/2025	कुंभ	10/09/2032	मक	25/08/2046	धनु	30/05/2056		00/00/0000
कुंभ	18/05/2026	मक	09/01/2033	धनु	12/07/2048	मेष	25/02/2057		00/00/0000
मक	06/11/2026	धनु	05/11/2033	मेष	05/11/2049	वृष	06/11/2058		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

धनु - कुंभ		धनु - मक		मेष - मेष		मेष - वृष		मेष - मिथु	
27/11/2025		18/05/2026		06/11/2026		04/06/2027		27/09/2028	
18/05/2026		06/11/2026		04/06/2027		27/09/2028		25/06/2029	
कुंभ	05/12/2025	मक	26/05/2026	मेष	23/11/2026	वृष	03/09/2027	मिथु	26/10/2028
मक	13/12/2025	धनु	15/06/2026	वृष	02/01/2027	मिथु	24/10/2027	कर्क	01/01/2029
धनु	02/01/2026	मेष	29/06/2026	मिथु	24/01/2027	कर्क	20/02/2028	सिंह	17/01/2029
मेष	16/01/2026	वृष	01/08/2026	कर्क	17/03/2027	सिंह	19/03/2028	कन्या	15/02/2029
वृष	18/02/2026	मिथु	19/08/2026	सिंह	29/03/2027	कन्या	09/05/2028	कुंभ	27/02/2029
मिथु	08/03/2026	कर्क	30/09/2026	कन्या	21/04/2027	कुंभ	01/06/2028	मक	12/03/2029
कर्क	19/04/2026	सिंह	10/10/2026	कुंभ	01/05/2027	मक	23/06/2028	धनु	13/04/2029
सिंह	30/04/2026	कन्या	29/10/2026	मक	10/05/2027	धनु	19/08/2028	मेष	05/05/2029
कन्या	18/05/2026	कुंभ	06/11/2026	धनु	04/06/2027	मेष	27/09/2028	वृष	25/06/2029

मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - कन्या		मेष - कुंभ		मेष - मक	
25/06/2029		19/03/2031		16/08/2031		13/05/2032		10/09/2032	
19/03/2031		16/08/2031		13/05/2032		10/09/2032		09/01/2033	
कर्क	28/11/2029	सिंह	28/03/2031	कन्या	14/09/2031	कुंभ	19/05/2032	मक	16/09/2032
सिंह	04/01/2030	कन्या	13/04/2031	कुंभ	27/09/2031	मक	24/05/2032	धनु	30/09/2032
कन्या	12/03/2030	कुंभ	20/04/2031	मक	09/10/2031	धनु	07/06/2032	मेष	10/10/2032
कुंभ	11/04/2030	मक	27/04/2031	धनु	10/11/2031	मेष	17/06/2032	वृष	02/11/2032
मक	11/05/2030	धनु	15/05/2031	मेष	03/12/2031	वृष	10/07/2032	मिथु	14/11/2032
धनु	24/07/2030	मेष	27/05/2031	वृष	23/01/2032	मिथु	23/07/2032	कर्क	14/12/2032
मेष	14/09/2030	वृष	24/06/2031	मिथु	20/02/2032	कर्क	21/08/2032	सिंह	21/12/2032
वृष	11/01/2031	मिथु	10/07/2031	कर्क	27/04/2032	सिंह	29/08/2032	कन्या	03/01/2033
मिथु	19/03/2031	कर्क	16/08/2031	सिंह	13/05/2032	कन्या	10/09/2032	कुंभ	09/01/2033

मेष - धनु		वृष - वृष		वृष - मिथु		वृष - कर्क		वृष - सिंह	
09/01/2033		05/11/2033		09/11/2036		21/07/2038		04/07/2042	
05/11/2033		09/11/2036		21/07/2038		04/07/2042		13/06/2043	
धनु	13/02/2033	वृष	31/05/2034	मिथु	14/01/2037	कर्क	13/07/2039	सिंह	24/07/2042
मेष	10/03/2033	मिथु	25/09/2034	कर्क	16/06/2037	सिंह	06/10/2039	कन्या	30/08/2042
वृष	05/05/2033	कर्क	24/06/2035	सिंह	22/07/2037	कन्या	07/03/2040	कुंभ	15/09/2042
मिथु	06/06/2033	सिंह	27/08/2035	कन्या	26/09/2037	कुंभ	14/05/2040	मक	01/10/2042
कर्क	20/08/2033	कन्या	22/12/2035	कुंभ	25/10/2037	मक	21/07/2040	धनु	10/11/2042
सिंह	06/09/2033	कुंभ	12/02/2036	मक	23/11/2037	धनु	07/01/2041	मेष	09/12/2042
कन्या	08/10/2033	मक	03/04/2036	धनु	04/02/2038	मेष	05/05/2041	वृष	11/02/2043
कुंभ	22/10/2033	धनु	11/08/2036	मेष	27/03/2038	वृष	01/02/2042	मिथु	20/03/2043
मक	05/11/2033	मेष	09/11/2036	वृष	21/07/2038	मिथु	04/07/2042	कर्क	13/06/2043

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कन्या		वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - मेष	
13/06/2043		21/02/2045		23/11/2045		25/08/2046		12/07/2048	
21/02/2045		23/11/2045		25/08/2046		12/07/2048		05/11/2049	
कन्या	17/08/2043	कुंभ	06/03/2045	मक	06/12/2045	धनु	14/11/2046	मेष	21/08/2048
कुंभ	15/09/2043	मक	18/03/2045	धनु	07/01/2046	मेष	09/01/2047	वृष	19/11/2048
मक	15/10/2043	धनु	20/04/2045	मेष	30/01/2046	वृष	19/05/2047	मिथु	09/01/2049
धनु	26/12/2043	मेष	12/05/2045	वृष	22/03/2046	मिथु	30/07/2047	कर्क	08/05/2049
मेष	15/02/2044	वृष	03/07/2045	मिथु	20/04/2046	कर्क	16/01/2048	सिंह	06/06/2049
वृष	11/06/2044	मिथु	01/08/2045	कर्क	27/06/2046	सिंह	26/02/2048	कन्या	27/07/2049
मिथु	15/08/2044	कर्क	08/10/2045	सिंह	14/07/2046	कन्या	08/05/2048	कुंभ	18/08/2049
कर्क	15/01/2045	सिंह	24/10/2045	कन्या	12/08/2046	कुंभ	10/06/2048	मक	10/09/2049
सिंह	21/02/2045	कन्या	23/11/2045	कुंभ	25/08/2046	मक	12/07/2048	धनु	05/11/2049

मिथु - मिथु		मिथु - कर्क		मिथु - सिंह		मिथु - कन्या		मिथु - कुंभ	
05/11/2049		19/10/2050		09/01/2053		21/07/2053		04/07/2054	
19/10/2050		09/01/2053		21/07/2053		04/07/2054		06/12/2054	
मिथु	12/12/2049	कर्क	08/05/2051	सिंह	20/01/2053	कन्या	27/08/2053	कुंभ	11/07/2054
कर्क	08/03/2050	सिंह	25/06/2051	कन्या	09/02/2053	कुंभ	12/09/2053	मक	19/07/2054
सिंह	29/03/2050	कन्या	19/09/2051	कुंभ	19/02/2053	मक	29/09/2053	धनु	06/08/2054
कन्या	05/05/2050	कुंभ	27/10/2051	मक	28/02/2053	धनु	09/11/2053	मेष	19/08/2054
कुंभ	21/05/2050	मक	04/12/2051	धनु	22/03/2053	मेष	07/12/2053	वृष	17/09/2054
मक	06/06/2050	धनु	09/03/2052	मेष	07/04/2053	वृष	11/02/2054	मिथु	03/10/2054
धनु	17/07/2050	मेष	15/05/2052	वृष	14/05/2053	मिथु	20/03/2054	कर्क	10/11/2054
मेष	15/08/2050	वृष	15/10/2052	मिथु	03/06/2053	कर्क	14/06/2054	सिंह	19/11/2054
वृष	19/10/2050	मिथु	09/01/2053	कर्क	21/07/2053	सिंह	04/07/2054	कन्या	06/12/2054

मिथु - मक		मिथु - धनु		मिथु - मेष		मिथु - वृष		कर्क - कर्क	
06/12/2054		09/05/2055		30/05/2056		25/02/2057		06/11/2058	
09/05/2055		30/05/2056		25/02/2057		06/11/2058		00/00/0000	
मक	13/12/2054	धनु	24/06/2055	मेष	21/06/2056	वृष	21/06/2057	कर्क	22/12/2059
धनु	31/12/2054	मेष	26/07/2055	वृष	11/08/2056	मिथु	26/08/2057		00/00/0000
मेष	13/01/2055	वृष	07/10/2055	मिथु	09/09/2056	कर्क	26/01/2058		00/00/0000
वृष	11/02/2055	मिथु	17/11/2055	कर्क	15/11/2056	सिंह	03/03/2058		00/00/0000
मिथु	27/02/2055	कर्क	20/02/2056	सिंह	01/12/2056	कन्या	08/05/2058		00/00/0000
कर्क	07/04/2055	सिंह	14/03/2056	कन्या	30/12/2056	कुंभ	06/06/2058		00/00/0000
सिंह	16/04/2055	कन्या	24/04/2056	कुंभ	11/01/2057	मक	05/07/2058		00/00/0000
कन्या	02/05/2055	कुंभ	12/05/2056	मक	24/01/2057	धनु	16/09/2058		00/00/0000
कुंभ	09/05/2055	मक	30/05/2056	धनु	25/02/2057	मेष	06/11/2058		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृश्चिक 6 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृश्चिक 6 वर्ष	
22/12/1974	
21/12/1980	
तुला	22/06/1975
कन्या	22/12/1975
सिंह	22/06/1976
कर्क	21/12/1976
मिथु	22/06/1977
वृष	22/12/1977
मेष	22/06/1978
मीन	22/12/1978
कुंभ	22/06/1979
मक	22/12/1979
धनु	22/06/1980
वृश्चि	21/12/1980

तुला 2 वर्ष	
21/12/1980	
22/12/1982	
वृश्चि	20/02/1981
धनु	22/04/1981
मक	22/06/1981
कुंभ	22/08/1981
मीन	22/10/1981
मेष	22/12/1981
वृष	20/02/1982
मिथु	22/04/1982
कर्क	22/06/1982
सिंह	22/08/1982
कन्या	22/10/1982
तुला	22/12/1982

कन्या 9 वर्ष	
22/12/1982	
22/12/1991	
तुला	22/09/1983
वृश्चि	22/06/1984
धनु	23/03/1985
मक	22/12/1985
कुंभ	21/09/1986
मीन	22/06/1987
मेष	22/03/1988
वृष	21/12/1988
मिथु	21/09/1989
कर्क	22/06/1990
सिंह	23/03/1991
कन्या	22/12/1991

सिंह 8 वर्ष	
22/12/1991	
22/12/1999	
कन्या	22/08/1992
तुला	22/04/1993
वृश्चि	22/12/1993
धनु	22/08/1994
मक	23/04/1995
कुंभ	22/12/1995
मीन	22/08/1996
मेष	22/04/1997
वृष	22/12/1997
मिथु	22/08/1998
कर्क	23/04/1999
सिंह	22/12/1999

कर्क 4 वर्ष	
22/12/1999	
22/12/2003	
मिथु	22/04/2000
वृष	22/08/2000
मेष	21/12/2000
मीन	22/04/2001
कुंभ	22/08/2001
मक	22/12/2001
धनु	22/04/2002
वृश्चि	22/08/2002
तुला	22/12/2002
कन्या	23/04/2003
सिंह	22/08/2003
कर्क	22/12/2003

मिथुन 6 वर्ष	
22/12/2003	
22/12/2009	
वृष	22/06/2004
मेष	21/12/2004
मीन	22/06/2005
कुंभ	22/12/2005
मक	22/06/2006
धनु	22/12/2006
वृश्चि	22/06/2007
तुला	22/12/2007
कन्या	22/06/2008
सिंह	21/12/2008
कर्क	22/06/2009
मिथु	22/12/2009

वृष 7 वर्ष	
22/12/2009	
21/12/2016	
मेष	23/07/2010
मीन	21/02/2011
कुंभ	22/09/2011
मक	22/04/2012
धनु	21/11/2012
वृश्चि	22/06/2013
तुला	21/01/2014
कन्या	22/08/2014
सिंह	23/03/2015
कर्क	22/10/2015
मिथु	22/05/2016
वृष	21/12/2016

मेष 7 वर्ष	
21/12/2016	
22/12/2023	
वृष	22/07/2017
मिथु	20/02/2018
कर्क	21/09/2018
सिंह	23/04/2019
कन्या	22/11/2019
तुला	22/06/2020
वृश्चि	21/01/2021
धनु	22/08/2021
मक	23/03/2022
कुंभ	22/10/2022
मीन	23/05/2023
मेष	22/12/2023

मीन 1 वर्ष	
22/12/2023	
21/12/2024	
मेष	21/01/2024
वृष	21/02/2024
मिथु	22/03/2024
कर्क	22/04/2024
सिंह	22/05/2024
कन्या	22/06/2024
तुला	22/07/2024
वृश्चि	22/08/2024
धनु	21/09/2024
मक	21/10/2024
कुंभ	21/11/2024
मीन	21/12/2024

कुम्भ 3 वर्ष	
21/12/2024	
22/12/2027	
मीन	23/03/2025
मेष	22/06/2025
वृष	21/09/2025
मिथु	22/12/2025
कर्क	23/03/2026
सिंह	22/06/2026
कन्या	21/09/2026
तुला	22/12/2026
वृश्चि	23/03/2027
धनु	22/06/2027
मक	22/09/2027
कुंभ	22/12/2027

मकर 7 वर्ष	
22/12/2027	
22/12/2034	
धनु	22/07/2028
वृश्चि	20/02/2029
तुला	21/09/2029
कन्या	22/04/2030
सिंह	21/11/2030
कर्क	22/06/2031
मिथु	21/01/2032
वृष	22/08/2032
मेष	23/03/2033
मीन	22/10/2033
कुंभ	23/05/2034
मक	22/12/2034

धनु 2 वर्ष	
22/12/2034	
21/12/2036	
वृश्चि	21/02/2035
तुला	23/04/2035
कन्या	22/06/2035
सिंह	22/08/2035
कर्क	22/10/2035
मिथु	22/12/2035
वृष	21/02/2036
मेष	22/04/2036
मीन	22/06/2036
कुंभ	22/08/2036
मक	21/10/2036
धनु	21/12/2036

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - कर्क		कुंभ - सिंह		कुंभ - कन्या		कुंभ - तुला		कुंभ - वृश्चि	
22/12/2025		23/03/2026		22/06/2026		21/09/2026		22/12/2026	
23/03/2026		22/06/2026		21/09/2026		22/12/2026		23/03/2027	
मिथु	29/12/2025	कन्या	30/03/2026	तुला	30/06/2026	वृश्चि	29/09/2026	तुला	29/12/2026
वृष	06/01/2026	तुला	07/04/2026	वृश्चि	07/07/2026	धनु	07/10/2026	कन्या	06/01/2027
मेष	13/01/2026	वृश्चि	15/04/2026	धनु	15/07/2026	मक	14/10/2026	सिंह	14/01/2027
मीन	21/01/2026	धनु	22/04/2026	मक	23/07/2026	कुंभ	22/10/2026	कर्क	21/01/2027
कुंभ	29/01/2026	मक	30/04/2026	कुंभ	30/07/2026	मीन	30/10/2026	मिथु	29/01/2027
मक	05/02/2026	कुंभ	07/05/2026	मीन	07/08/2026	मेष	06/11/2026	वृष	05/02/2027
धनु	13/02/2026	मीन	15/05/2026	मेष	14/08/2026	वृष	14/11/2026	मेष	13/02/2027
वृश्चि	20/02/2026	मेष	23/05/2026	वृष	22/08/2026	मिथु	21/11/2026	मीन	21/02/2027
तुला	28/02/2026	वृष	30/05/2026	मिथु	30/08/2026	कर्क	29/11/2026	कुंभ	28/02/2027
कन्या	08/03/2026	मिथु	07/06/2026	कर्क	06/09/2026	सिंह	07/12/2026	मक	08/03/2027
सिंह	15/03/2026	कर्क	15/06/2026	सिंह	14/09/2026	कन्या	14/12/2026	धनु	15/03/2027
कर्क	23/03/2026	सिंह	22/06/2026	कन्या	21/09/2026	तुला	22/12/2026	वृश्चि	23/03/2027

कुंभ - धनु		कुंभ - मक		कुंभ - कुंभ		मक - धनु		मक - वृश्चि	
23/03/2027		22/06/2027		22/09/2027		22/12/2027		22/07/2028	
22/06/2027		22/09/2027		22/12/2027		22/07/2028		20/02/2029	
वृश्चि	31/03/2027	धनु	30/06/2027	मीन	29/09/2027	वृश्चि	09/01/2028	तुला	09/08/2028
तुला	07/04/2027	वृश्चि	08/07/2027	मेष	07/10/2027	तुला	27/01/2028	कन्या	27/08/2028
कन्या	15/04/2027	तुला	15/07/2027	वृष	15/10/2027	कन्या	13/02/2028	सिंह	13/09/2028
सिंह	23/04/2027	कन्या	23/07/2027	मिथु	22/10/2027	सिंह	02/03/2028	कर्क	01/10/2028
कर्क	30/04/2027	सिंह	30/07/2027	कर्क	30/10/2027	कर्क	20/03/2028	मिथु	19/10/2028
मिथु	08/05/2027	कर्क	07/08/2027	सिंह	06/11/2027	मिथु	07/04/2028	वृष	06/11/2028
वृष	15/05/2027	मिथु	15/08/2027	कन्या	14/11/2027	वृष	24/04/2028	मेष	23/11/2028
मेष	23/05/2027	वृष	22/08/2027	तुला	22/11/2027	मेष	12/05/2028	मीन	11/12/2028
मीन	31/05/2027	मेष	30/08/2027	वृश्चि	29/11/2027	मीन	30/05/2028	कुंभ	29/12/2028
कुंभ	07/06/2027	मीन	06/09/2027	धनु	07/12/2027	कुंभ	17/06/2028	मक	16/01/2029
मक	15/06/2027	कुंभ	14/09/2027	मक	14/12/2027	मक	04/07/2028	धनु	02/02/2029
धनु	22/06/2027	मक	22/09/2027	कुंभ	22/12/2027	धनु	22/07/2028	वृश्चि	20/02/2029

मक - तुला		मक - कन्या		मक - सिंह		मक - कर्क		मक - मिथु	
20/02/2029		21/09/2029		22/04/2030		21/11/2030		22/06/2031	
21/09/2029		22/04/2030		21/11/2030		22/06/2031		21/01/2032	
वृश्चि	10/03/2029	तुला	09/10/2029	कन्या	10/05/2030	मिथु	09/12/2030	वृष	10/07/2031
धनु	28/03/2029	वृश्चि	27/10/2029	तुला	28/05/2030	वृष	27/12/2030	मेष	28/07/2031
मक	14/04/2029	धनु	13/11/2029	वृश्चि	15/06/2030	मेष	14/01/2031	मीन	15/08/2031
कुंभ	02/05/2029	मक	01/12/2029	धनु	02/07/2030	मीन	31/01/2031	कुंभ	01/09/2031
मीन	20/05/2029	कुंभ	19/12/2029	मक	20/07/2030	कुंभ	18/02/2031	मक	19/09/2031
मेष	07/06/2029	मीन	06/01/2030	कुंभ	07/08/2030	मक	08/03/2031	धनु	07/10/2031
वृष	24/06/2029	मेष	23/01/2030	मीन	25/08/2030	धनु	26/03/2031	वृश्चि	25/10/2031
मिथु	12/07/2029	वृष	10/02/2030	मेष	11/09/2030	वृश्चि	12/04/2031	तुला	11/11/2031
कर्क	30/07/2029	मिथु	28/02/2030	वृष	29/09/2030	तुला	30/04/2031	कन्या	29/11/2031
सिंह	17/08/2029	कर्क	18/03/2030	मिथु	17/10/2030	कन्या	18/05/2031	सिंह	17/12/2031
कन्या	03/09/2029	सिंह	05/04/2030	कर्क	04/11/2030	सिंह	05/06/2031	कर्क	04/01/2032
तुला	21/09/2029	कन्या	22/04/2030	सिंह	21/11/2030	कर्क	22/06/2031	मिथु	21/01/2032

चर दशा - प्रत्यन्तर

मक - वृष		मक - मेष		मक - मीन		मक - कुंभ		मक - मक	
21/01/2032		22/08/2032		23/03/2033		22/10/2033		23/05/2034	
22/08/2032		23/03/2033		22/10/2033		23/05/2034		22/12/2034	
मेष	08/02/2032	वृष	08/09/2032	मेष	09/04/2033	मीन	08/11/2033	धनु	09/06/2034
मीन	26/02/2032	मिथु	26/09/2032	वृष	27/04/2033	मेष	26/11/2033	वृश्चि	27/06/2034
कुंभ	15/03/2032	कर्क	14/10/2032	मिथु	15/05/2033	वृष	14/12/2033	तुला	15/07/2034
मक	01/04/2032	सिंह	01/11/2032	कर्क	02/06/2033	मिथु	01/01/2034	कन्या	02/08/2034
धनु	19/04/2032	कन्या	18/11/2032	सिंह	19/06/2033	कर्क	18/01/2034	सिंह	19/08/2034
वृश्चि	07/05/2032	तुला	06/12/2032	कन्या	07/07/2033	सिंह	05/02/2034	कर्क	06/09/2034
तुला	25/05/2032	वृश्चि	24/12/2032	तुला	25/07/2033	कन्या	23/02/2034	मिथु	24/09/2034
कन्या	11/06/2032	धनु	11/01/2033	वृश्चि	12/08/2033	तुला	13/03/2034	वृष	12/10/2034
सिंह	29/06/2032	मक	28/01/2033	धनु	29/08/2033	वृश्चि	30/03/2034	मेष	30/10/2034
कर्क	17/07/2032	कुंभ	15/02/2033	मक	16/09/2033	धनु	17/04/2034	मीन	16/11/2034
मिथु	04/08/2032	मीन	05/03/2033	कुंभ	04/10/2033	मक	05/05/2034	कुंभ	04/12/2034
वृष	22/08/2032	मेष	23/03/2033	मीन	22/10/2033	कुंभ	23/05/2034	मक	22/12/2034

धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह		धनु - कर्क	
22/12/2034		21/02/2035		23/04/2035		22/06/2035		22/08/2035	
21/02/2035		23/04/2035		22/06/2035		22/08/2035		22/10/2035	
तुला	27/12/2034	वृश्चि	26/02/2035	तुला	28/04/2035	कन्या	27/06/2035	मिथु	27/08/2035
कन्या	01/01/2035	धनु	03/03/2035	वृश्चि	03/05/2035	तुला	03/07/2035	वृष	01/09/2035
सिंह	06/01/2035	मक	08/03/2035	धनु	08/05/2035	वृश्चि	08/07/2035	मेष	06/09/2035
कर्क	11/01/2035	कुंभ	13/03/2035	मक	13/05/2035	धनु	13/07/2035	मीन	12/09/2035
मिथु	16/01/2035	मीन	18/03/2035	कुंभ	18/05/2035	मक	18/07/2035	कुंभ	17/09/2035
वृष	21/01/2035	मेष	23/03/2035	मीन	23/05/2035	कुंभ	23/07/2035	मक	22/09/2035
मेष	26/01/2035	वृष	28/03/2035	मेष	28/05/2035	मीन	28/07/2035	धनु	27/09/2035
मीन	31/01/2035	मिथु	02/04/2035	वृष	02/06/2035	मेष	02/08/2035	वृश्चि	02/10/2035
कुंभ	05/02/2035	कर्क	07/04/2035	मिथु	07/06/2035	वृष	07/08/2035	तुला	07/10/2035
मक	10/02/2035	सिंह	12/04/2035	कर्क	12/06/2035	मिथु	12/08/2035	कन्या	12/10/2035
धनु	16/02/2035	कन्या	17/04/2035	सिंह	17/06/2035	कर्क	17/08/2035	सिंह	17/10/2035
वृश्चि	21/02/2035	तुला	23/04/2035	कन्या	22/06/2035	सिंह	22/08/2035	कर्क	22/10/2035

धनु - मिथु		धनु - वृष		धनु - मेष		धनु - मीन		धनु - कुंभ	
22/10/2035		22/12/2035		21/02/2036		22/04/2036		22/06/2036	
22/12/2035		21/02/2036		22/04/2036		22/06/2036		22/08/2036	
वृष	27/10/2035	मेष	27/12/2035	वृष	26/02/2036	मेष	27/04/2036	मीन	27/06/2036
मेष	01/11/2035	मीन	01/01/2036	मिथु	02/03/2036	वृष	02/05/2036	मेष	02/07/2036
मीन	06/11/2035	कुंभ	06/01/2036	कर्क	07/03/2036	मिथु	07/05/2036	वृष	07/07/2036
कुंभ	11/11/2035	मक	11/01/2036	सिंह	12/03/2036	कर्क	12/05/2036	मिथु	12/07/2036
मक	17/11/2035	धनु	16/01/2036	कन्या	17/03/2036	सिंह	17/05/2036	कर्क	17/07/2036
धनु	22/11/2035	वृश्चि	21/01/2036	तुला	22/03/2036	कन्या	22/05/2036	सिंह	22/07/2036
वृश्चि	27/11/2035	तुला	27/01/2036	वृश्चि	27/03/2036	तुला	27/05/2036	कन्या	27/07/2036
तुला	02/12/2035	कन्या	01/02/2036	धनु	01/04/2036	वृश्चि	01/06/2036	तुला	01/08/2036
कन्या	07/12/2035	सिंह	06/02/2036	मक	07/04/2036	धनु	06/06/2036	वृश्चि	06/08/2036
सिंह	12/12/2035	कर्क	11/02/2036	कुंभ	12/04/2036	मक	11/06/2036	धनु	11/08/2036
कर्क	17/12/2035	मिथु	16/02/2036	मीन	17/04/2036	कुंभ	17/06/2036	मक	16/08/2036
मिथु	22/12/2035	वृष	21/02/2036	मेष	22/04/2036	मीन	22/06/2036	कुंभ	22/08/2036

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	91%	सुख, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	87%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	81%	सन्तति सुख, भाग्योदय
गोमेद	राहु	78%	स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	72%	धन, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	61%	दम्पति, धन
नीलम	शनि	34%	दुर्घटना, पराक्रम हानि, ग्रह कलेश
पन्ना	बुध	19%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	6%	धन हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय

रत्न की शुभता

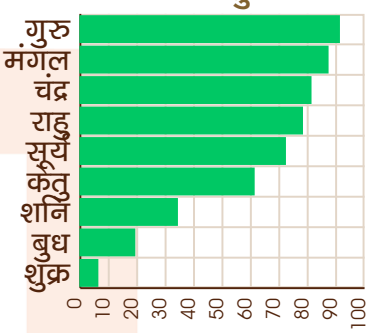

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	14/05/1986	59%	69%	75%	31%	91%	19%	55%	84%	47%
बुध	14/05/2003	78%	69%	87%	44%	91%	19%	34%	78%	61%
केतु	14/05/2010	59%	69%	93%	19%	91%	19%	9%	66%	73%
शुक्र	14/05/2030	59%	69%	87%	31%	91%	31%	47%	84%	67%
सूर्य	14/05/2036	84%	88%	93%	19%	97%	0%	9%	66%	47%
चंद्र	14/05/2046	78%	94%	87%	31%	91%	6%	34%	66%	47%
मंगल	14/05/2053	78%	88%	100%	0%	97%	6%	34%	66%	67%
राहु	14/05/2071	59%	69%	75%	19%	91%	19%	47%	91%	47%
गुरु	14/05/2087	78%	88%	93%	0%	100%	0%	34%	78%	61%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पुखराज, मूंगा, मोती व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मोती आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए माणिक्य एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से

विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण से आप बुद्धिमानी से संपति की प्राप्ति करेंगे। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठजनों का सहयोग प्राप्त होगा। यह रत्न आपको महत्वाकांक्षी और शुभकर्म करने वाला बनायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आप यशस्वी और अपने समाज के माननीय व्यक्तियों में गिने जायेंगे। पुखराज आपको उद्यमी कार्यरत और उद्योगी बनायेगा। आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। आपको राजकीय या सरकार द्वारा प्रदत्त घर की प्राप्ति होगी। आप गुरु भक्ति को महत्व देंगे। माता का सुख-स्नेह मिलेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते है। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते है। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार, आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रख सकते है। यह रत्न आपको पराक्रमी बनाये रखेगा और आपके साहस भाव को भी बढ़ायेगा। मूंगा रत्न आपके आत्मबल को ऊंच रख आपको कठिन से कठिन कार्य करने का सामथ्र्य देगा। समाज में आपको सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

मंगल अपनी पूर्ण दृष्टि से चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। इसलिए मूंगा रत्न आपके लिए भूमि एवं वाहन सुख प्राप्त करने में सहयोगी होगा। इस रत्न को धारण करने से आपके आत्मविश्वास भाव में वृद्धि होगी। भूमि, भवन क्रय-विक्रय में सहयोग लाभ प्राप्त होगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आपका रोगों से बचाव हो सकता है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने व्यक्तित्व को बेहतर कर सकते है। यह रत्न आपके क्रोध भाव में कमी कर आपको विनम्र बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी ऊर्जा शक्ति, जोश, उत्साह, साहस तथा पहल क्षमता का विकास हो सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए षष्ठेश का रत्न भी होने के कारण आपको रोग, ऋण और कोर्ट कचहरी के मामलों में मनोकूल सफलता दे सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको खुशमिजाज बनाएगा। आप मनोरंजन और सुख सुविधाओं की तरफ आकृष्ट होंगे और इन्हें पाने का प्रयास भी करेंगे। रत्न की शुभता से आपकी संतान बहुत अधिक संतुष्ट और प्रसन्नता देने वाले साबित होगी। गुप्त विद्याओं और धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि जागृत होगी। दान-पुण्य में आप की सहभागिता बनेंगी। मनोरंजन, खेल और कला से आपका गहरा लगाव रहेगा। मोती रत्न आपका भाग्योदय करेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई है वो फिर से शुरु हो सकती है। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः

काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे है जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य आपको संपत्तिवान, भाग्यवान एवं कुटुंब प्रेमी बनायेगा। माणिक्य रत्न के शुभत्व से आपके लिए धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। यह रत्न आपको आत्मनिर्भर रहने में सहयोग करेगा। सरकारी कार्यों में सफलता देगा। हड्डियों से जुड़े रोगो से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से सूर्य की शुभता बढ़ती है। तथा पीड़ा कम होती है। इसलिए सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना अनुकूल रहेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। आजीविका क्षेत्र को प्रबल करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य सुख दे सकता है। रत्न शुभता से कार्यक्षेत्र में आपको उच्च सम्मानित पद, आधिकारिक शक्तियां, प्रशासनिक कुशलता की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको व्यवसाय में सफलता भी देगा। माणिक्य रत्न की शुभता से आपके अपने पिता से संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न के प्रभाव से आप किसी सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है। सरकारी विभागों से जुड़े कार्य रत्न शुभता से शीघ्र पूरे हो सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु वृष राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी शुक्र दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व

सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। तृतीयेश एवं चतुर्थेश शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके सुखों में कमी कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर शिक्षा अपूर्ण होने पर भी आप धन कमाने की ओर प्रेरित हो सकते है। नीलम रत्न प्रभाव से आप मन्द गति से उन्नतिशील, पराक्रमी, निर्दयी, खचीले, अविश्वासी एवं बन्धु पीड़ा से ग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको उच्चस्तरीय लोगों से मेलि-मलाप के सुयोगों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपका जीवन उथल-पुथल युक्त हो सकता है। यह रत्न आपमें विश्वासहीनता दे सकता है। तथा रत्न के प्रतिकूल प्रभाव से आपका जीवन संकटमय हो सकता है। साथ ही इसके कारण समाज में आपका सम्मान कम हो सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न मोती धारण करने से आपको शिक्षा, बुद्धि विकास, वक्तव्य और शास्त्रीय शोध विषयों में दिक्कतें आ सकती है। सांपत्तिक स्थिति में हानि हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से शेयर बाजार में आपका हानि से सामना हो सकता है। रत्न प्रभाव से बैंक कार्य आपकी परेशानी की वजह बन सकते है। बैंक कारोबार में हानि हो सकती है। सरकारी वसूली और टैक्स इत्यादि आपको सरकारी दंड दे सकते है। आपकी वाणी में कडवाहट, शिक्षा में व्यवधान एवं चिड़चिड़ेपन की स्थिति बन सकती है। रत्न पहनने पर शत्रु आपकी परेशानी बढ़ा सकते है। गलत परामर्श के कारण जोखिम भरा निर्णय लेने से आपको हानि हो सकती है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते है। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्तियों को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्तियों में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंड़ली में शुक्र दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः हीरा रत्न धारण करने पर आपको नवीन धंधें आरम्भ करने में दिक्कतें बनी रहेंगी। सामान्य से अधिक टैक्स आपको देना पड़ सकता है। कृषि से संबंधित व्यापार क्षेत्रों में आपको हानि हो सकती है। संपत्ति का दुरुपयोग भी आपके द्वारा हो सकता है। रत्न प्रतिकूलता से स्वादिष्ट भोजन की कमी की स्थिति बन सकती है। विलासी स्वभाव आपके संचय में कमी करेगा। चांदी, सीसा, रत्न आदि के व्यापार के अलावा किसी विशेष गुण या विद्या के माध्यम से भी आपको धन हानि हो सकती है। धर्म, नम्रता, दया और परोपकार की कमी का गुण आपके स्वभाव में आ सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित व्यवसायों में हानि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(14/05/2010 - 14/05/2030)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम, पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(14/05/2030 - 14/05/2036)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज, मूंगा, मोती व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, नीलम व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(14/05/2036 - 14/05/2046)

चन्द्र की दशा में आपका मोती, पुखराज, मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, नीलम व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(14/05/2046 - 14/05/2053)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, मोती व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और हीरा व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(14/05/2053 - 14/05/2071)

राहु की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(14/05/2071 - 14/05/2087)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, मूंगा, मोती, माणिक्य व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 14/05/1986

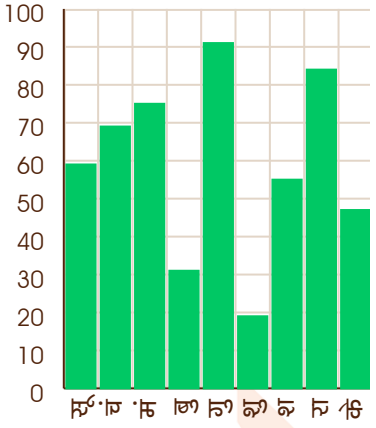

बुध - 14/05/2003

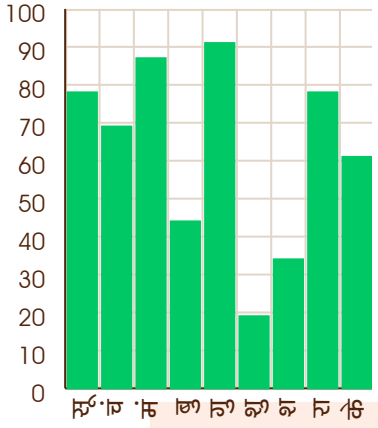

केतु - 14/05/2010

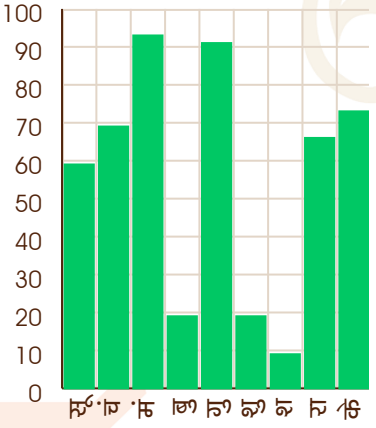

शुक्र - 14/05/2030

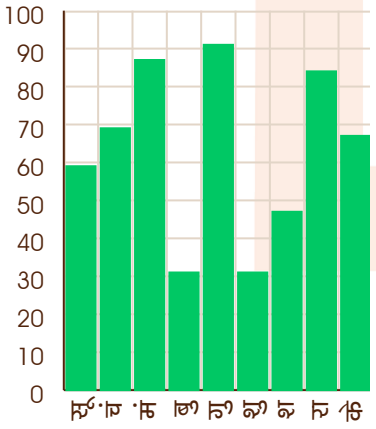

सूर्य - 14/05/2036

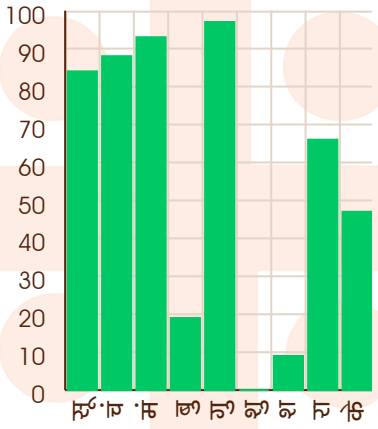

चन्द्र - 14/05/2046

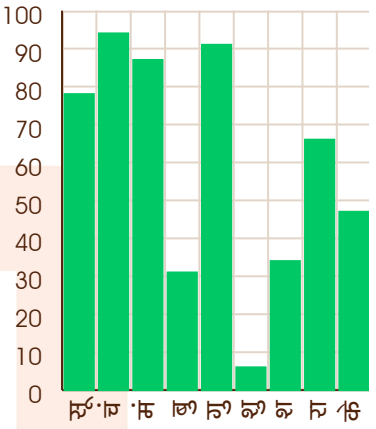

मंगल - 14/05/2053

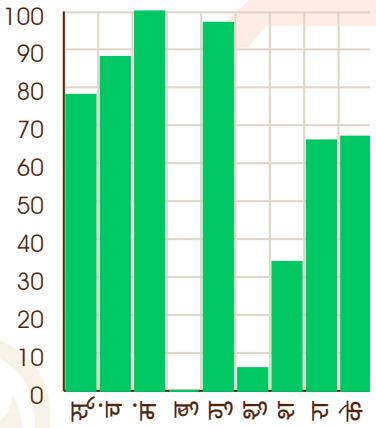

राहु - 14/05/2071

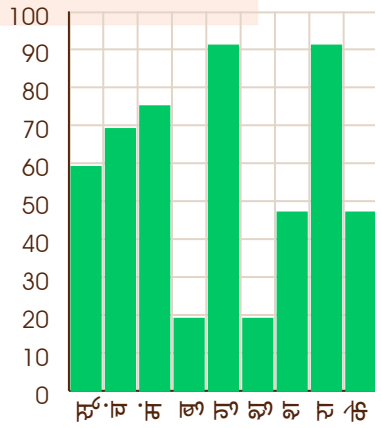

गुरु - 14/05/2087

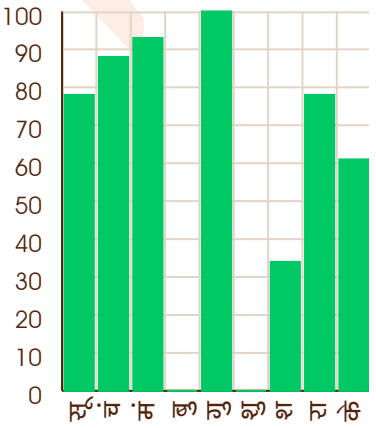

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मून स्टोन

आपका जन्म वृश्चिक राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह मंगल होता है। मून स्टोन रत्न चंद्रमा ग्रह के लिये धारण किया जाता है और चंद्रमा वृश्चिक राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि चंद्रमा की कर्क राशि वृश्चिक लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृश्चिक राशि के लग्न वाले जातकों को मून स्टोन रत्न धारण करके चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मून स्टोन रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मून स्टोन को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मून स्टोन चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मून स्टोन को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है। मून स्टोन को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही,

सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मून स्टोन की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मून स्टोन की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृश्चिक लग्न वाले जातक यदि मून स्टोन की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं है। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता हैं। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता हैं। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता हैं। उस भाव के फलों का नाश करता हैं। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता हैं। उस भाव के फलों की हानि होती हैं। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय हैं। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता हैं।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा

मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/12/1974-23/07/1975	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक को व्यक्तित्व निर्माण एवं आगे बढ़ने में आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है। कभी-कभी विरक्ति पैदा होती है। गृहस्थ जीवन कुछ अस्तव्यस्त रहता है। न्यायालय से थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय बन जाता है। जीवन में समय-समय पर आंशिक रूप में बाधाएँ आती हैं। परन्तु कालान्तर में सभी विघ्न-बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं। जीवन में अनेक बार अपयश मिलने का भय बना रहता है। अपने रिश्तेदार नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं होते। जातक बार-बार अपने कार्य को बदलता है। परिणामस्वरूप आंशिक रूप में कभी क्षति उठानी पड़ती है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में नुकसान उठाता है। लेकिन जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है। और समय-समय पर शुभ कार्य सम्पादित होते रहते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ा नाजुक होती है। इस योग के कारण जातक थोड़ा बहुत पराक्रमहीन, आलसी एवं नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर,

रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 22 है। दो एवं दो के योग से आपका मूलांक 4 होता है। मूलांक चार का स्वामी भारतीय मत से राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल हेाता है। अंक दो का स्वामी चन्द्र है। चन्द्र एवं राहु या हर्षल का प्रभाव आपके जीवन में निरन्तर चलता रहेगा।

मूलांक स्वामी हर्षल या राहु के प्रभाव से आपकी प्रगति यकायक होगी। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कई बार आपको अचानक सफलताएं प्राप्त होंगी। विज्ञान के क्षेत्र में यह सफलता देगा एवं आपका दृष्टिकोण रूढ़वादी न होते हुये वैज्ञानिक रहेगा। जीवन आपका संषर्घशील रहेगा एवं आपकी सोच जमाने से अलग रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। आप रीतियों में परिवर्तन पसन्द करेंगे। धन संग्रह की अपेक्षा नाम, यश आपको अधिक प्राप्त होगा। सामाजिक परिवर्तन के आप हिमायती होंगे एवं सुधारवादी विचारधारा के कारण आप सामाजिक प्रथाओं में परिवर्तन कर अच्छी ख्याति अर्जित करेंगे।

चन्द्र प्रभाव से आप में कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी एवं शारीरिक कार्यों की अपेक्षा मानसिक कार्य के क्षेत्र को आप अधिक पसन्द करेंगे। मानसिक कार्यों में आपको अच्छी दक्षता प्राप्त होगी। चन्द्रमा का स्वभाव घटना बढ़ना है। अतः आपके जीवन में भी काफी उतार-चढ़ाव आयेंगे। कभी तो आप एकदम उच्चता का शिखर छू लेंगे और कभी एकदम रसातल की स्थिति को निर्मित करेंगे। आपके कार्य करने के ढ़ंग में जल्दबाजी रहेगी। जिससे कभी-कभी आपको भारी हानि उठानी पड़ेगी।

आपके लिये अच्छा यही रहेगा कि आप अपनी योजनाओं पर धैर्य के साथ विचार करें एवं सोच समझकर प्रारम्भ करें। इसमें थोड़ा विलम्ब अवश्य होगा लेकिन सफलता के अवसर पूरे रहेंगे। जबकि जल्दबाजी में असफलता निहित रहेगी। आपको शीतरोग, रक्तदोष, कभी-कभी परेशान कर सकते हैं।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 4 है तथा आपका भाग्यांक 1 है। मूलांक 4 का स्वामी हर्षल है। भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 1 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आप शीघ्रातिशीघ्र तरक्की पसंद व्यक्ति होंगे। आप रोजगार-व्यवसाय ऐसा ही पसंद करेंगे, जिसमें आश्चर्यजनक रूप से शीघ्रातिशीघ्र ऊंचाइयां प्राप्त हों। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी प्रकृति एकाधिकार पसंद करने वाली एवं स्थिर रहेगी। आप स्वतंत्र रूप से निर्णय लेना पसंद करेगें एवं आपके कार्यक्षेत्र में दूसरों का हस्तक्षेप आपको कम से कम रास आएगा। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का है एवं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आपको अचानक सफलताएं प्राप्त होंगी। रोजगार के क्षेत्र में आप नवीन आविष्कारों पर अधिक ध्यान देंगे, जिससे आपका प्रभाव समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। कोई भी कार्य आप जल्दबाजी में न करें, अन्यथा असफलता हाथ लगेगी। आप धन संग्रह जीवन में अधिक नहीं कर पाएंगे। लेकिन संपत्ति वगैरह एकत्रित करने में पीछे नही हटेंगे। संघर्ष करना एवं कार्य द्वारा सफलता प्राप्त करना आपके जीवन का प्रमुख ध्येय रहेगा।

आपका भाग्योदय 28 वर्ष की अवस्था से प्रारंम्भ होगा। 37 वें वर्ष पर उन्नति प्राप्त होगी तथा 46 वें वर्ष की आयु पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है तथा भाग्यांक 1 की 4 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 1 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इस प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे अंक, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक होंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73

4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके लिए जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

हर्षल आपके लिए दिनांक 21 जून से 31 अगस्त तक, पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य के कर्क एवं सिंह राशि में रहने पर तथा भारतीय मत से 16 जुलाई से 16 सितंबर तक कर्क एवं सिंह राशि में सूर्य के रहने पर हर्षल की स्थिति प्रबल मानी गयी है। इस समय जल एवं अग्नि तत्व प्रबल रहते हैं, जो हर्षल या राहु के गुण हैं। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 4 के लिये कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता हैं।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह के रविवार, सोमवार, शनिवार आपके लिए शुभ रहेंगे। यदि आप अपना कोई भी कार्य इन दिवसों में तथा अनुकूल तारीखों में प्रारंभ करें तो आपके लिए शुभ रहेगा।

शुभ तारीखें

आपको अपने किसी विशिष्ट व्यक्ति से, उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र इत्यादि लिखना हो अथवा कोई महत्वपूर्ण कार्य-व्यापार आदि प्रारंभ करना हो तो किसी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों का चुनाव करना कार्य में सफलतादायक रहेगा।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 5, 12, 14, 21, 23 एवं 30 दिनांक आपके लिए अशुभ फलदायी रहेंगे। अतः कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी या अन्य कार्य या उच्चाधिकारी या किसी विशिष्ट अधिकारी से संबंध बनाने हेतु उपर्युक्त दिनांक आपके लिए ठीक नहीं रहेंगे।

मित्रता या साझेदारी

आप अपनी मित्रता ऐसे लोगों से करें जिनका जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। इन तारीखों को जन्मे लोग आपके लिए शुभ रहेंगे। ऐसे व्यक्तियों से आपकी लंबी मित्रता रहेगी तथा ये आपके रोजगार-व्यवसाय में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 प्रभावी पुरुष आपकी अच्छे साथी सिद्ध हो सकते हैं। उपर्युक्त मूलांक वाले पुरुषों से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकती हैं तथा उसमें सफल भी हो सकती हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को हुआ हो तो वे सभी पुरुष सहायक एवं लाभपूर्ण रहेंगे।

अनुकूल रंग

यदि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तो आपको चाहिए कि आप नीला, धूप-छांव, भूरा मिश्रित रंग के कपड़े पहनें और हो सके तो इस रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें। यह रंग आपके लिए अनुकूल रहेगा। हो सके तो अपने घर की दीवारों तथा पर्दों का चयन भी इन्हीं रंगों का करें। यह रंग आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपको चाहिए कि यदि आप भवन, कॉम्पलेक्स का चुनाव करते समय दिशा का चुनाव करें तो आपके लिए नैर्ऋत्य कोण दिशा अच्छी रहेगी। आपका शयन कक्ष नैर्ऋत्य दिशा में होने से रोजगार-व्यापार शुभ रहेगा तथा फर्नीचर आदि का रंग नीला, धूप छांव, भूरा मिश्रित रंग रखेंगे तो आपके लिए अधिक हितकर रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपका मूलांक 4 है। मूलांक 4 के मित्र अंक 1, 8 हैं। ये अंक आपके लिए सफलता के द्योतक हैं। यदि वाहन इत्यादि खरीदती हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 1,4,8 अंकों में से रखें। उदाहरणार्थ वाहन क्रमांक 5233 =4 इत्यादि। आपकी यात्रा का वाहन नंबर यही होने से आपकी यात्रा सफल रहेगी। अगर आप होटल में कमरा आदि बुक करवाती हैं तो उसका नंबर 103 = 4 लेना चाहिए।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तभी आपको रक्तचाप दोष या जुकाम, छूत के रोग शीघ्र हो जाते हैं। रोग होने पर, अशुभ समय आने पर, कष्ट और विपत्ति के समय आप गणेश चतुर्थी का व्रत करें तथा गजानन गणपति की उपासना करें।

व्यवसाय

दारु, स्पिरिट, तेल, मिट्टी का तेल, अर्क, इत्र, रेल विभाग, वायुसेना, जलदाय विभाग, कुलीगिरी, तकनीशियन, रंगसाज, अभियांत्रिकी, नक्शानवीस, दर्जी, बढ़ई का कार्य, डिजाइन के छापे का कार्य, बाबू, टेलीफोन ऑपरेटर, स्टेनो, टाइपिस्ट, शिल्पकार, पत्रकार, संग्रहकर्ता, विद्युत कार्य, वक्ता, उपदेशक, राज्य कर्मचारी, खनिज मजदूर, ठेकेदार, मोटर चालक आदि।

व्रतोपवास

शनिवार को हर्षल अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तैल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

चांदी की अंगूठी में आप सात से ग्यारह रत्ती का गोमेद बनवा कर शनिवार के दिन धारण करें। गोमेद के न मिलने पर आप कत्थई या काला-लाल हकीक भी पहन सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, दायें हाथ की मध्यमा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप राहु ग्रह की उपासना करें अथवा गणेश भगवान की आराधना करें। भगवान गणेश के अठ्ठाईशाक्षरी मंत्र 'ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा चतुर्थी के दिन व्रत करें एवं भगवान गणेश को मोदक भोग लगाएं। इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि ऐसा संभव न हो सके तो भगवान गणेश के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके राहु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु राहु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

राहु गायत्री मंत्र – ऊँ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप राहु का ध्यान करें, मन में राहु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ राहु को अनुकूल बनाने हेतु राहु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ अस्सी माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।। जप संख्या 18000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी सफेद चंदन की जड़ ला कर, नीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या त्रिधातु या लोहे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे हर्षल/राहु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में नागबेल, लोबान, तिल के पत्र, बचा, गडूची और तगर आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ राहु/हर्षल के प्रभाव क्षीण होकर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

राहु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को राहु के पदार्थ-अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्त धान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कंबल, घोड़ा, रबड़ आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

राहु को अनुकूल बनाए रखने हेतु राहु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ था। आपके जन्मकाल पूर्वीय क्षितिज पर वृश्चिक लग्न के साथ-साथ कुंभ राशि का नवमांश एवं कर्क राशि का द्रेष्काण भी उदित था। प्रस्तुत लग्नादिक प्रभाव आपके जीवन की सजीवता का चित्रण करता है। आप मन्द चरित्र के प्राणी है। आपकी व्यथित परिस्थिति जन सामान्य की दृष्टि में आपके रहस्यमय महत्वकांक्षा को विपरीत परिवेश में प्रस्तुत किया।

आप में धर्म का अल्प ज्ञान है। फिर भी आप एक धर्म प्रचारक के रूप में प्रायः सबों पर धार्मिक प्रभाव डालते हैं। वस्तुतः सत्य तो यह है कि आपके दृष्टिकोण से धार्मिक विचारधारा बहुतायत में प्राप्त करना। यह संप्रति स्वरूप है। अच्छी धर्मिक विचारधारा दुषित पद्दति को निश्चित रूप से स्वच्छ कर देता है।

आप अद्म्य उत्साह से युक्त होकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समर्पित हैं तथा स्वतंत्र विचार से भक्ति उपासना की समतुल्यता हेतु स्थिर चित्त से विजयोल्लासित हैं। वास्तव में आप मुसीबतों से संघर्ष करने में आनन्द प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार कठिन संघर्ष एवं युद्ध में विजय श्री का आनंद मधुर फलदायी होता है।

समाज में आपकी छवि चतुरता पूर्ण ढंग से अच्छी प्रकार एवं सावधानी पूर्वक अपना कार्य व्यवसाय संचालित करने वाले की श्रेणी में हैं। आपमें दृढ़ कार्य क्षमता के गुण विद्यमान है। परंतु द्वितीय कर्मस्थल पर एवं पत्नी की समस्या का समाधान विशालकाय प्रतीत होता है। आप अपने घर परिवार को प्रसन्नता पूर्वक विकसित करने के इच्छुक हैं। अतएव आप अपनी प्रेमिका को प्रसन्न रखने के बिंदु पर प्रयत्नशील रहते हो। परंतु आप अपनी पत्नी को किसी भी प्रकार के पश्चाताप का अवसर नहीं देना चाहते है। आपका कुछ समय इसी चिंतन में व्यतीत हो जाता है। इस कारणवश आपको पूर्व सूचित किया जाता है कि आप यौन रोग से प्रभावित हो सकते हैं। अतएव गुप्तरूप से वासनात्मक अर्थात संभोगात्मक रोगादि से रक्षित रहें।

आप अपने स्वास्थ्य की रक्षा के प्रति उचित स्रोत अपनाएं अन्यथा आप अर्श रोग तथा ट्यूमर रोग से जीवन के 13 वें वर्ष 27 वें, 31 वें एवं 49 वें वर्षादि में दुःखी हो सकते हैं। उत्तम तो यह है कि समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहें।

आप सामान्यतः अपने कार्य व्यवसाय को अन्यों के साथ करना अस्वीकार्य करते हैं। परंतु यदि कोई आपको उत्तेजित कर दें तो आप बिच्छू के समान ढंक मार कर वृश्चिक राशीय गुणों को चरितार्थ कर सकते हैं। इसलिए आपको अपनी उत्तेजनात्मक प्रवृति के प्रति सीमित रहना चाहिए।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में कार्य व्यवसाय संपादन हेतु अनुकूल दिन रविवार, सोमवार, मंगलवार एवं गुरुवार का दिन उत्तम है। परंतु बुधवार शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके लिए अनुकूल नहीं है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल अंक 1, 2, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु आपके लिए

अंक 5, 6 एवं 8 अंक प्रतिकूल है।

आपकी महत्वकांक्षा एवं अनुकूलता हेतु रंग लाल, नारंगी, पीला एवं क्रीम रंग है। परंतु रंग हरा, नीला एवं सफेद रंग आपके हित प्रतिकूल है।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ,

मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं तथा परिश्रम एवं लगन के द्वारा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करते हैं। स्वभाव से ये निडर होते हैं तथा कई विषयों के ज्ञानार्जन में इनकी रूचि रहती है तथा समाज में एक विद्वान के रूप में ये सम्मानित होते हैं। कुल या परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा बन्धु एवं मित्र वर्ग के मध्य आदरणीय समझे जाते हैं। आत्मशक्ति की इनमें प्रबलता रहती है तथा अत्यधिक महत्वाकांक्षी भी होते हैं। धनसंग्रह में ये तत्पर रहते हैं तथा धनार्जन में नैतिक मूल्यों का पालन कम ही करते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा सभी कार्य बुद्धि के द्वारा संचालित होते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित के क्षेत्र में ये परिश्रमपूर्वक सफलता एवं ख्याति प्राप्त करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा। साथ ही स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे तथा धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप में निर्णयता तथा लगनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा फलतः कार्यक्षेत्र में आप प्रभावशाली रहेंगे तथा प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त करेंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगे। आपकी संग्रहशील प्रवृति से यदा कदा स्वजनों को आपसे परेशानी की अनुभूति हो सकती है। आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य भावुकता के स्थान पर बुद्धिमता से ही होंगे तथा आवश्यक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

राहु की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा आप शारीरिक या मानसिक परेशानी की भी अनुभूति कर सकते हैं। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्यकलापों पर बुद्धिमत्ता की छाप होगी। एक विद्वान के रूप में भी आप समाज में अपनी पहचान बनाने में समर्थ होंगे तथा इच्छित आदर एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे।

आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा दक्षतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे फलतः लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपमें कर्तव्यपरायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपने इस गुण से कार्यक्षेत्र में इच्छित उन्नति सम्मान एवं प्रतिष्ठा के मार्ग प्रशस्त करने में सफलता अर्जित करेंगे। स्त्री का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर सांमजस्य स्थापित करके आप इसमें मधुरता लाने में सफलता प्राप्त करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे परन्तु गंगास्नान या तीर्थ यात्रा अवश्य करेंगे। मित्र वर्ग में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे आप सहयोग भी अर्जित करेंगे। इस प्रकार आप स्वस्थ पराक्रमी परिश्रमी एवं लगननशील पुरूष होंगे तथा जीवन में सुख संसाधनों

से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी अच्छी रहेगी एवं किसी भी विषय का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके लिए वे कर्तव्य परायण तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपका भी उनके प्रति गहरा लगाव रहेगा। पारिवारिक शान्ति एवं खुशहाली के लिए आप एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आप एक पराक्रमी तथा साहसी पुरूष होंगे तथा परिश्रमशील कार्यो को करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप नीति के भी ज्ञाता होंगे एवं मंत्रणा या सलाह संबंधी कार्य आसानी से सम्पन्न करेंगे। सांसारिक परेशानियों एवं समस्याओं का समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे तथा किसी भी कार्य को तब तक सम्पन्न करेंगे जब तक कि उसमें सफलता प्राप्त न कर लें। जीवन में संचार साधनों यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन संबंधी सुविधाएं अर्जित करेंगे तथा इनका उपभोग करते समय स्वयं को अन्य जनों से श्रेष्ठ अनुभूति करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी गहरी रूचि रहेगी। समस्त भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। आपकी समय समय पर दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करेंगे। साथ ही इनसे आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा सामाजिक सम्मान में भी वृद्धि होगी। समाचार पत्र तथा अन्य सूचना संबंधी लेखों को आप चाव से पढ़ेंगे तथा रिक्त समय में आप इसका पूर्ण सदुपयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बातचीत एवं विचार से शांत प्रकृति, पुत्र.पौत्र से युक्त, गुरू तथा मित्र प्रेमी, धनवान तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बृहस्पति भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुख एवं वैभव की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होकर आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। समाज में भी आपका उच्चस्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसका स्वामित्व प्राप्त करेंगे। किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति भी से आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से शीघ्र एवं अधिक लाभ के भी योग बनते हैं।

आपका आवास सुन्दर, विस्तृत एवं आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होगा तथा भौतिक उपकरणों की इसमें अधिकता होगी। साथ ही इसका आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप तत्पर रहेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा आपके पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में भी अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था से ही आप उत्तम वाहन की प्राप्ति करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी बुद्धिमती, तेजस्वी, शिक्षित एवं सरल स्वभाव की महिला होंगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता से सभी जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। वह व्यवहार कुशल महिला भी होंगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा एवं समय समय पर वांछित नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी माताजी के आज्ञाकारी होंगे तथा उनकी सलाह एवं सहयोग से ही अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आपके संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सुख-दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आप रूचिशील रहेंगे तथा अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में स्नातक परीक्षा आप ससम्मान उतीर्ण करेंगे तथा इससे आपके आत्म विश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा समाज में भी प्रभाव बढ़ेगा। जिससे स्वजन एवं मित्र वर्ग आपको पूर्ण प्रोत्साहन देंगे।

शनि की राशि में चतुर्थ भाव में बृहस्पति के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप न्यूनाधिक मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी प्राप्त कर सकते है। अतः यदि युवावस्था से ही खान-पान पर विशेष ध्यान दिया जाय तो ऐसी समस्याओं में कमी आएगी तथा आपका सामान्य समय प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी वृहस्पति है। तथा चन्द्रमा भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके समस्त कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे अन्य सामाजिक लोग बांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आप में शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता भी होगी एवं कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र के प्रति आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। आपका आधुनिक विज्ञान, कविता साहित्य एवं संगीत के प्रति भी आकर्षण होगा तथा अवसरानुकूल इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इससे आपकी विद्वता तथा सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी। पंचमभाव में मन के कारक चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा इनसे आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी साथ इस क्षेत्र में आप यदा-कदा भावुकता का भी परिचय देंगे। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं आर्दशवाद से युक्त होगा तथा इसकी परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति तथा सफलताएं अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव होगा एवं सामान्यतया उनकी आज्ञापालन में तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष आत्मिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के सहयोग से ही करना अधिक सुविधा जनक समझेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में संतोष जनक प्रदर्शन करेगी। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश मैं उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। इसके साथ ही आपकी संतति चतुर व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य कलापों को सम्पन्न करने वाली होगी जिससे अन्य सामाजिक लोग भी उनसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपके विरोधी या शत्रु कोई उच्चाधिकारी या उच्च व्यक्ति होंगे। साथ ही आपके शत्रुओं की संख्या भी अधिक रहेगी तथा समाज में प्रत्येक क्षेत्र में आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। यद्यपि आपके सेवक सभी अच्छे एवं ईमानदार होंगे परन्तु यदा कदा उनकी चोरी की आदत से आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आपके गुप्त रहस्यों के बारे में भी वे जानकारी रखेंगे तथा अवसरानुकूल अन्य जनों के समक्ष आपके रहस्यों को उजागर करेंगे जिससे मान सम्मान में न्यूनता आएगी। आप अत्यधिक व्ययशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से धन व्यय करेंगे इससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा तथा कर्ज आदि भी लेना पड़ेगा। साथ ही ऋणदाता आप पर कोई मुकद्दमा भी दायर कर सकते है क्योंकि आप आसानी से ऋण वापस नहीं कर पाएंगे। अतः ऋण लेने की प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही अन्य फौजदारी मामलों में भी आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है लेकिन अत्यधिक परिश्रम एवं समय के बाद आपको इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

आपके मामा और मामियों का स्वभाव अच्छा रहेगा तथा समाज में वे सम्मानीय रहेंगे। लेकिन वे अल्पमात्रा में कंजूस प्रवृत्ति के होंगे अतः जितना अपनत्व या लगाव प्रदर्शित करेंगे उसके विपरीत अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त कार्य प्रारंभ में सहयोग न करके अन्त में सहयोग करेंगे। साथ ही आपके मुकद्दमे भी सामान्य रूप से चलते रहेंगे। इस प्रकार न्यूनधिक रूप से आप मुकद्दमे से संबध रखेंगे तथा अन्त में आपको इनमें सफलता प्राप्त होगी तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त खान पान में भी आपको यथोचित परहेज रखना चाहिए अन्यथा रक्त विकार संबन्धी परेशानियां हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा केतु की स्थिति भी सप्तम भाव में है। सामान्यतया वृष राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है परन्तु केतु के प्रभाव से उसमें उग्रता साहस एवं कर्तव्य के प्रति उपेक्षा का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी परन्तु उसमें उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अपने कार्य कलापों को वह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगी तथा उनके साहसिक कार्यो से अन्य जन भी प्रभावित होंगे। परन्तु केतु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमें न्यूनता रहेगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से कम ही पालन करेंगी इससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी प्रभावित होगी लेकिन सामान्यतया वह व्यवहारिक महिला होंगी तथा गृह कार्यो को दक्षता से सम्पन्न करेंगी।

आपकी पत्नी का सामान्यतया गौरवण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंग प्रत्यंगों में पुष्टता रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य में निखार आएगा तथा व्यक्तित्व के आकर्षण में भी वृद्धि होगी। सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से सुंदरता संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा तथा कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करने में तत्पर रहेंगी।

आपका विवाह सामान्यतया विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा परन्तु केतु के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम एवं सदभाव होगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यो एवं योजनाओं को आपसी सहमति एवं सहयोग से पूर्ण करेंगे इससे समानता एवं विश्वसनीयता का भाव बना रहेगा लेकिन आप दोनों तेजस्वी स्वभाव के होंगे अतः यदा कदा संबंधों में तनाव तथा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आपका विवाह किसी मध्यम परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे सम्पन्न होंगे। विवाह में आपको दहेज के रूप में धन सम्पति अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी तथा अन्यत्र से बहुमूल्य उपहारों में भी न्यूनता होगी। विवाह के बाद सास ससुर से संबंध औपचारिक रहेंगे तथा मधुरता का अभाव रहेगा।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति विशेष सेवा एवं श्रद्धा का भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा नहीं करेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके उग्रस्वभाव एवं कटुसभाषण से असन्तुष्ट होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा ही हानि होगी एवं आपस में विश्वसनीयता भी कम होगी अतः साझेदारी की जीवन में उपेक्षा ही करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म विज्ञान में अत्यधिक रूचिशील रहेंगे। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में भी श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आपकी पूर्वाभास शक्ति उत्तम रहेगी तथा अन्तर्प्रज्ञा के द्वारा भविष्यवाणी करने में समर्थ होंगे। वास्तव में संसार की असमान्य बातों में आपकी प्रगाढ़ रूचि रहेगी तथा इन विषयों पर समय समय पर कार्य करते रहेंगे। इसके साथ ही ज्यौतिष या आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सम्मान भी मिल सकता है।

आपको अपने वृद्धजनों से पैतृक सम्पत्ति में जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी तथा काफी चल एवं अचल सम्पत्ति आपके नाम रहेगी जिससे आप पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपात्काल में बिना किसी कार्य को किए हुए अपनी जायदाद को बेचकर आर्थिक सुदृढ़ता भी प्राप्त कर सकते है। साथ ही आपका जीवन भी आराम से व्यतीत होगा तथा समस्त सुख सुविधाओं से युक्त रहेंगे। शादी आदि के अवसर पर आपको काफी मात्रा में आपकी मांग पर दहेज की प्राप्ति होगी। इसमें धन आभूषण वाहन तथा अन्य आधुनिक उपहार होंगे। बीमे आदि से भी आपको लाभ होगा तथा इसकी एजेंसी के द्वारा आप अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। आपके जीवन में चोरी डकैती या अन्य दुर्घटनाएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इससे आपको कोई विशेष हानि या परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भाग्यवादी पुरूष होंगे। आप अपने को अन्य जनों के समक्ष आवश्यकता से अधिक धार्मिक प्रदर्शित करने की कोशिश करेंगे तथा पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का अनुपालन करेंगे। साथ ही भगवान के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दैनिक पूजा या अन्य प्रकार से आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यदा कदा इसमें उदासीनता का भाव भी रखेंगे। अतः दैनिक पूजन कार्यक्रम में व्यवधान रहेगा।

आप उच्चशिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक रहेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अध्यात्मिक, तंत्र मंत्र एवं ज्यौतिष आदि का अध्ययन भी कर सकते हैं। साथ ही सन्तवाणी का भी ध्यान से श्रवण करेंगे। आपकी प्रवृति परिवर्तनीय होगी। अतः आप समयानुसार अपने शब्दों या वादों को परिवर्तन करेंगे। आप कई तीर्थ स्थानों की यात्राएं भी सम्पन्न कर सकते है तथा अपने धर्म के समस्त पवित्र ग्रंथों का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन करेंगे। जीवन में समय समय पर लम्बी यात्राएं सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित धनार्जन भी होगा परन्तु अपनी प्रवृति एवं आर्थिक मामलों में संकीर्णता के कारण यदा कदा आपके मान सम्मान में न्यूनता भी आएगी।

आप एक आदर्श तथा प्रसिद्धि व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप कई बार धमार्थ कुछ दान देने की सोचेंगे परन्तु वास्तव में यह दिखावा होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को करना पसंद नहीं करेंगे जिसमें धन का व्यय होता हो परन्तु अपने पर आप आवश्यकताओं से अधिक व्यय करेंगे लेकिन अन्य जनों की सेवा या सहायता के लिए कुछ भी नहीं करेंगे। पौत्रों से आपको सुख एवं आनन्द प्राप्त होगा वास्तव में आप पूर्वजन्मों के पुण्यों से ही इस जीवन में सुख ऐश्वर्य की अनुभूति कर रहें है लेकिन अगले जीवन के लिए भी आपको कुछ करने की ओर प्रवृत होना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक प्रवृति से युक्त उपवासकर्ता, तीर्थ स्थलों की यात्रा करने वाले तथा धर्म के प्रति श्रद्धालु रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सिंह राशि अग्नितत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। कार्यक्षेत्र में आप सामान्यतया उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा नवीन आयाम स्थापित करने में सफल होंगे।

आपके लिए आजीविका की दृष्टि से आपके लिए प्रशासकीय सेवा, औषधिविज्ञान, सरकारी कर्मचारी, कम्प्यूटर साइंस, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत विज्ञान, पर्यटन (पर्वतीय) क्षेत्र, उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। साथ ही वैज्ञानिक शोध क्षेत्र में भी आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते है। अतः सतत उन्नति एवं लाभ के लिए आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही आजीविका का चयन करना चाहिए। इससे उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए औषधि व्यापार, ऊनी वस्त्र, रत्न संबंधी कार्य, विद्युत एवं मैकेनिकल उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण, पर्यटन केंद्र का स्वामित्व, सरकारी ठेके आदि से लाभ एवं प्रचुर मात्रा में धन अर्जित होगा। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करेंगे तो इससे आपको इच्छित उन्नति की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको इन्हीं क्षेत्रों एवं वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।

जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे इससे आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप सामाजिक एवं शैक्षिणक संस्थाओं में भी किसी सम्मानीय सदस्य या पदाधिकारी के रूप में कार्य कर सकते है इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी योग्य एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही सामाजिक जनों के कल्याणकारी कार्यो के करने में भी समर्थ होंगे। आपके प्रति उनके मन में अपनत्व का भाव होगा तथा उच्चस्तर पर शिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा उनके प्रभाव एवं सहयोग से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे साथ ही आप भी पिता के सम्मान वृद्धि के लिए परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं तथा उमंगें विद्यमान रहेंगी। चूंकि आप एक पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरूष होंगे अतः जीवन में आपकी अधिकाशं आकांक्षाएं पूर्ण हो जाएंगी। आपकी कुंडली में आर्थिक महत्वाकांक्षा की प्रबलता रहेगी साथ ही विभिन्न प्रकार से धन अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी। आप लेखन कार्य, ज्यौतिष, कमीशन एजेंट, गणित या शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है अथवा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही व्यापार के द्वारा भी आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही उनकी आपके प्रति स्नेह एवं पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा एवं आपको सुख दुख में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा अवसरनुकूल माता की तरह आपका पालन पोषण तथा मार्ग निर्देशन करेंगी।

आप मित्र मंडली के मध्य अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपके सभी मित्र चतुर चालाक एवं शिक्षित होंगे। अवस्था के साथ साथ मित्रों के आप पथ प्रदर्शन भी करेंगे तथा वे आपसे हमेशा सलाह लेते रहेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी सामान्यतया उच्च रहेगा तथा अपने समाज के मध्य प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों की सेवा एवं परोपकार संबंधी कार्यो को भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य क्षेत्रों में भी उन्नतिशील रहेंगे तथा धन ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़, धन ,वाहन एवं व्यापार आदि से उच्च स्थिति में रहेंगे। साथ ही आप एक अधिकारी स्तर के व्यक्ति होंगे तथा सुदंर घर से भी युक्त रहेंगे आपकी आय निरन्तर होती रहेगी क्योंकि आपको धनार्जन करना अच्छी तरह आता है। आपके सरकारी या अर्धसरकारी बांडो या संस्थाओं में पूंजीनिवेश रहेगा जिससे समय समय पर पूर्ण लाभ होगा। साथ ही आप एक ईमानदार उद्योगपति भी हो सकते है। आप आजीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में आय स्रोत भी प्रशस्त होंगे। आपकी बचत उत्तम रहेगी तथा अपने कुशलता से धनार्जन करके बचत भी करेंगे।

आपका रहन सहन तथा खान पान उच्च स्तर का रहेगा तथा इसी स्तर को हमेशा बनाएं रखेंगे लेकिन आपको इसमें अत्यधिक व्यय करना पड़ेगा। आपको स्वादिष्ट एवं महंगा भोजन करना भी पसन्द रहेगा जिसके लिए आप अच्छे होटलों में भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मित्रों आदि पर भी आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे।

आपकी यात्राएं भी सामान्यतया होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होगी ये यात्राएं कार्य वश या भ्रमण के लिए होंगी क्योंकि आपको अच्छे स्थानों की सैर करना तथा अच्छे दृश्य देखना अच्छा लगता है। इस प्रकार आप प्रसन्नता पूर्वक धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रफल

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, नाड़ी मध्य, वर्ग सर्प, गण मनुष्य तथा गो योनि होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "थ" या "था" अक्षर से होगा।

आप अपने कुल तथा परिवार के मध्य श्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी पारिवारिक जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप मध्यम शारीरिक कद के पुरूष होंगे तथा सत्कार्यों को करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आपके इन शुभ कर्मों से अन्य जन भी समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप धनाढ्य पुरूष होंगे एवं विपुल धन सम्पत्ति से युक्त रहकर जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। यदा कदा आप में अभिमानी प्रवृति भी जागृत होगी एवं अन्य लोगों के समक्ष इसका प्रदर्शन करेंगे जिससे कई लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक कीर्तिशाली पुरूष होंगे तथा समाज में दूर दूर तक यश प्राप्त करेंगे।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप एक सत्वगुणी पुरूष होंगे एवं इन गुणों का आप जीवन में प्रयत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। आपके अर्न्तमन में त्याग का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार परिवारिक तथा सामाजिक जनों के मध्य आप इसी प्रवृति का भी पालन करते रहेंगे। धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में भी ख्याति प्राप्त कर सकेंगे।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

आप एक उच्च कोटि के वक्ता होंगे तथा अपने ओजस्वी वक्तव्यों से समाज के सभी वर्गों को प्रभावित करने में सर्वदा समर्थ रहेंगे तथा जीवन में पूर्ण रूप से सुखसंसाधनों से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। आपका परिवार अत्यन्त ही विस्तृत रहेगा तथा पुत्र पौत्रादि के सुख को भी आप प्राप्त करने में सौभाग्यशाली रहेंगे। शत्रुवर्ग आपसे नित्य पराजित तथा भयभीत रहेगा एवं आपका विरोध करने में सर्वथा असमर्थ रहेगा। इसके साथ ही

आप धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगे एवं समस्त धार्मिक प्रवृतियों का यत्नपूर्वक आचरण करते रहेंगे।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

समाज में आप एक गौरवशाली व्यक्ति माने जाएंगे तथा अपने सत्कार्यों एवं गुणों से गौरव प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के विषय में भी आपका ज्ञान विस्तृत रहेगा एवं समाज में एक श्रद्धेय तथा आदरणीय पुरूष के रूप में आपका नित्य आदर होता रहेगा। आप एक साहसी व्यक्ति भी होंगे तथा साहसिक एवं शौर्योचित कार्यों के प्रति आपकी रूचि रहेगी एवं इनको सम्पन्न करने में आप हमेशा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शारीरिक रूप से सुन्दर एवं आकर्षक रहेंगे तथा आपका मस्तक विशाल एवं नासिका ऊँची रहेगी। आपकी आखें भी सुन्दर होंगी एवं समस्त शरीर के अंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। आपका कटिभाग क्षीण रहेगा। आप चित्रकारी में विशेष रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रमपूर्वक इस क्षेत्र में सफलता तथा ख्याति अर्जित करेंगे। शत्रुवर्ग को नष्ट करने में आप हमेशा समर्थ रहेंगे तथा वे सभी आपसे भयाक्रान्त रहेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा कई शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। साथ ही संगीत में भी आपकी नैसर्गिक रूचि रहेगी तथा इसका आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप एक धर्म निष्ठ व्यक्ति होंगे एवं श्रद्धापूर्वक धार्मिक आचरण सम्पन्न करते रहेंगे। स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय

रहेंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग अर्जित करते रहेंगे। साथ कई महिलाओं से आपके मित्रतापूर्ण मधुर संबंध भी रहेंगे। आप अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का उपयोग करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। आप अपने जीवन काल में आवश्यक सुखसंसाधनों से सम्पन्न रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक जीवन में इनका उपयोग भी करेंगे। आप में क्रोध का भाव न्यून ही होगा तथा यदा कदा ही आप इसका प्रदर्शन करेंगे। आप राजकीय सेवा में भी नियुक्त रहेंगे तथा खान आदि से निकाले गए पदार्थों से भी अपनी आजीविकार्जन करेंगे। साथ ही इससे आप को पर्याप्त मात्रा में लाभ की भी प्राप्ति होती रहेगी। परन्तु स्त्री से आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा अपने समस्त मुख्य सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। समाज में अन्य लोगों से आपके प्रिय तथा मधुर संबंध रहेंगे तथा सभी आपके मृदु स्वभाव से प्रभावित रहेंगे। समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में भी आपकी हार्दिक प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी रहेगा एवं समयानुसार इस प्रवृति का आप पालन भी करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती आदि अन्य रत्नों से नित्य लाभान्वित होते रहेंगे तथा इनसे युक्त भी रहेंगे। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, संबंधी या मित्र की सम्पत्ति को आप प्राप्त करेंगे। नारी वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष आसक्ति भी रहेगी। इसके साथ ही आप मध्यम शारीरिक कद के पुरूष होंगे।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रदर्शित करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे हमेशा प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपका गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। आप विद्वता के गुण से युक्त रहेंगे तथा अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उसका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। आपकी इस कृतज्ञता की भावना तथा अन्य सद्गुणों से सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप एक गणमान्य पुरूष होंगे तथा आपके अधिकांश कार्य अल्प परिश्रम द्वारा भाग्यबल से ही सम्पन्न होगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।

फलदीपिका

आप अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे तथा हमेशा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही आप एक चालाक एवं बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को चालाकी तथा बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। जल क्रीड़ा में आपकी प्रबल आसक्ति रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसमें विहार करके अत्यन्त ही सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।

जातकाभरणम्

आपका अधिकांश समय उदरपोषण के कार्यों में ही व्यतीत होगा साथ ही कभी कभी लाभ मार्ग भी अवरूद्ध होंगे फलतः आपको आर्थिक कष्ट की अनुभूति भी हो सकती हैं। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी एवं इससे आपके सौन्दर्य तथा व्यक्तित्व में आकर्षण की वृद्धि होती रहेगी। पिता से आपको पूर्ण धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इसका आप सुखपूर्वक जीवन में उपयोग कर सकेंगे। आप एक साहसी पुरूष भी होंगे तथा नित्य साहसिक कार्यों को करने के लिए उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव सन्तोषी होगा तथा जितनी भी आपको उपलब्धि हो रही हो उसी पर सन्तुष्ट रहेंगे एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।

जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा वीरता के गुणों से सर्वदा सुशोभित रहेंगे। समाज में आप एक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको श्रद्धेय तथा पूजनीय समझेंगे। साथ ही आप में कंजूसी का भाव भी रहेगा एवं धन संचय के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी। आप अपने परिवार या कुल में सम्माननीय तथा प्रिय रहेंगे एवं सभी कौटुम्बिक जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। आपको सेवा करने का कार्य रूचिकर लगेगा। अतः प्रायः आप इन कार्यों में तत्पर रहेंगे। आपकी चलने की गति भी तीव्र रहेगी तथा तेज चलना आपको रूचिकर लगेगा। इसके अतिरिक्त आपका आचरण उत्तम रहेगा एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।

मानसागरी

आप एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उत्तम कोटि के विद्वानों के लक्षणों से भी सुशोभित रहेंगे। साथ ही समाज में महिलाओं से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। परन्तु आप में अभिमान का भाव भी रहेगा अतः समय समय पर आप इसका प्रदर्शन करते रहेंगे। इससे अन्य लोग आपसे असन्तुष्ट भी रहेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी सर्वदा विद्यमान रहेगी एवं अवसरानुकूल इसका प्रदर्शन भी आप करते रहेंगे। साथ ही आप शारीरिक रूप से पूर्ण बलशाली होंगे एवं अपने अधिकाँश कार्यों को अपने बल पर ही सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार के कार्यों तथा कलाओं को सम्पन्न करने में भी आप निपुण रहेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी एवं परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आप सुख प्रदान करेंगे।

आप समाज में हमेशा सम्मानित रहेंगे तथा धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर इसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी आखें विशाल होंगी एवं निशानेबाजी की कला में आप अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे तथा इस क्षेत्र में विशेष योग्यता एवं ख्याति अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के लोगों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं आपकी आज्ञा पालन के लिए वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गौ योनि में पैदा होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के मध्य अत्यन्त ही प्रिय तथा आदरणीय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। आप एक उत्साही पुरूष होंगे तथा हमेशा उत्साह की भावना से सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को सोत्साह सम्पन्न करेंगे। साथ ही आप बोलने में अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी वाक्चतुरता से सबको प्रभावित करने में सफल रहेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलकारक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ

कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत चन्दन, पीत वस्त्र, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव नष्ट होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप दानी, भरोसे से काम करने वाले। आप अपने पराक्रम से प्रगति करेंगे। स्वयं उन्नति कर दूसरों के लिए उन्नतिकारक होंगे। स्वयं पराक्रम से धन कमाने वाले, हुनर की कमाई से बरकत पाने वाले। आपको उत्तम सवारी का सुख मिलेगा। आपको तीनों लोकों का सुख प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में मुखिया बनेंगे। धर्म मंदिर-धर्मशाला का निर्माण करवाएंगे। ससुराल एवं पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। माता-पिता/सास-ससुर सगे संबंधियों के लिए अनुकूल तथा परिवार में स्त्रियों के लिए भारी होंगे। आपको सरकार से लाभ मिलेगा और सरकारी अधिकारियों से मान-सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारोबार के मालिक भी बन सकते हैं। कर्ण की तरह दानवीर भी बनेंगे।

यदि आपने अपने रिश्तेदारों से जायदाद-धन आदि के लिये मुकद्दमें आदि किये, किसी दूसरे व्यक्ति का माल हड़प किया, सफेद वस्तुएं (चावल-चांदी दूध आदि) मुफ्त ली तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आपकी पत्नी, प्रेमिका तथा धन पर बुरा असर पड़ेगा। माता या मौसी पर भी अशुभ प्रभाव होगा। परिवार में स्त्रियों की संख्या कम होगी। इस हालात में बहन, माता/सास, भाभी पर अशुभ असर पड़ सकता है। माता, बुआ या मौसी विधवा हो सकती है। धन, स्त्री, जमीन के लिये मुकद्दमें झगड़े अगर आप करेंगे तो आपका कुल तक नष्ट हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त के माल पर नजर न रखें।
2. गिफ्ट या दान न लेवें।

उपाय :

1. नारियल या सरसों का तेल या बादाम धर्म स्थान में देवें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से हीरे-जवाहरात से संबंधित नौकरी-व्यापार लाभ देगा। कन्या सन्तान अधिक होने का योग है। आपको सुख के सभी साधन मिलेंगे। वन विभाग के अधिकारी हो सकते हैं। आप 9 वर्ष जीवन में यात्रा करेंगे। विदेश यात्रा से लाभ संभावित है। आपकी संतान की उम्दा परवरिश होगी। धार्मिक विचार रखने से आपके धन-दौलत की बरकत होगी। आप किसी के भी सामने नहीं झुकेंगे। आप दूसरों का इन्साफ करने में आगे रहेंगे। आप रहम दिल इंसान होंगे और किसी से बेइंसाफी नहीं करेंगे। लड़ाई-झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे वह जरूर जीतेगा। सरकारी काम शुभ फल देने

वाला होगा। आप सामाजिक कार्य करें तो आपकी औलाद के लिए अच्छा होगा। यात्रा का फल शुभ होगा। आपकी कभी भी बर्बादी नहीं होगी। आपको अपने जीवन की सभी मशहूर बातें हमेशा याद रखनी चाहिए।

यदि आपने धर्म विरोधी कार्य किये, गुप्त पाप किया, चकोर पक्षी का शिकार किया, अपना भेद किसी को बताया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी विद्या में विघ्न, संतान द्वारा विरोध होगा। आपका अपना भेदी तबाही कर सकता है। लालच और खुदगर्जी से नुकसान होगा। आपकी आदत हरेक को गुमराह करने वाली होगी। आपको नौकरी-व्यापार से अच्छा लाभ नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आप अपनी मर्जी से कोई कार्य न करें, किसी की सलाह जरुर लेवें।
2. किसी भी पाप कार्य में दखल न देवें।

उपाय :

1. धार्मिक कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेवें।
2. कभी-कभी पहाड़ की यात्रा करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में पहले खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप अंदर-बाहर एक जैसे, संतान सुख से युक्त, और प्रसन्न रहेंगे। आप विद्वान, शूरवीर, एवं साहसी है। आप बुरे के साथ भी नेकी करेंगे। आप नेकी छोड़ने से कलंकी बन जाएंगे। आप परिवार के भाग्य को जगाने वाले हैं। आप साधू-सन्यासी की सेवा करेंगे। 18 वर्ष के बाद सरकारी सेवा में या सलाहकार के कामों में रुचि लेंगे। शत्रु से आप बचते रहेंगे। आप अगर नौकरी करते हैं तो 35-40 वर्ष की आयु तक ही नौकरी करेंगे। राज्य सरकार से लाभ मिलेगा। आप पलट कर आक्रमण करने वाले हैं। आपको छोटे बहन-भाई का सुख मिलेगा। आप 28 साल के बाद जीवन में उन्नति करेंगे। आप किसी की सच्चाई या नेकी को सदा याद रखेंगे। आपके उच्च पदाधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे। लोहा, लकड़ी तथा मकान के कामों में लाभ पाएंगे। परिवार के लोगों के साथ मिल कर काम करें तो बहुत अच्छा रहेगा। आपके मुंह से निकली बुरी बात का दूसरों पर बुरा असर होगा। आपका आर्शीवाद लोगों को फलेगा।

यदि आपने मुफ्त माल या दान लिया, जूठन खाया और झूठ बोला, माता को कष्ट दिया या माता का विरोध किया, अपशब्द बोलने की आदत हो तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से शारीरिक कष्ट की आशंका है। मुफ्त की चीजें नहीं फलेंगी। आलस्य से कई बार आप अपने बने-बनाये काम बिगाड़ सकते हैं। मानसिक रोग या तनाव हो सकता है। दुर्घटना का भय है, अतः वाहन चलाते

समय सावधानी बरतें। आपकी माता को आप्रेशन का भय है। भाई को परेशानी या आपको बहन के सुख का अभाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. मुफ्त का माल या दान न लेवें।
2. हाथी दांत घर में न रखें।

उपाय :
1. बड़ा भाई जीवित हो तो लाल रुमाल रखें।
2. भाई और साले की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप मेहनत से धन कमा कर, धनी होंगे। आप पत्नी भक्त, स्वार्थी, पुत्र सुख से वंचित तथा संगीत प्रिय हैं। धन-दौलत के मामले में आपका ससुराल पक्ष निर्बल रहेगा। आपके जीवन में राजयोग प्राप्ति के शुभ योग हैं। आपका विचार अस्थिर होता है। आप कुछ देर बाद या बातों-बातों में अपना विचार बदल लिया करते है। आपको कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होने की संभावना है। आप ज्ञानी और उपदेशक भी हो सकते हैं। आप या आपके पिता दादा बहुत बड़े धनवान होंगे। आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माणकर्त्ता हैं। आप स्वाभिमानी, परंतु संतान पक्ष से कमजोर होंगे। आपको राजपक्ष से लाभ होना संभाव्य है। आपकी आय अच्छी होगी। आप अपने जन्म स्थान से दूर निवास करेंगे। आप मतलब परस्त होंगे। आप हाजिर-जबाबी और उपयुक्त उत्तर देने वाले हैं। आप का स्वभाव योगी और राजा दोनों तरह का होगा। आपके संपर्क में जो आएगा वह लाभान्वित होगा।

यदि आपके परिवार में लड़कियां या औरतें अधिक होंगी, दुनियावी साधूओं के चक्कर में रहेंगे, जुआ-सट्टा खेलेंगे तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से पिता-सुख में अल्पता की आशंका है। आप पर लांछन लग सकता है या बदनामी भी हो सकती है। आप मांसाहारी होंगे तो यात्राएं बहुत होंगी। यात्रा से लाभ होने की उम्मीद कम है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. तोता, भेड़-बकरी न पालें।
2. धागा-ताबीज, जल-भभूती आदि से दूर रहें।

उपाय :

1. दूध-चावल धर्म स्थान में देवें।
2. फिटकरी से दांत साफ करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से वकील-जज या उच्च पद प्राप्त होगा। आपके दिमाग में उपजी बातें अवश्य पूरी होगी। आप दूसरों का भला करते समय अपने नुकसान का ख्याल नहीं रखेंगे। आपको लॉटरी से या अचानक धन की प्राप्ति हो ऐसी उम्मीद है। आपको सरकार द्वारा भी लाभ प्राप्त होगा। आपको उत्तम भवन एवं सवारी का सुख मिलेगा। 24वें वर्ष की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करेंगे। आप बहुत ही चालाक और भाग्यवान होंगे। आप सभी के मददगार होंगे। आपका स्तर अपने पिता के स्तर से ऊंचा होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करेंगे तो आप अच्छे अफसर हो सकते हैं। सरकारी यात्रा का शुभ परिणाम मिलेगा। आपके माता-पिता की दीर्घायु, चाचा-ताऊ सुखी होंगे। आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे आपको मानसिक शांति तथा मन को प्रसन्नता मिलेगी। आप भूमि के स्वामी होंगे तथा आपका मकान आलीशान होगा। लक्ष्मी आपके घर में निवास करेगी। आपको स्त्री-औलाद और माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। भूमि में गड़े धन की प्राप्ति हो सकती है। लोहा आदि, मशीनरी के काम से बहुत लाभ उठाएंगे।

यदि आपका निर्धन व्यक्ति से संबंध रहा, टूटा सामान या टूटे हुए खिलौने चिपकाने या जोड़ने वाले पदार्थों आदि से जोड़ कर रखे होंगे, परस्त्री संबंध हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अपनी बेड़ी डोव मल्लाह की तरह आपका हाल होगा। आपके जीवन का 23, 34, 48 एवं 55वां वर्ष अच्छा होगा परंतु इन वर्षों में माता पर बुरा असर पड़ेगा। आप पर कुछ लांछन लग जाएं या सम्मान को खतरा पहुंचे ऐसी आशंका है। आप पर कोई भयानक मुसीबत नहीं आएगी। एक से अधिक औरतों से संबंध रखने का फल अच्छा नहीं होगा। राजा होते हुए भी फकीरी लेने का विचार दिमाग में आता रहेगा। आपकी पत्नी के वक्षस्थल या गर्भाशय में कैंसर हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. टूटे हुए खिलौने घर में न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

उपाय :
1. धर्म मंदिर में हर रोज सिर झुकाएं।
2. कुल पुरोहित की सेवा करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से जीवन भर धन-संपत्ति, संतान सुख में वृद्धि होगी। आपको सभी पक्ष से शुभ फल प्राप्त होंगे। आप बहुत परिश्रमी होंगे। आपको भाई का सुख प्राप्त होगा। नौकरी-व्यापार ठीक से चलते रहेंगे। दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होती रहेगी। आप सम्मानीय व्यक्ति होंगे। आप ईश्वर पर विश्वास करें तो आपकी सभी कामनाएं पूरी होंगी। पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपके जीवन के साठ साल की उम्र तक खूब आमदनी होगी। आप साधू-संतों की वेशभूषा पहन कर आशिकाना ख्याल के मालिक होंगे। चारित्रिक सुधार के बावजूद आपका जीवन सफल रहेगा। आपके शत्रु आप से दबे रहेंगे। आपके भाई तथा लड़के की किस्मत अच्छी होगी। आपको दुनियाबी सहायता मिलेगी। आप प्रेम संबंध बड़ी होशियारी से करेंगे। आप कामयाब आशिक होंगे।

यदि आपने शेरमुख घर में रिहाईश की, राग-रंग से नफरत रखी, आलू का व्यापार किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से घर में बीमारी लगी होगी। रक्तदोष एवं शुक्राणु दोष के कारण औलाद की पैदाइश में रुकावट हो सकती है। संतान जन्म में बाधा की आशंका हो तो (किसी वैद्य/हकीम की सलाह लेकर आयुर्वेद दवाईयों का प्रयोग करें)। आप किसी के साथ बुराई करें तो आत्मघात जैसा फल मिलेगा। दूसरे के बच्चे को गोद लेने पर अपनी संतान बाधा दूर हो जाएगी। बुराई करने पर आपके बच्चों पर गलत प्रभाव पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पघुओं पर जुल्म न करें।
2. घेर मुख घर में रिहाइघ न करें।

उपाय :

1. आलू, घी या दही का दान करें।
2. बिना सींग की गाय की सेवा करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगे। आप मनमौजी होंगे। आर्थिक हालत सामान्य रहेगी। भागीदारी के काम से लाभ अधिक होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं तो आपको सरकारी विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगें, ऐसी पूरी संभावना है। वैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठे रहने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।

यदि आपने अपनी रिहाईश गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुई, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लेवें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता का सुख कम ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। शराब-मांस, अंडे का सेवन-भोजन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढापे में आंखों की दृष्टि कमजोर होने की आशंका है। आपके अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर मकान बना लेंगे तो असमय मौत को बुलावा हो सकता है। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगे। अगर सरकारी अधिकारी हुए तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा या जन्म के समय आकाश पर बादल छाये हुए होंगे, ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की उम्र तक समय मध्यम है जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी-रोटी के लिए दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगे। आपको संतान सुख अच्छी या बुरी अवश्य मिलेगी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद ससुराल से लोहा, बिजली का समान, काले-नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली की जेर, चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे

असर से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला-बदली अधिक बार होगी। 11-21-42 वर्ष आयु में पिता के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा-मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव के होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूं दान देवें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगे। जैसे-जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे धन में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात के पक्के होंगे। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगे फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगे। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपकी पत्नी के जितनी संख्या में भाई-बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होंगी। 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि आने वाले 40 वर्षों तक के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परस्त्री गमन किया। अपनी पत्नी से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरु हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठा वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन स्त्री और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगे। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगे। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :

1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।
2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।वर्ष के पूर्वार्द्ध में अष्टम स्थान का गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बना रहा है अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने कार्य व्यवसाय में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करना चाहिए। आपके कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए सावधानी बरतें।

02 जून के बाद कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें आपका भाग्य साथ देगा। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद दशमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी पदोन्नती भी होगी और आपको कार्यस्थल पर मान-सम्मान भी प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

02 जूनके बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। आप इच्छित बचत कर पायेंगे। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में धन खर्च हो सकता है। आप बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उनकी बीमारी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहींरहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

02 जून के बाद समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति में मददगार होगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके बच्चों कीउच्च शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। प्रथम संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा।आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

02 जून के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियो की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य के कारण पढ़ाई में व्यवधान बना रहेगा।

02 जून से इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा के लिए समय काफी अच्छा है। तकनिकि शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार जातकोंको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। 02 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है। 31 अक्टूबर के बाद आपकी जन्म भूमि की यात्रा भी हो सकती है या पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा।पंचमस्थ शनि के प्रभाव से साधना, योग या मन्त्र सिद्धि के प्रति आप अधिक समर्पित होंगे। 02 जून के बाद आप किसी को गुरु बना कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्ठान्न के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे।स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप

दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे।साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्ति समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे।अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते है जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से

भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते है। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे।साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति

आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा।साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा

उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष तृतीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपको कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपका भाग्य आपके साथ है इसलिए आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ेगा।

जून के बाद समय अति उत्तम है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। आपके कार्य व्यवसाय में समस्त शत्रुओं का दमन होगा। इस समय के अंतराल में आपके ब्राण्ड को पहचान भी लि सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को भी लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। धन की अनुकूलता के कारण आप खर्च भी अधिक करेंगे। 26 नवम्बर के बाद अचानक आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी, जिससे आप आर्थिक स्थिति को और भी सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रवाभ से आपके समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ-चढ़ कर भाग लेंगे।

जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। परिवार में

परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अति उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गर्भाधान के लिए बहुत ही शुभ समय चल रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्रप्ति होगी। शिक्षा के प्रति इनकी रूचि बढ़ेगी व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि भाग्य साथ नहीं देगा। अपने मेहनत के बल पर ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ेगा। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद मौसम जनित बीमारी से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है परन्तु आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। इस समय नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार आपके लिए लाभप्रद रहेगा। जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठ कर टहलना आपके स्वास्थ्य के लिए अमृत सिद्ध होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। उनको करियर में सफलता मिलेगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी जो अधिक अनुकूल या उन्नति कारक होंगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ एवं अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और उस ज्ञान के माध्यम से परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नाान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में बहा दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे तथापि अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा तथा उनमें आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध हो जाएंगे। मिष्ठान्न के प्रति इस समय आपके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु आपसे इस समय निर्बल रहेंगे तथा उन्हें पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अतिरिक्त साधनों से धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभफल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोग से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस समय पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करना चाहिए।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा अन्य लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे।साथ ही आप धन एवं सुखोपभोग की सामग्री अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यो में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीड़ित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यो को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य अर्जित करेंगे। साथ ही पुत्र संतति से आपको इस मास में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफल भी रहेंगे।आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस समय आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग भी प्राप्त होगा साथ ही समाज में भी आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से आवश्यक सहयोग अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुखार्जन में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगे तथा समाज में आदरणीय समझे जाएंगे।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता

विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रु भी आपसे बलवान रहेंगे एवं आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित किया जा सकता है। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में भी आपके आदर में न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्रों से आपका इस समय मन मुटाव रहेगा तथा मानसिक इच्छाएं अपूर्ण ही रहेंगी। अतः तनाव से बचने के लिए संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित कर सकेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु प क्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा चिन्तित भी रहेंगे।साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल

हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे।साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे।धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते है।साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। आपके घर में इस मास में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। सन्तति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। समाज में सर्वत्र इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा भाग्योन्नति संबधी शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे।आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी इस मास में योग बनेगा ।साथ ही सरकारी तंत्र से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा अन्य कारणों से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी।अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।साथ ही बन्धु तथा मित्र वर्ग से मधुर तथा घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा दूसरे लोगों की

भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे।अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक फैलेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में स्त्री तथा पुत्र से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या वस्तुओं को अर्जित कर सकते है। इस प्रकार आप आनन्द पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय स्त्री पक्ष से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध हो जाएंगे इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे इस मास में आप इच्छित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपको रूके कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ समय समय पर अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप ठंड या वात से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा इस समय आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगे जिससे आप आर्थिक दृष्टि से परेशान होंगे।साथ ही आप दुष्ट मनुष्यों की संगति में भी रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अधिक परिश्रम के द्वारा अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में उपेक्षा का भाव

रहेगा।संबधियों तथा मित्रों से भी आपके मधुर सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा इनसे परस्पर मनमुटाव रहेगा। इस समय आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी फलतः मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरक्त शत्रु वर्ग से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप शीत से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी तथा बाद में आप पश्चाताप करेंगे। साथ ही आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः संयम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आयस्त्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके कार्य व्यवसाय में विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे। वरिष्ठ लोगों के सहयोग से आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते है परन्तु वे आपका कुछ नही कर पाएंगे और आप अपने सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

24 जुलाई से आपका समय और बढ़िया हो रहा है। व्यापार में बढ़ोत्तरी के संकेत है। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार के विस्तार के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। लाभ में निरन्तरता बनी रहेगी। फरवरी के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष से धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

24 जुलाई से रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ अनावश्यक व्यय करा सकता है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ेगा। निवेश के मामले में सावधान रहें। भाई-बहन या पुत्र के विवाह अवसर पर भी धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति व सहयोग का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपके परिवार में विषमता की स्थिति बन सकती है। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी पड़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान के लिए उत्तम योग बन रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे।

गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह हो सकता है। मार्च से जून तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा उसके बाद फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे। फरवरी के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 मई के बाद आर्थिक स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं हो सकती हैं। द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु छठे स्थान का शनि शीघ्र ही स्वस्थ भी कर देगा। 24 जुलाई से स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप शत्रुओं को पछाड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। गुरु ग्रह के प्रभाव से आप सामाजिक कार्यों हेतु यात्राएं कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर व तन्त्र-मन्त्र के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- माता-पिता की सेवा करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 29 मार्च के बाद समय और उत्तम हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण आप व्यवसाय में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आप कोई नया व्यापार भी शुरू कर सकते हैं और इसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे।

25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। परिवार में खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाऐंगे। 29 मार्च से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव से आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अनावश्यक खर्च से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः अभी से कुछ अतिरिक्त धन संचय करें। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अतः अच्छा यही

होगा की अपनी अपने सहन-शक्ति को बढ़ाएं। अन्यथा आपके संबंध खराब हो सकते हैं। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

29 मार्च के बाद घरेलू वातावरण में कुछ अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। वर्षान्त में सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 29 मार्च से गुरु का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है। उस के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। आपको संतानोत्पति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पढ़ाई-लिखाई भी प्रभावित हो सकती है। संतान को लगातार अथक प्रयास करने के बाद ही सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे और अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

25 अगस्त के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं यकृतजनित बीमारी से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को छोड़कर अपने करियर में आगे रहेंगे। 29 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय और भी अच्छा हो रहा है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती ही रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

25 अगस्त के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको धार्मिक यात्रा भी कराएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को दान देना, भूखे को खाना खिलाना और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। धर्म पत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 17 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन के लिए अच्छा नहीं है। आपके संबंधों में खटास उत्पन्न हो सकती है। किसी भी नए रिश्ते की शुरुआत के लिए भी यह समय शुभ नहीं होगा। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

23 सितंबर के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी ले कर आ रहा है। साल की शुरुआत में निवेश करना सही नहीं होगा क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु जल्दबाजी में गलत फैसला करा सकता है। राहु के गोचर के बाद शारीरिक बीमारी दूर करने में आपका व्यय होगा।

इस समय आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि आने वाले समय में आर्थिक उन्नति किस प्रकार की जाए। क्योंकि 1 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश नहीं करना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में द्वितीस्थ राहु के प्रभाव से परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद-विवाद सामने आ सकते है। संयुक्त परिवार एकल परिवार में बंट सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान व प्रेम प्रणय के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी के बाद वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा।

मामा एवं अन्य संबंधियों को अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह समय बढ़िया रहेगा।

मई के बाद अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखे। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। सितम्बर के बाद समय बहुत बढ़िया रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

राहु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। मई से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा। गलत संगत उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

स्वास्थ्य

इस साल आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका असर आपके जीवन पर पड़ेगा। इसलिए आपके लिए यह बहुत ही जरूरी है कि आप साल की शुरुआत से ही इस ओर ध्यान देना शुरू कर दें। छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी, या सर्दी-जुखाम से आपको परेशानी हो सकती है।

01 मई के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिससे आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ्य जीवन के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें। खान-पान का विशेष ध्यान रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करा सकता है।

मई के बाद आप किसी विवाद अथवा कलह में न पड़े और ध्यान अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें, क्योंकि सारे मुख्य ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अस्थिरता बनी रहेगी। जिस व्यक्ति को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय आपकी यात्राएं अधिक सुखद व मनोरंजन से परिपूर्ण रहेंगी।यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

1 मई के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। विदेशी संपर्कों से आपको लाभ प्राप्त होगा। वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्यांकि राहु एवं शनि का गोचर आपके लिए अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, दान पुण्य, पूजा-पाठ, मंत्र जाप, यज्ञ, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु लग्न भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं लग्न भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्तर के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए जी-तोड़ मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बहुत आसान होगा। आप अपने अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

9 अगस्त के बाद राहु का गोचर व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहा है। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ और लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्यों के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। 18 फरवरी के बाद द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

8 अगस्त के बाद आर्थिक समृद्धि में अचानक कमी आएगी। द्वादश स्थान का राहु कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिससे आपको आर्थिक कमी आ सकती है। अतः इस समय कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें और किसी को उधार पैसा न दें।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक

लगाव बढ़ेगा।

8 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह का संयुक्त प्रभाव आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव आपको अच्छा नहीं लगेगा। आप सामाजिक गतिबिधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

8 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम व मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ से ही आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है, जिससे आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका असर आपके जीवन पर तो पड़ेगा ही। आप किसी बड़े रोग से आहत नहीं होंगे लकिन कुछ परेशानियों का सामना जरुर करना पड़ सकता है।

राहु का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है अतः खुद को बीमारिओं से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। अपने जीवन में सही तालमेल बिठाने के लिए आवश्यक है कि आप खान-पान, योग, ध्यान या सुबह-सवेरे व्यायाम नियमित रूप से करें। 15 अक्टूबर के बाद आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है।

8 अगस्त के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि अभी की मेहनत आने वाले समय में रंग लाएगी और आप अपने लक्ष्य में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 8 अगस्त के बाद यात्रा करते समय या बाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं सप्तम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सकारात्मक रहेगा। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं।

उत्तरार्द्धमेंसमय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। व्यावसायिक जीवन में अचानक व्यवधान आ सकता है। मई के बाद कार्यस्थल पर किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों से सलाह अवश्य लें।

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का उत्तरार्द्धसामान्यरहेगा।द्वादशस्थ राहु के कारण संचित धन में वृद्धि नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आजाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय के अंतराल में आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थगुरुके प्रभाव से इस वर्ष आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगाजिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 5 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिय समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपकी धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपकेसम्बन्धबिगड़ सकते हैं। 12 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह भी हो सकता है।

संतान

वर्षारम्भ आपकी संतान के लिए ठीक-ठाक रहेगा। आपके बच्चे अपने विवेक व बुद्धि से अपने उन्नति के मार्ग बनाएंगे। 5 मार्च से आपके दूसरे बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा।

मई के बाद आपकी प्रथम संतान के लिए समय प्रभावित हो रहा है। उस समय उनकी दिनचर्या व रहन-सहन पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए नहीं तो उनकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वे अपने लक्ष्य से भी भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

मई के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय के लिए आप अपने आप को ऊर्जा रहित महसूस करेंगे।लेकिनकिसी स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च के बाद भाग्य का पूर्ण सहयोग मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

5 मार्च के बाद विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। विदेशी भाषा सीखने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भयात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 5 मार्च के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।मई के बाद से विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मई के बाद तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वादश भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं चुतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण व्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु एकादशस्थ राहु के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपमें से जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में हैं उन्हें वर्षान्त में सफलता मिलेगी। आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। द्वितीयस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं, नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

18 मार्च के बाद चतुर्थ में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। एकादस्थ राहु के कारण अचानक आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पारिवारिक या मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में ही पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

18 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण का के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भवनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपके

माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

अष्टम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

18 मार्च से समय उत्तम हो रहा है। केन्द्र स्थान में शुभ ग्रह की स्थिति प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुदृढ़ रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो एकादश स्थान का राहु आपको शीघ्र ही अच्छा कर देगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 18 मार्च के बाद नौकरी में अवसर मिलेंगे। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये यह समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आपके लिए शुभ है। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव आदि कार्यों में आप बढ़-चढ के भाग लेंगे। 18 मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य को मानेंगे। दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रणीत करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष प्रातः शनिवार को धारण करें। आपको शनि की शुभता प्राप्त होगी।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 28 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने ग्राहक को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके अच्छे कार्य के लिए आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव करते रहेंगे। कुछ लोगों को अपने नौकरों से ज्यादा नुकसान हो सकता है और कुछ लोगों को कम, लेकिन नुकसान का होना तय है। इसलिए आपको अपने नौकरों पर ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। मित्र अथवा साझेदार विश्वासघात कर सकते हैं या फालतू की रणनीतियों के कारण भी हानि होने की संभावना है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। धनागम के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घर परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बना रहेगा। इन सबके पीछे आपका ही

महत्वपुर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए बहुत ही लाभप्रद रहने वाला है। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर राहु केतु का प्रभाव होने से अचानक परिवार में किसी प्रकार की परेशानी आ सकती है। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 28 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उनके लिए यह समय अति श्रेष्ठ है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग हो सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। शनि के कारण घटना-दुर्घटना का योग लगातार बना हुआ है अतः यात्रा के दौरान और वाहन चलाते समय बहुत सावधान रहें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी, जिससे आपकी शारीरिक व्याधियां दूर होंगी। आप अपने दैनिक कार्य में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

28 मार्च के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं, उनके लिए यह समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आप को विदेश यात्रा करा सकती है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। परन्तु 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध और उत्तम रहेगा। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- रुद्राक्ष की माला धारण करें एवं अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर उसका पूजन करें।
- शनि चालीसा का पाठ करें एवं काली वस्तु का दान करें।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि नवम भाव में और सिंह राशि का राहु दशम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा-से-ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आपको अच्छी सफलता मिल सकती है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा होने वाला है, लेकिन 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। जो लोग रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है।

कार्यों में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। कुछ प्रतिद्वन्दी आपके कार्यों में रूकावट डालने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। जिसमें अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग भी मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है।

भूमि, भवनादि खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें नही धोखा मिल सकता है। भूमि व वाहन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोइ बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोइ वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बहुत बढ़िया नहीं रहेगी। अतः जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो

सकता है। अप्रैल के बाद अचानक आपके परिवार में कुछ परेशानियां आ सकती हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए एवं बड़े विवेक से काम लेना चाहिए।

6 अप्रैल के बाद माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह समय अच्छा नहीं है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह सामाजिक मान-सम्मान में कमी करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो उसका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। जिससे उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योग करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ है।

षष्ठस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी इच्छित व्यक्तियों को

मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। जो व्यक्ति अपना व्यवसाय करना चाहते हैं उनको ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। 6 अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

पूरे वर्ष छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी। ये सब यात्राएं आपके लिए लाभदायक रहेंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जिससे आप संतुष्ट नहीं रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना या गरीबों को खाना खिलाने में आपको संतुष्टि मिलेगी या कह सकते हैं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में श्वेतार्क गणपति स्थापित कर उसका पूजन करें एवं गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ गं गणपतये नमः।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु छठे भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के कारण आपके कार्य व्यवसाय में कुछ शत्रु व्यवधान डाल सकते हैं। अतः बिना किसी पर विश्वास किये अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे तरीके से चलाएं।

15 अप्रैल के बाद आमदनी के नए-नए स्रोत मिलने की उम्मीद है। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा, जिससे आपको व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। साझेदारी में काम कर रहे लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 27 अगस्त के बाद दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपकी व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी कार्य से आपको प्रसन्न करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। परिवार में बीमारी के कारण भी आपके खर्चे अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति बेहद शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवश करेंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर राहु

की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाती है। आपके माता-पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको शारीरिक परेशानी हो सकती है।

15 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। जिससे खुशी का माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु 27 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती। अतः उस समय के अंतराल में आपको पारिवारिक मामलों को लेकर बहुत ही सावधान रहना चाहिए।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्षारम्भ में संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा।

15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बहुत ही अच्छा रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। छठे स्थान का गुरु छोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा।

15 अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य धीरे धीरे अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। षष्ठस्थ गुरु पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अवश्य सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको अप्रैल के पहले ही नौकरी मिल सकती है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं। उसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी।

15 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से संबंधित यात्रा होगी। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। नवम स्थान का शनि भगवान के प्रति भक्ति का भाव उत्पन्न करेगा। जिससे आप मन्त्र पाठ, साधन और परमात्मा की भक्ति करेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर और भी अच्छा हो रहा है। उस समय आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

साल का प्रारम्भ आपके लिए बहुत ही उत्तम रहेगा। कारोबारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा।

16 सितम्बर से आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उस में सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि भवन वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं तो उसके लिए भी समय अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं, जिससे आप कुछ परेशान भी होंगे। अतः इस समय के अंतराल में अपना आत्म शक्ति बढ़ाएं। 16 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी रूप से आर्थिक उन्नति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का

सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। सितम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ आपकी संतान के लिए उत्तम रहेगा। उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान का गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकता है, जिससे उसकी पढ़ाई लिखाई प्रभावित हो सकती है। परन्तु चिंता की कोई बाद नहीं है क्योंकि 16 सितम्बर के बाद समय फिर से शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति कम होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं, जिससे आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत ही शुभ है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगा। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। नवम स्थान के राहु लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। परन्तु सारी यात्राएं अचानक होंगी। पूर्व निर्धारित कोई भी यात्रा नहीं कर पाएंगे। छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

26 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति रुचि बढ़ेगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्य भी करेंगे। अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे। तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र व साधन के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं दशम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं नवम में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में कुछ व्यवधान आ सकते हैं। लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी समाधान निकाल लेंगे। मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। दशमस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वालों की पदोन्नति होगी। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है।

अक्टूबर के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तथा उसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं तो अनुकूल स्थान पर स्थानानान्तरण होगा। नौकरी व कार्य व्यवसाय में आप अच्छी उन्नति करेंगे। समय आपके लिए अनुकूल है फिर भी आपको सावधान रहना चाहिए क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अतः अपनी गुप्त बात सब किसी के साथ शेयर न करें तथा किसी पर अत्यधिक विश्वास भी न करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश सम्बन्धी व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें।

11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभता का संकेत दे रहा है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि पूरे वर्ष राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल रहेगा। अक्टूबर के बाद एक साथ शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आपका धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता-पिता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे। उनके साथ झगड़ा होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें।

मई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। अक्टूबर के बाद आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। भाई बहनों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। अतः उनको अच्छी सफलता मिलगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

11 मई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु एवं राहु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान रहेंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

11 मई से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे भी वृद्धि होगी जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। क्योंकि पूरे वर्ष राहु अष्टम स्थान में गोचर करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु शनि एवं राहु संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। 11 मई के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है।

इन यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। 11 मई से गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः मन्त्र का पाठ करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा आप सारे प्रतिद्वन्दियों को पीछे छोड़कर आगे निकल जाएंगे। यदि आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए और भी शुभ हो रहा है। राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। कानून से जुड़े लोगों, वकील, पुलिस आदि को अच्छा लाभ मिलेगा। आपसे उच्चाधिकारी व वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। भूमि, वाहन से संबंधित कार्य करने वाले लोगों को वांछित सफलता मिलेगी। 4 नवम्बर के बाद आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको उम्मीद से ज्यादा सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम के स्रोत बढ़ेंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की भी प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक उन्नति के लिए और भी श्रेष्ठ हो रहा है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को विशेष लाभ मिलेगा। आपका व्यापार खूब चमकेगा। अकस्मात् धन मिलने का योग बन रहा है। संचित धन में वृद्धि होगी जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 4 नवम्बर के बाद शेयर बाजार, जुआ, सट्टा व लॉटरी इत्यादि से धन प्राप्ति का प्रबल योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का

माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ है। आपके अंदर कर्तव्यपरायणता का भाव भी विद्यामान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से आप परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके मन में माता पिता के प्रति विशेष स्नेह का भाव होगा। 5 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है सप्तम स्थान का राहु धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकता है जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। परन्तु जून के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद समय पूरा साल अनुकूल बना रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में एकादशस्थ शनि के प्रभाव से मान सम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। जिससे आप अत्यधिक संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। यह समय आपके बच्चों के लिए शुभ है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 13 जुलाई के बाद कुछ परेशानियां आ सकती हैं। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे। 4 नवम्बर से संतान इच्छित व्यक्तियों को पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। 3 मार्च के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य बहुत उत्तम नहीं रहेगा। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना है। लग्न स्थान राहु का प्रभाव होने के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे। 3 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही उत्तम हो रहा है। शिक्षा

के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

2 जून से अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 4 नवम्बर के बाद उन्नति के योग बन रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु लम्बी यात्राओं का योग कम ही बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। 3 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने घर में देशी घी का दीपक जलाएं तथा दुर्गा जी के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन चींटियों एवं चिड़ियों को दाना डालें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। इस अवधि में वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। कुछ प्रतिस्पर्धी सामने आएंगे लेकिन उनसे आपको विशेष फर्क नहीं पड़ेगा। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण विपरीत परिस्थितियों में भी आपकी मति भ्रमित नहीं होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। सत्ताधारी व्यक्तियों से संबंध मधुर होंगे और आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। योजनापूर्ण की हुई यात्रा से असीमित लाभ होगा। सप्तम स्थान का राहु अचानक कोई समस्या उत्पन्न कर सकता है, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। आमदनी के स्रोतों में वृद्धि होगी। फलस्वरूप धन संचय करने में सफलता मिलेगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। कोई मुनाफे का बडा सौदा हाथ लग सकता है। वर्ष के आरम्भ में अचल सम्पत्ति मिलने का योग बन रहा हैं। किसी लॉटरी या बीमा के माध्यम से धन लाभ होने की उम्मीद है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो आपको उससे छुटकारा मिल सकता है। विदेश के माध्यम से या किसी दूर की यात्रा के माध्यम से धनार्जन होगा। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। जमीन जायदाद खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें तथा कागजी मामलों में किसी पर विश्वास न करें।

घर-परिवार, समाज

परिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा तथा सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई-बहनों की उन्नति तथा आपके उनके साथ सम्बंध और मधुर होंगे। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्य का घर आगमन अथवा उसके साथ सम्बंधों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति

बहुत ही अच्छा रहेगा। यदि कोई अदालती केस चल रहा होगा तो उससे छुटकारा मिलेगा।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आपके व्यक्तित्व आकर्षक होगा। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 6 अप्रैल के बाद बच्चों को सफलता लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। संतान का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, परन्तु जून के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़कर कार्य करेंगे। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसमजनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्षारम्भ में उससे भी छुटकारा मिल जाएगी। 6 अप्रैल से 28 जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से शुभ हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप मन को एकाग्र करने के लिए योग क्रियाएं भी कर सकते हैं। इससे आपमें उत्साह का संचार होगा और आप अपने स्वास्थ्य को अच्छा बनाए रखने में कामयाब रहेंगे। लेकिन सप्तमस्थ राहु की लग्न पर दृष्टि बीच बीच में छोटी मोटी बीमारियां व मानसिक अशांति दे सकती है। अपने माता पिता के स्वास्थ्य का ख्याल रखें। वर्षान्त में आपको नेत्र संबंधित पीड़ा हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण वांछित उन्नति मिलेगी। डॉक्टर, इंजीनियर व राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। आपको महत्वपूर्ण व गोपनीय कार्य करने का मौका मिल सकता है। व्यवसाय व नौकरी के सिलसिले में देश विदेश की यात्रा के योग निर्मित हो रहे हैं। आप मनचाहे स्थान पर तबादला कराने में सफल होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। वर्षान्त में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में आप एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे अर्थात् कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह साम मन्दिर जाना या पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- तुला दान करे (अपने वजन के बराबर साबुत अन्न का दान करें।)
- अपने पूजा घर में देशी घी का दीपक जलाएं तथा लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करें तथा सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक कार्यों के लिए यह वर्ष शुभ है। व्यापार में उन्नति तथा कार्यों में सफलता मिलती रहेगी। समय-समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होते हुए भी आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे। 6 मई के बाद आपको किसी बड़ी कम्पनी के साथ मिलने या उसके साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। आप दैनिक कार्यों में स्फूर्तिवान बने रहेंगे और कार्यक्षेत्र में अच्छा करते रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होगी।

26 सितम्बर के बाद व्यापार में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। यदि आप कुछ नया कार्य करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। कार्यस्थल पर अपने परिजनों को सम्मिलित न करें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाएं रखें। आप अपने परिश्रम के बल पर प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पारिवारिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 6 मई के बाद अचानक धन लाभ होने के साथ-साथ रुके हुए पैसे की भी प्राप्ति होगी यदि किसी भी व्यापार में धन निवेश करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा।

आपके अन्दर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे धनार्जन में सहायता मिलेगी। सट्टा जुआ जैसे अनैतिक कार्यों से बचें नहीं तो आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है। 26 सितम्बर के बाद निवेश के मामले में जल्दबाजी न करें तथा बहुत सोच विचार कर ही निर्णय लें क्योंकि यह समय आर्थिक स्थिति के लिये शुभ नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक माहौल के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित

सम्मान प्रदान करेंगे।

आपके भाईयों की उन्नति होगी। मातुल पक्ष के लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे तथा सुख व सम्पन्नता का भाव बना रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद पारिवारिक माहौल किंचित प्रतिकूल होगा परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। षष्ठस्थ राहु के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा सामाजिक लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चों को उन्नति करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। प्रथम संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो 6 मई के बाद विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

मई से जुलाई तक का समय बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। लेकिन उसके बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस अवधि में बच्चों पर ध्यान देना श्रेष्ठ होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी रह सकती है। आलस्य, मानसिक कष्ट व थकावट की स्थिति बनी रहेगी। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको सुख, शान्ति व शारीरिक आरोग्या प्रदान करेगा तथा आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

26 सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अपने सेहत का ध्यान रखें। मौसमजनित बीमारियों से परेशान होंगे तथा आपका मोटापा बढ़ सकता है। खान पान पर विशेष ध्यान दें। घी, मख्खन व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्ति हेतु आापको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील बने रहें। 6 मई के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस अवधि में आपको वांछित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी।

तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनचाहे स्थान पर तबादला हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपके दैनिक पूजा पाठ को प्रभावित कर सकती है, परन्तु आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके कारण आप अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे और कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे। वर्षान्त में दान पुण्य अधिक करेंगे तथा गरीब और मजदूरों की सहायता खूब करेंगे। तन्त्र-मन्त्र के प्रति भी आपका विश्वास बढ़ेगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन सरसों का तेल दान करें तथा संन्ध्या के समय पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं छटे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं द्वादश भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। व्यवसाय में आप निवेश अधिक करेंगे परंतु लाभ कम होगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में रुकावटें आ सकती है। परिश्रम के बराबर फल नहीं मिलेगा। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपको अपने जन्म स्थान से दूर सफलता मिलेगी। यदि आप विदेश में व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं तो वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ है। नौकरी करने वालों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

27 अगस्त के बाद आपको अधिक परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। यदि कहीं आपके पैसे फंसे हुए हैं तो मिल जाएंगे। व्यापार में विस्तार की संभावन बन रही है। इस अवधि में आप किसी के साथ मित्रता में कोई कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। आपको अच्छी सफलता मिलेगी तथा आपको साझेदार का पूर्ण सहयोग मिलेगा। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपको आर्थिक रूप से सतर्क रहने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिशि करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें यदि कोई आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें।

संपत्ति संबंधी कार्यों में निवेश करते हुए सावधानी बरतें। जहां तक हो सके संपत्ति के दस्तावेज भली भांति जांच लें। किसी भी ऐसे कार्य में धन का निवेश न करें जिसमें जोखिम हो। आर्थिक चिंताएं बनी रहेंगी लेकिन जरूरत पड़ने पर थोड़े विलंब से धन का आगमन होता रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तताओं के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः आत्मविश्वास बनाए रखें।

आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। वर्ष के उत्तरार्द्ध में पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

संतान

वर्ष प्रारम्भ संतान के लिए शुभ है। नवविवाहितों को सन्तान के जन्म का शुभ समाचार प्राप्त होगा। आपके बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे तथा वे सफलता के मार्ग पर सबसे आगे रहेंगे, परन्तु 10 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो सकते हैं। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं पंचमस्थ राहु के कारण आपका गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप संतुष्ट रहेंगे। लग्नस्थ गुरु के कारण मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपकी कार्य क्षमताओं का विकास होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

जून में गुरु ग्रह का राशि परिवर्तन आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन करें तथा मानसिक तनाव से स्वयं को दूर रखने के लिए योग, ध्यान, व्यायाम आदि नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके करियर के लिए पूरी तरह से अनुकूल है। आप किसी नये पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाह रहे हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा आप अपने लक्ष्य में सफल होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें नहीं तो शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु विदेश गमन की प्रबल संभावना हैं। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। तीर्थ यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

उत्तरार्द्ध में नौकरीपेशा लोगों के लिए परिवर्तन का योग बना हुआ है। यह तबादला इनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। व्यापारिक व्यक्तियों की विदेश यात्रा होगी और उस यात्रा से आर्थिक लाभ का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बनी रहेगी। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों में अधिक व्यतीत होगा। जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन आदि।

गुप्त विद्याओं व पराविद्याओं में रुचि जागृत होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में योग, ध्यान, पूजा पाठ, प्राणायाम आदि की ओर रुझान होगा। ईष्ट देव व गुरु कृपा प्राप्त होगी।

- शनिवार के दिन छाया दान करें। (कांसे के पात्र में सरसों का तेल डालें तथा उसमें अपनी परछाई देख कर उस बर्तन का दान करें।)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन चिड़ियों को दाना डालें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में शत्रुओं द्वारा रुकावट डाली जा सकती है अतः बिना किसी पर विश्वास किये आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वालों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे समय समय पर आपकी सहायता करते रहेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी नेतृत्व क्षमता उभर कर सामने आएगी। कठिन परिश्रम आपको सफलता दिलाएगा। साहस बाधाओं को दूर करने में आपकी मदद करेगा और यह आपकी किस्मत को भी चमकाएगा। मन की शांति के लिए प्रतिस्पर्धा से जुड़ी चिंताओं को अपने पास न भटकने दें। आपके मस्तिष्क में भविष्य के लिए योजनाएँ रुप लेंगी। इन योजनाओं से आपको भविष्य में अच्छा लाभ होगा ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं सुख प्राप्त हो सकता है। पैतृक सम्पत्ति या ससुराल पक्ष से धन मिलने के योग बन रहे हैं। वर्षान्त सुखद नहीं है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में महिला मित्र के ऊपर खर्चा अधिक होगा जिससे आपका बजट गड़बड़ा सकता है। धन संबंधी मामलों में आपके खर्चे कुछ बढ़ सकते हैं। घरेलू खर्चों की पूर्ति के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने शौक पूरे करने के लिए भी आप कुछ ज्यादा खर्चा कर सकते हैं। अपने खर्चों को नियंत्रित करने की कोशिश करें। धनागमन कुछ मिला-जुला रहेगा अथवा यह भी संभावना बनती है कि धन आता तो रहेगा परन्तु द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके पास टिक नहीं पाएगा। बहुत सी जिम्मेदारियों को निभाने में आपके धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या बच्चे के जन्म के माध्यम से हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

30 जुलाई के बाद हर कदम पर जीवनसाथी का साथ मिलेगा। घर की खुशियां ही खुशियां होंगी। माता-पिताजी का प्यार और आशीर्वाद पूरे वर्ष मिलता रहेगा। घर में कोई शुभ कार्य होगा तथा उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। बच्चों को लेकर समस्या का सामना करना पड़ सकता है। 19 सितम्बर के बाद अचानक आपकी माताजी की सेहत खराब हो सकती है अतः उनकी सेहत पर विशेष ध्यान देना दें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ है।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप संतान को लेकर अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। परंतु चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। गर्भवती महिलाओ को सावधानी की आवश्यकता है।

30 जुलाई के बाद दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल हो रहा है। उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा उसके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रथम भाग अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो आपको परहेज की ज्यादा जरूरत है। आंख, पेट, पाचन और नसों से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। ईलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमरियों से बचा जा सकता है।

30 जुलाई के बाद का समय सेहत के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। लग्न स्थान का गुरु आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमताओं में वृद्धि होगी। इस अवधि में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आपकी रोगप्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक आरोग्यता तथा मानसिक संतुष्टि प्रदान करेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रथम भाग उत्तम रहेगा। छठे स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी

व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ होने की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित कर सकता है तथा आपके करियर में एकाग्रता नहीं रहेगी जिससे आपका मन अशान्त रहा सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। सामुद्रिक व व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।

30 जुलाई के बाद आप छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। 19 सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में राहु के पंचम भाव में गोचर के चलते आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि अधिक नहीं रहेगी। घर में साफ-सफाई, पूजा-पाठ व पवित्रता का माहौल बनाने व माता की सेवा करने से राहु के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों से तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बढ़ेगा। उस अवधि में आप धार्मिक कार्य कर, गरीबों को दान दें तथा तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल दें एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- अपनी दिनचर्या सुधारें व तामसिक वस्तुओं का सेवन न करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने गले में दुर्गा बीसा यन्त्र का कवच धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में कुछ अच्छा करेंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत सृजित होंगे। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। इस समय के अंतराल में आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

चतुर्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान व परेशानियां आने की संभावन बन रही है। परन्तु आप अपने विवेक से उन सभी परेशानियों का हल निकाल लेंगे तथा अपने प्रतिद्वंदियों को करारा जबाव देंगे। नौकरी करने वाले जातकों के लिए यह साल अच्छा नहीं है क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अचानक किसी प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण करा सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। 16 फरवरी के बाद तृतीय स्थान का गुरु आपके भाईयों से लाभ प्राप्त करा सकता है। आर्थिक प्रगति के लिए आप कोई नई योजना सोच सकते हैं। कोई पुराना उधार दिया धन अचानक वापिस मिलने की भी संभावना है। आमदनी हेतु आपके द्वारा किये गए प्रयास रंग ला सकते हैं। परिवार में किसी सदस्य की सेहत खराब हो सकती है जिसके इलाज में आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। इस वर्ष अचानक कोई बड़ा निर्णय न लें। योजनाबद्ध तरीके से ही कोई कार्य सम्पन्न करें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर निवेश के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में भावनात्मक लगाव की कमी बनी रहेगी, जिससे परिवार में वैमनस्य व वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। माता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अतः उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होती रहेगी। 16 फरवरी के बाद आपके भाईयों के लिए समय शुभ हो रहा है उनकी उन्नति होगी। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे।

जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। अतः आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके बच्चों की बौद्धिक शक्ति काफी अच्छी रहेगी।

यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य के मामले में आपको थोड़ा सा संभलकर चलने की जरुरत है। कार्यों की अधिकता की वजह से आप शारीरिक तौर पर कमजोरी व थकान अनुभव करेंगे। मौसम के बदलाव से पैदा होने वाली बीमारियों के प्रति सतर्क रहें। मोटापे से पीड़ित लोगों को मांसपेशियों में दर्द की शिकायत रह सकती है। छोटी-छोटी बीमारियों को नजरअंदाज करने की भूल न करें। जो लोग लंबे समय से बीमार हैं, उन्हें अपनी सेहत का खास ख्याल रखना होगा नहीं तो स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है।

पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। आपको अपने मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप अपने करियर में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो इस वर्ष अथक परिश्रम व संघर्षसात्मक परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करेंगे। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने कार्य क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त करेंगे एवं अपनी संस्था में सम्मान प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

चतुर्थ स्थान का राहु प्रतिकूल स्थान पर तबादला करा सकता है, जिससे आपका मन विचलित रह सकता है। 16 फरवरी के बाद धार्मिक यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

इस वर्ष आपको अपने काम से संबंधित प्रवास पर जाना पड़ सकता है। जो व्यक्ति विदेश में रहकर कार्य करने की योजना बना रहे हैं इस अवधि में उनकी यह योजना कार्यान्वित हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ शनि के कारण इस वर्ष आपके धार्मिक कार्यों में अधिक व्यवधान आने वाला है तथा दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगी। आप चाहकर भी कोई पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आलस्य की भावना बनी रहेगी तथा आपकी यही आलस्यता धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगी। 16 फरवरी के बाद आपकी गुप्त विद्याओं, पराविद्याओं व गुप्त ज्ञानार्जन में रुचि जागृत होगी। आपकी पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन में अधिक व्यतीत होगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डाल कर खिलाएं।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले के धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह के गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना बन रही है। नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है। जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय, नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

पूरे वर्ष आप शनि के प्रभाव में रहेंगे। इसलिए कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। आपकी साझेदारी किसी स्त्री से है तो उसमें भी दरार आ सकती है। इस वर्ष आपको व्यापार में पैसों के लेन-देन करने समय सतर्क रहना होगा क्योंकि लग्न स्थान का शनि नुकसान या हानि करा सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा लेकिन निवेश में लिया गया जोखिम आर्थिक नुकसान दे सकता है। धनेश गुरु तृतीय भाव में स्थित है जो किसी सामाजिक कार्य में धन व्यय कराएगा।

निवेश के मामले में सावधानी रखना जरूरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लें। संपत्ति के क्रय विक्रय संबंधी कार्यों में वर्ष का उत्तरार्द्ध सफलता लेकर आ रहा है, लेकिन अंतिम निर्णय सोच समझ कर लें।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपके मान सम्मान में लगातार वृद्धि होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होंगे। तृतीय स्थान में गुरु की स्थिति सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। समाजिक कल्याण के लिए आप कोई संस्था व एन जी ओ की स्थापना कर सकते हैं। परन्तु पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु घरेलु वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में कुछ लोगों के साथ वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। इस वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। परिजनों के साथ आप आनन्दित रहेंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में

सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। परन्तु मार्च से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहने वाला है। इस अवधि में संतान के स्वास्थ्य व कार्य संबंधी रुकावटों के लिए थोड़े चिंतित रहेंगे। जहां तक हो सके संतान से तक वितर्क करने से बचें। वरना वैचारिक मतभेद व रिश्तों में कड़वाहट आ सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। आपकी संतान की विशेष व्यावसायिक उन्नति भी होगी तथा वे अपने प्रतिद्वंदियों से बेहतर कर सकने में सफल होंगे।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अतः स्वयं को संतुलित एवं नियमित रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह समय उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहने वाला है। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है क्योंकि यह आपके लिए धोखा हो सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। नौकरी करने वालों के लिए स्थानांतरण का योग बन रहा है जो कि उनके लिए प्रतिकूल होगा। यह स्थानांतरण लंबे समय के लिए हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तृतीयस्थ राहु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी हो सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा

भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आपके सभी पूजा पाठ में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण आपकी धार्मिक यात्रा होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपने घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे, जिसमें आपके घर परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

- शिवजी की उपासना करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- माता-पिता सहित बड़े बुजुर्गों की सेवा करें तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(14/05/2010 - 14/05/2030)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 14/05/2010 को आरम्भ होकर 14/05/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद तथा फैशन डिजाइनिंग का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसकी अष्टम भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। द्वितीय भाव धन, लाभ, जगत्व्यापी यश, अधिकार, दाहिना नेत्र, याददाश्त, कल्पना शक्ति, जिह्वा, दाँत, ठोढ़ी तथा पारिवारिक सदस्य का द्योतक है। यह मृत्यु का भाव या मारक स्थान भी कहलाता है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र द्वितीय भाव, जो धन, परिवार, तथा जगत्व्यापी स्रोत का द्योतक है, द्वितीय भाव में स्थित है तथा इस भाव को बली कर रहा है जिसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

इस दशा काल में, जो आपके पक्ष में है, आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। स्त्री से या विवाह से तथा दूसरों के सहयोग से भी धन की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आप व्यावसायिक स्तर पर सुभ्यस्त रहेंगे तथा वही व्यवसाय अपनाएंगे जिसमें आप उन्नति कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नति के कुछ अवसर मिलेंगे और इस प्रकार आप अपने भविष्य में उन्नति करेंगे। आपको क्रियात्मकता या फैशन डिजाइनिंग से संबंधित काम करने के कुछ अवसर मिल सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपको विवाह में या जीवन साथी से धन की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही सफल तथा खुशहाल होगा। आपके जीवन साथी आपका बहुत ही सहयोग करेंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत उत्साहपूर्ण होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल आपकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए शुभ होगा।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(14/03/2023 - 14/05/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 14/05/2010 को प्रारंभ हुई थी और वद 14/05/2030 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 14/03/2023 को प्रारंभ होकर 14/05/2026 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शनि आयुष्कारक है। अष्टम भाव में इसकी स्थिति बहुत शुभ मानी जाती है।

इस अवधि में आपको कई जिम्मेदारियां मिलेंगी जिन्हें आप धैर्य और परिश्रम से निबाहेंगे। मार्ग में कई बाधाएं आएंगी मगर आप उन्हें हिम्मत से पार कर लेंगे। दमे और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। बेईमानी और निर्दयता से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए नीलम सोने की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार को रात्रिभोज के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(14/05/2026 - 14/03/2029)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/05/2010 को प्रारंभ हुई थी और वद 14/05/2030 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 14/05/2026 जो आपके लिए 14/03/2029 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 8वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बुद्धिमान होंगे। व्यापार में दक्षता बढ़ेगी। धनवान बनेंगे। धार्मिक और दार्शनिक विषयों का ज्ञान बढ़ेगा। दान धर्म में धन खर्च करेंगे लेकिन कमाई भी अच्छी होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 रत्ती का पन्ना सोने की अंगूठी में बुधवार के दिन प्रातःकाल मध्यमा अंगुली में प्रार्थना के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(14/03/2029 - 14/05/2030)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/05/2010 को प्रारंभ हुई थी और 14/05/2030 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 14/03/2029 को प्रारंभ होकर 14/05/2030 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरों का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के लग्न भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको अपमान और उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। विषय-वासनाओं में रुचि बढ़ेगी जिससे पारिवारिक जीवन में विवाद हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों को या मंदिर में कंबल दान दें।
- भूरा कुत्ता पालें।
- कुत्तों को भोजन दें।

महादशा :- सूर्य
(14/05/2030 - 14/05/2036)

सूर्य की महादशा 14/05/2030 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की अवधि के बाद 14/05/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। सूर्य सम्पत्ति, दृष्टि परिवार, प्रभुत्व तथा पिता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वितीय भाव दृष्टि, परिवार (कुटुम्ब) तथा सम्पत्ति का द्योतक है। अतः इस दशा में आप सम्पत्ति, सम्मान, ख्याति, शक्ति तथा प्रभुत्व प्राप्त करेंगे। आपके अनेक मित्र होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप नेत्र-रोग तथा दाँत की समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं किन्तु ये रोग क्षणिक हैं। इस महा दशा में आपमें ऊर्जस्विता और शक्ति प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी।

अर्थ :

धन की प्राप्ति के लिये, खासकर सरकारी धन की प्राप्ति के लिए, यह दशा उत्तम है। आप धनी होंगे ओर धीरे-धीरे जीवन में सुदृढ़ स्थिति प्राप्त कर लेंगे। ताम्बे, सोने तथा अन्य धातुओं के व्यापार से धन-लाभ का अच्छा अवसर आपको प्राप्त होगा। आप स्वभाव से उदार हैं, जिससे आपको धन संग्रह में रुकावट आएगी। किन्तु, सिंह राशि में होने के कारण आपकी आमदनी स्थायी होगी। आप भूमि और सम्पत्ति के स्वामी हो सकते हैं।

व्यवसाय :

आपको सरकार से अधिकार, सम्मान तथा आदर प्राप्त होंगे। आप शक्तिशाली तथा स्वतंत्र हैं, और आप में नेतृत्व-क्षमता विद्यमान है। किसी के अधीन कार्य करना आपके लिये कठिन होगा। आप नेतृत्व का कार्य बखूबी करेंगे। आपमें आत्मविश्वास और जोखिम उठाने की क्षमता विद्यमान है। आप प्रशासकीय कार्यों के सम्पादन में प्रवीण होंगे। आपकी राजनीति में दिलचस्पी होगी। आपको सरकार तथा सम्भ्रान्त व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सोने और रत्नों का व्यवसाय कर सकते हैं और यदि नौकरीपेशा हों तो सम्पत्ति के रक्षक या वित्त, लेखा अथवा प्रशासन के प्रभारी पदधिकारी हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा, उनकी पदोन्नति होगी और कार्य-स्थान में एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मिलेगा। आपको अतिरिक्त आर्थिक लाभ हो सकता है। विधिवेत्ता, चिकित्सक तथा ज्योतिषी क्षेत्र आपके लिए उपयुक्त हैं।

कुटुम्ब :

आपको सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आप स्वभाव से सामाजिक हैं इसलिये आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी। आपको आपके परिवार से सुख मिलेगा। आप अत्यंत आशावादी तथा उत्साही होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होंगे और आपकी प्रवृत्ति साहसी होगी। आपकी माता के लिये यह समय हर तरह से लाभदयक है। आपके पिता की कार्य-क्षेत्र में स्थिति अनुकूल होगी ओर वह अपने प्रतिद्वन्द्वियों को अचम्भित करने में सक्षम होंगे। आपके छोटे भाई-बहन की यात्रा होगी, उनका धन व्यय होगा और वे विदेश यात्रा पर भी

जा सकते हैं। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उच्च कोटि की तथा शैक्षिक वृत्ति उत्तम होगी। आप वाद-विवादों, भाषण-कला तथा प्रतियोगिताओं आदि में सफल होंगे। आप भौतिकी, विद्युत-अभियन्त्रण, औषधि आदि से सम्बन्धित कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित कर सकते हैं।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(14/05/2030 - 01/09/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/05/2030 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 01/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप स्वयं के पुरुषार्थ द्वारा धन का संचय करेंगे। भौतिक सुख साधनों और विलासिता के उपकरणों का संचय करेंगे। सरकार और अधिकारीगणों से लाभ प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान में आपकी प्रतिभा और रुचि में वृद्धि होगी। विज्ञान से संबंधित कार्य से जुड़ने की संभावना है। शत्रुओं पर तर्कशक्ति से विजय प्राप्त होगी क्योंकि आप वाक्शक्ति के धनी हैं।

आपको आशा से अधिक धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी के परिवार से मतभेद की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। नौकरी में लगे व्यक्तियों के लिए समय भाग्यशाली रहेगा। व्यापारी और बुद्धिजीवी समृद्ध बनेंगे। संतान के लिए यह भाग्यशाली समय है। वे शिक्षा में खूब उन्नति करेंगे। धन कमाने में किस्मत साथ देगी, मगर उदार प्रकृति के कारण खुलकर खर्च भी करेंगे।

माता के लिए समय लाभप्रद रहेगा। जायदाद से पर्याप्त लाभ होगा।

आखों के रोग और गले की खराश के विरुद्ध सावधानी आवश्यक है। छोटे-मोटे कष्टों से बचाव के लिए लाल वस्त्र, लाल चंदन, गेहूं और घी का दान रविवार के दिन करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(01/09/2030 - 02/03/2031)

आपकी सूर्य की महादशा 14/05/2030 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 02/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपके धन और स्वास्थ्य उत्तम रहेंगे। आप सुखकारी गतिविधियों और शुभ उत्सवों में भाग लेंगे। धन, अधिकार और सत्ता प्राप्त करेंगे। सट्टेबाजी से आय में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। जीवनसाथी के भाग्य में वृद्धि होगी। आपको उन्नति, प्रसिद्धि, पक्की दोस्ती, धनलाभ आदि प्राप्त होंगे।

आपके बच्चों की शिक्षा, दीक्षा, जीवन आदि उत्तम रहेंगे। संतान का जन्म हो सकता है। आपके बड़े भाई-बहनों का विवाह हो सकता है। ललित कलाओं, नाटक आदि में आपकी रुचि रहेगी। समाज में सफलता मिलेगी। पिता का भाग्य उत्तम रहेगा। माता के संचित धन में वृद्धि होगी। शत्रुओं की आपको बदनाम करने की कोशिशें विफल रहेंगी। मामापक्ष के लोगों का भाग्य मंद हो सकता है। सेवारत जातकों का भाग्यवर्धक तबादला हो सकता है।

शिक्षारत जातकों के लिए यह स्वर्णिम समय है। आप तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर मामूली शिकायतों, पेट के रोग आदि से सावधानी रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सोमवार को उपवास रखें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(02/03/2031 - 08/07/2031)

आपकी सूर्य की महादशा 14/05/2030 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 08/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप उद्यमशील और सक्रिय रहेंगे। धन और भूमि प्राप्त करेंगे और सामान्यतः सफल रहेंगे। शत्रु परास्त होंगे। सेवारत जातकों के लिए लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के लिए यह समय व्यस्त और क्रियात्मक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं। साझेदारी में समस्याएं आ सकती हैं और अनुबंध फलान्वित नहीं भी हो सकते हैं। पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। माता का व्यवहार सुखदायी रहेगा। आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी और प्रसन्नता का वातावरण निर्मित करेगी। विशेषतः विज्ञान और गणित के विद्यार्थी उत्तम अंक प्राप्त करेंगे। आपके भाई-बहन धनवान बनेंगे।

मामा पक्ष के लोग जायदाद क्रय कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी कभी-कभी कटुवचनों का प्रयोग कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। ज्वर, फुंसी आदि मामूली शिकायतें हो सकती हैं। शुभत्व की वृद्धि हेतु हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(08/07/2031 - 01/06/2032)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/05/2030 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 08/07/2031 को प्रारंभ होकर 01/06/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सुख-संपत्ति उत्तम होंगे। घर में उत्सव या विवाह हो सकता है। जीवनसाथी को धन और उच्चपद प्राप्त होंगे। पिता को निवेश से लाभ होगा। उन्हें आप से सुख मिलेगा। माता की तीर्थयात्रा होगी। भाई-बहनों को अर्थलाभ के अवसर मिलेंगे। उन्हें अचानक धन मिल सकता है। वे परिश्रम द्वारा आकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे।

आपकी संतान को भौतिक सुख-साधन प्राप्त होंगे। उनकी रुचि ज्ञान-विज्ञान में होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके शत्रु के क्रियाकलापों का भंडाफोड़ होगा। परिवर्तन आपके लिए लाभकारी हो सकता है। इससे सुख-साधन बढ़ेंगे। व्यापारियों को निर्यात और

विदेश से लाभ होगा। परामर्शदाता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शत्रुओं पर विजय होगी। शरीर के ऊपरी भाग की भावनात्मक व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचने के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(01/06/2032 - 20/03/2033)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/05/2030 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 01/06/2032 को प्रारंभ होकर 20/03/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आप जायदाद खरीद सकते हैं या वर्तमान मकान आदि में परिवर्तन कर सकते हैं। माता-पिता से सुख और समर्थन मिलेंगे। उनके साथ संबंध उत्तम रहेंगे। वाहन सुख रहेगा। प्रोन्नति हो सकती है। शुभकार्यो पर खर्चे बढ़ सकते हैं। अध्यात्म में सफलता मिलेगी। अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार को प्रसिद्धि मिलेगी। वे अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, उनका जीवन सुखमय होगा। आपके पिता को अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। उनका मन अध्यात्म में लगेगा। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, उन्हें प्रसिद्धि और सुख प्राप्त होंगे। भाई-बहनों को धन मिलेगा, उत्तम नौकरी प्राप्त होगी, मातहतों का सहयोग मिलेगा। आपके बच्चों का मन पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य विषयों में लग सकता है।

सेवारत जातकों को लाभ मिलेगा। व्यापारियों को लाभ अधिक, खर्च कम रहेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर सर्दी, जुकाम आदि और शरीर के ऊपरी भाग में कष्ट हो सकता है। दुखों से बचाव के लिए केसर, हल्दी, चना और पीली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(20/03/2033 - 02/03/2034)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 20/03/2033 को प्रारंभ होगी और 02/03/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको धन मिलेगा। पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। अचल संपत्ति पर्याप्त होगी। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करना होना। निवेश से लाभ होगा। कार्य-व्यवसाय में बाधाएं आ सकती हैं। प्राच्यविद्या में रुचि रहेगी।

जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। पिता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

उनकी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। छोटे भाई-बहन बाधाओं पर विजय प्राप्त करेंगे। बड़े भाई-बहनों को लाभ होगा। आपकी संतान की नींव मजबूत होगी; उन्हें लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सबका सहयोग प्राप्त होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को गठबंधन और अनुबंधों से लाभ हो सकता है।

बीमार होने से सावधान रहें। शनि यदि जन्मपत्रिका में शुभ है तो हानि कम होगी। नेत्र के और वात से संबंधित रोग हो सकते हैं। अरिष्ट से बचने के लिए शनि की पूजा करें और तिल, काले वस्त्र, काले जूते, लोहे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(02/03/2034 - 06/01/2035)

आपकी सूर्य की महादशा 14/05/2030 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 02/03/2034 को प्रारंभ होकर 06/01/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ होगा। दिया हुआ कर्ज़ वापस मिलेगा। व्यापार, जमीन, जायदाद आदि से धन मिलेगा। लेखन, एजेंसी, कमीशन कार्य आदि में सफलता मिलेगी। ज्ञान, विज्ञान, चिंतन में आपकी रुचि रहेगी और सफलता, संपन्नता प्राप्त होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। दूसरों की जमीन, जायदाद, अमानत की देखभाल से सम्मान मिल सकता है। मुकदमें में सफलता मिलेगी। विवाह या साझेदार के माध्यम से धन मिल सकता है। जीवनसाथी को धनप्राप्ति होगी। पिता सुख-शांति से रहेंगे और धन कमाएंगे। माता के लिए उनकी मित्र सुखकारी होंगी। बड़े भाई-बहनों को गृहसुख और समृद्धि मिलेंगे। छोटे भाई-बहन शुभकार्यों पर धन व्यय करेंगे और यात्राएं करेंगे। आपकी संतान को स्पर्धा और परीक्षा में सफलता मिलेगी, लेखनकार्य से धन और प्रसिद्धि का लाभ मिलेगा।

सेवारत जातकों की यात्राएं होंगी; कार्यालय के कार्य और विचारों के आदान-प्रदान में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं को लाभ होगा और सकारात्मक कार्य करने के अवसर प्राप्त होंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य संतोषजनक रहेगा। नेत्ररोग, त्वचा विशेषतः, चेहरे की समस्याओं, स्मरणशक्ति के ह्रास के विरुद्ध सावधान रहें। अशुभता से बचने के लिए मूंग की दाल दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(06/01/2035 - 14/05/2035)

आपके लिए सूर्य की महादशा 14/05/2030 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 06/01/2035 को आरंभ होकर 14/05/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

महादशा :– चन्द्र
(14/05/2036 - 14/05/2046)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्षो की है। आपकी कुण्डली में यह 14/05/2036 को आरम्भ और 14/05/2046 को समाप्त होगी।

चंद्र पंचम भाव में अवस्थित है। पंचम भाव संपत्ति, आनन्द, मनोरंजन, मनोविनोद, विश्राम, वर्ग पहेली, जुआबाजी आदि प्रतियोगी गतिविधियों, लॉटरी प्रेम, उच्च शिक्षा और ज्ञान, अकूत सम्पत्ति तथा आध्यात्मिक गतिविधियों का द्योतक है। अतः यह अवधि आपके लिये आनंद दायक होगी और आपको समृद्धि तथा शांति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी की त्रिकोण में स्थिति के कारण आपका जीवन उत्तम होगा। इस अवधि में किसी बड़े रोग अथवा दुर्घटना की सम्भावना नहीं है और आप सामान्य जीवन का आनन्द लेने में सक्षम होंगे तथा अपने दैनिक कर्त्तव्यों का नियमित रूप से बिना किसी रुकावट के सम्पादन करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा अनुकूल होगी जब पंचम भाव में अवस्थित महादशा के स्वामी की एकादश भाव पर दृष्टि होगी। इस अवधि में आपकी चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि होने की संभावना है। आपकी आय में वृद्धि होगी और आप सुख-साधनों पर व्यय करने की स्थिति को प्राप्त करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

व्यवसाय :

आप निष्कपट, सत्यवादी, भद्र तथा ईश्वर से भयभीत रहने वाले हैं इसलिए आपको सरकारी पद, राज्य की सेवा के अवसर की प्राप्ति होगी। आपकी प्रतिष्ठा और स्थिति से समाज के अन्य लोगों को ईर्ष्या होगी और आपका कोई शत्रु नहीं होगा। सट्टे की ओर प्रवृत्ति के संकेत भी हैं जिसमें आपको लाभ मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण और आनन्ददायक होगा। आपके जीवन साथी सहयोगी और सहायक होंगे तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। संभव है आपका कोई बेटा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध होगा और परिवार को प्रसिद्धि दिलाएगा। आपका मस्तिष्क साफ रहेगा और बच्चों से आपको सुख की प्राप्ति होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धर्मग्रन्थों और अन्य पुराणों के अध्ययन में आपकी प्रवृत्ति होगी।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(14/05/2036 - 14/03/2037)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 14/05/2036 को प्रारंभ होकर 14/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 14/05/2036 को प्रारंभ होकर 14/03/2037 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर चंद्रमा की एकादश भाव पर दृष्टि है। आप जीवन हंसी-खुशी से बिताएंगे, मनोरंजन में समय व्यतीत करेंगे, संतान से प्रेम बढ़ेगा, लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेंगी, धर्म में रुचि होगी; आत्मा और मष्तिष्क का उत्थान होगा।

प्रतिस्पर्धा और सट्टे में लाभ संभव है। शुभत्व और सकारात्मक विचारों में वृद्धि के लिए चंद्र गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(14/03/2037 - 13/10/2037)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 14/05/2036 को प्रारंभ होकर 14/05/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 14/03/2037 को प्रारंभ होकर 13/10/2037 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर मंगल की जन्मपत्रिका के 4, 7, 8 भावों पर दृष्टि है। मंगल ऊर्जा का कारक और अग्नितत्व का ग्रह है।

इस अवधि में आप साहसी, अक्खड़, महत्वाकांक्षी होंगे। दुर्घटना से बचने के लिए सावधानी आवश्यक है। घरेलू जीवन क्रोध के कारण विचलित हो सकता है। आप मंगली हैं, अतः जीवनसाथी भी मंगली हो तो अच्छा रहेगा।

इस अवधि में अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के वैदिक मंत्र के 10,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(13/10/2037 - 14/04/2039)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 14/05/2036 को प्रारंभ हुई और 14/05/2046 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 13/10/2037 को प्रारंभ होकर 14/04/2039 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। राहु छायाग्रह है और लगभग शनि के अनुसार कार्य करता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली में सप्तम भाव को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है। सप्तम में केतु स्थित है।

इस अवधि में आप स्वार्थी, शक्की और निम्नकार्यों में रुचि रखने वाले हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। कार्यप्रणाली कुछ अजीब हो सकती है। विवाहित जीवन में विवाद संभव है।

नकारात्मक विचारों से बचें। स्वयं पर भरोसा करें ओर आगे बढ़े। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(14/04/2039 - 13/08/2040)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 14/05/2036 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 14/04/2039 को प्रारंभ होकर 13/08/2040 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि धर्म, अध्यात्म आदि में रहेगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, भाग्य साथ देगा, सुख-शांति प्राप्त होंगे। घरेलू वातावरण मंगलमय रहेगा। विरोधी निर्बल रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(13/08/2040 - 14/03/2042)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 14/05/2036 को प्रारंभ हुई और 14/05/2046 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 13/08/2040 को प्रारंभ होकर 14/03/2042 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शनि

आयुष्कारक है। इसके अष्टम भाव में स्थित होने से आपकी आयु लंबी रहेगी। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप उत्तरदायित्वों का निर्वाह धैर्य और परिश्रम द्वारा सभी बाधाओं को पार करने के बाद करेंगे। नेत्र और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। ईमानदारी और दयाभाव बनाए रखें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी की अंगूठी में नौमुखी रुद्राक्ष को शनिवार के दिन शिवजी की पूजा करने के बाद शनि के वैदिक मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(14/03/2042 - 14/08/2043)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 14/05/2036 को प्रारंभ हुई थी और 14/05/2046 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 14/03/2042 को प्रारंभ होकर 14/08/2043 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। बुध दूसरे भाव में स्थित होकर आठवें भाव पर दृष्टिपात कर रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप खूब धन कमाएंगे। बुद्धिमत्ता में वृद्धि होगी। दान-धर्म में धन खर्च करेंगे पर धन की बचत में भी माहिर होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करना श्रेयस्कर रहेगा।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(14/08/2043 - 14/03/2044)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 14/05/2036 को प्रारंभ हुई ओर 14/05/2046 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 14/08/2043 को प्रारंभ होकर 14/03/2044 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली में लग्न को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में दांपत्य संबंधों में कुछ कष्ट हो सकता है। आपकी वासना में वृद्धि के कारण जीवनसाथी रुष्ट हो सकते हैं। चरित्र में गिरावट न आने दें। अपमान और वीर्यशक्ति में ह्रास के संकेत है। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(14/03/2044 - 12/11/2045)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 14/05/2036 को प्रारंभ होकर 14/05/2046को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 14/03/2044 को प्रारंभ होकर 12/11/2045 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर यह कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डालकर उसके शुभत्व में वृद्धि कर रहा है। इस अवधि में आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, कार्यक्षमता बढ़ेगी और प्रसन्नचित्त रहेंगे। स्वादिष्ट भोजन और उत्तम वाहन प्राप्त होंगे। दूसरों की कृपा से धनागम होगा। स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति उत्तम रहेंगे। खानपान में सावधानी बरतें, अधिक भोजन से बचें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(12/11/2045 - 14/05/2046)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 14/05/2036 को प्रारंभ होगी और 14/05/2046 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 12/11/2045 से प्रारंभ होकर 14/05/2046 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, खर्चे बढ़ेंगे। लड़ाई-झगड़े और मुकदमे की नौबत आ सकती है। परिश्रम से धन कमाएंगे। आप जिद्दी और चिड़चिड़े हो सकते हैं। जायदाद की कुछ हानि हो सकती है। इस अशुभ समय में सतर्क रहना आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न टोटके करें :

1. दूध और शहद का सेवन करें, अग्नि में दूध अर्पित करें।
2. गरीबों को आटा, गुड़ और तांबे का दान करें।
3. किसी नदी, नहर आदि में तांबे के सिक्के डालें और उन्हें प्रवाहित होते देखें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

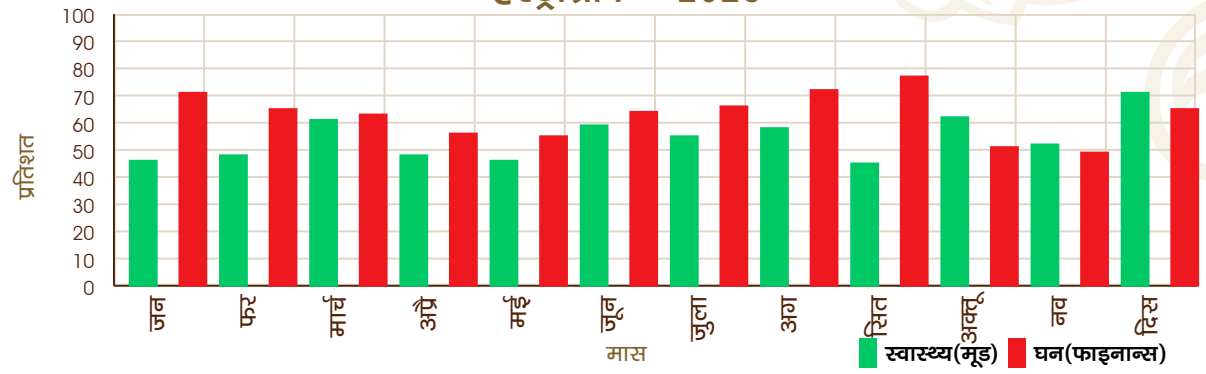

एस्ट्रोग्राफ - 2027

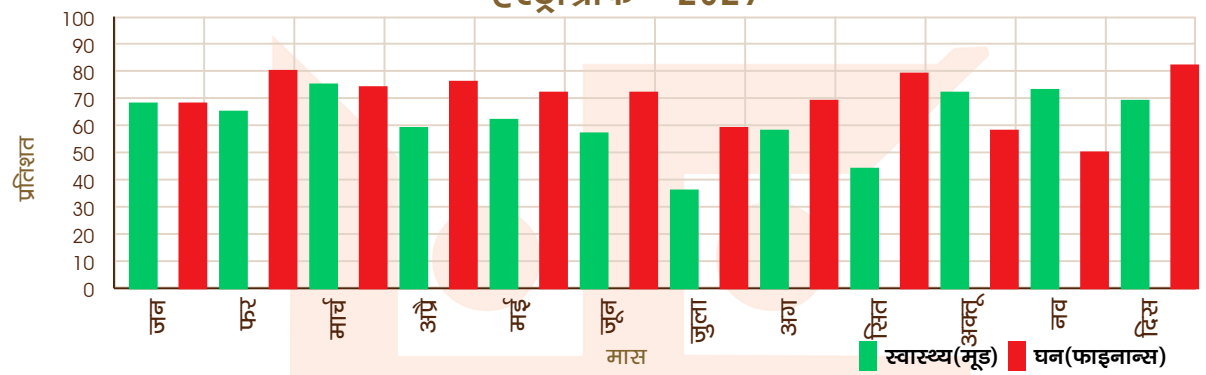

एस्ट्रोग्राफ - 2028

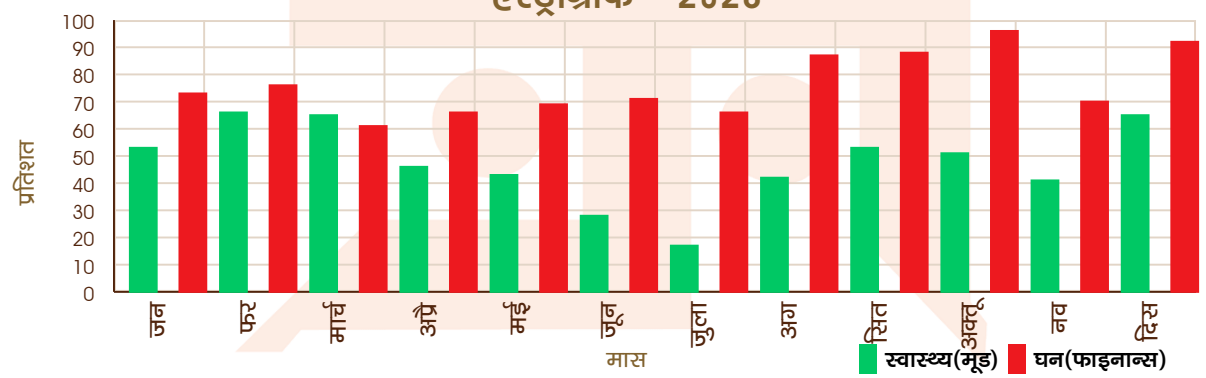

एस्ट्रोग्राफ - 2029

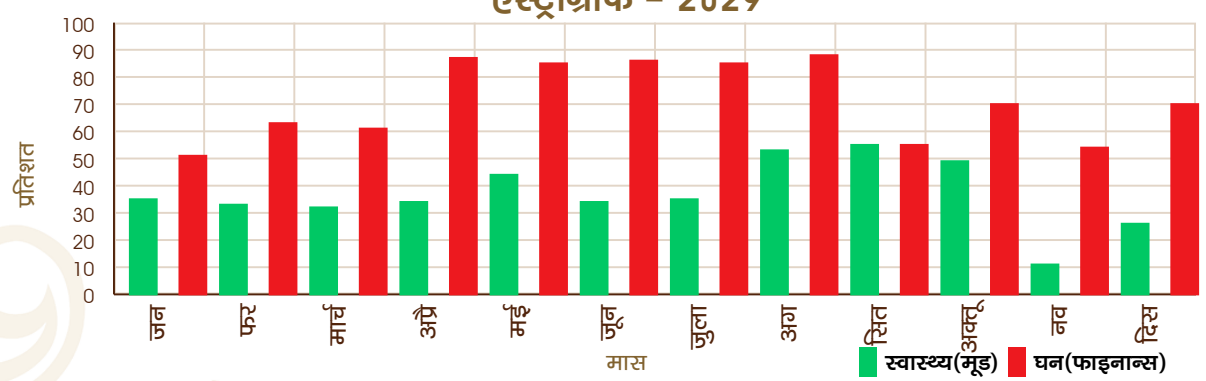

एस्ट्रोग्राफ - 2030

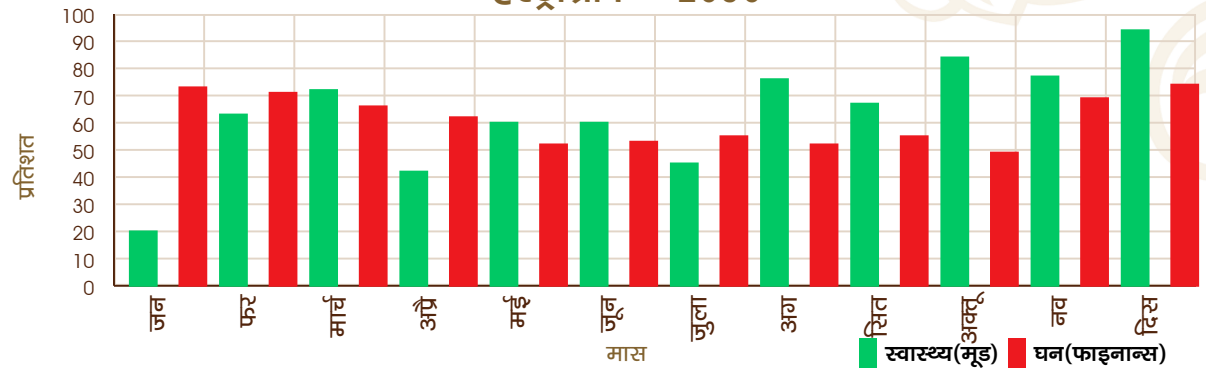

एस्ट्रोग्राफ - 2031

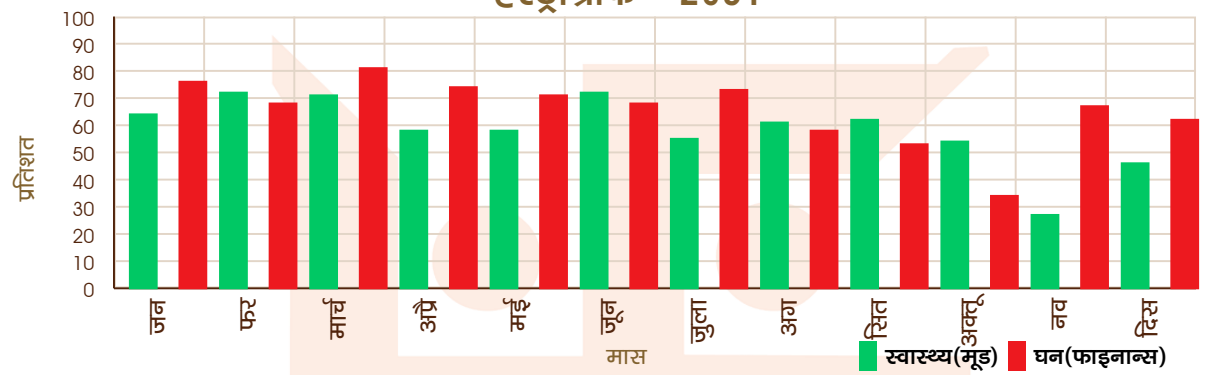

एस्ट्रोग्राफ - 2032

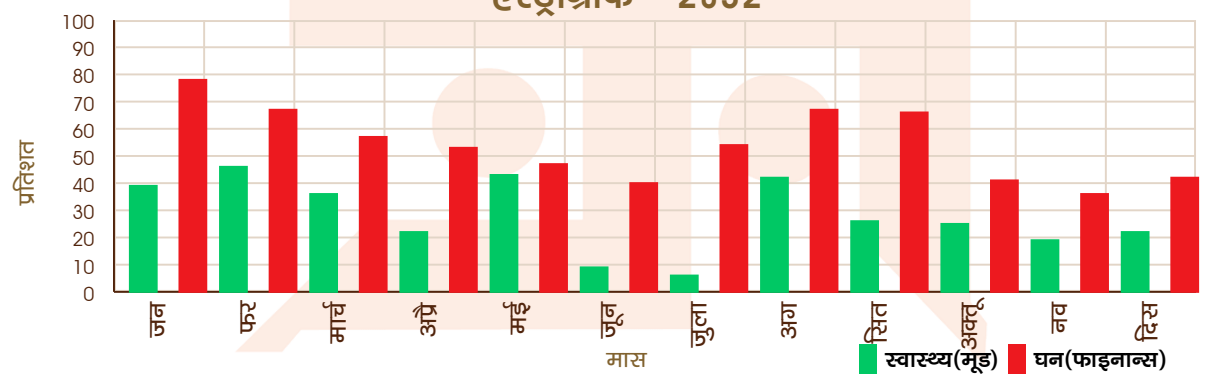

एस्ट्रोग्राफ - 2033

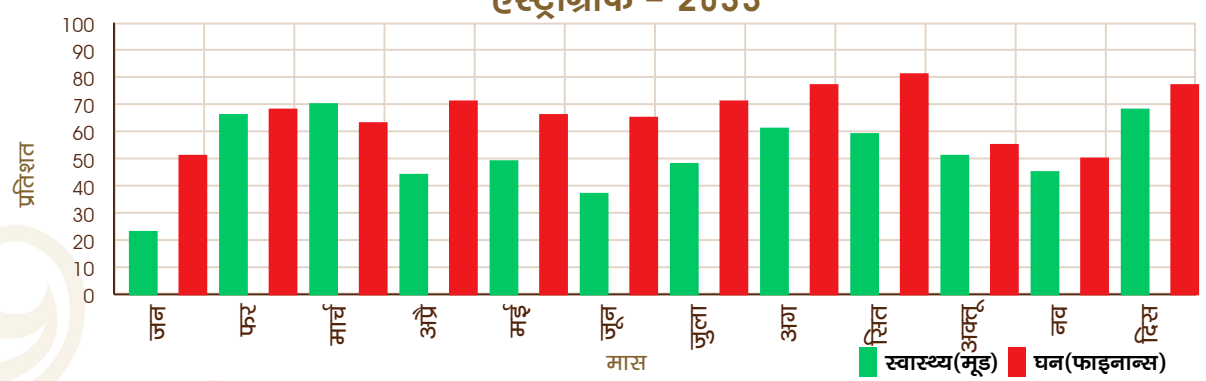

एस्ट्रोग्राफ - 2034

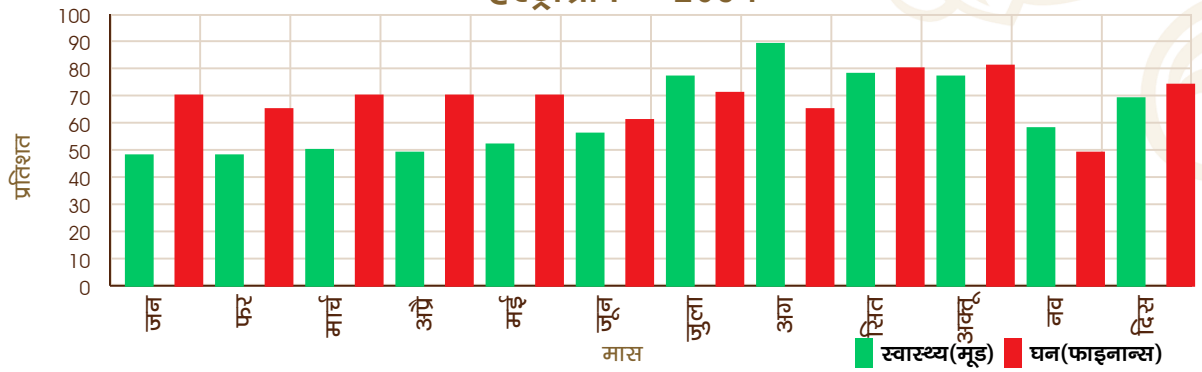

एस्ट्रोग्राफ - 2035

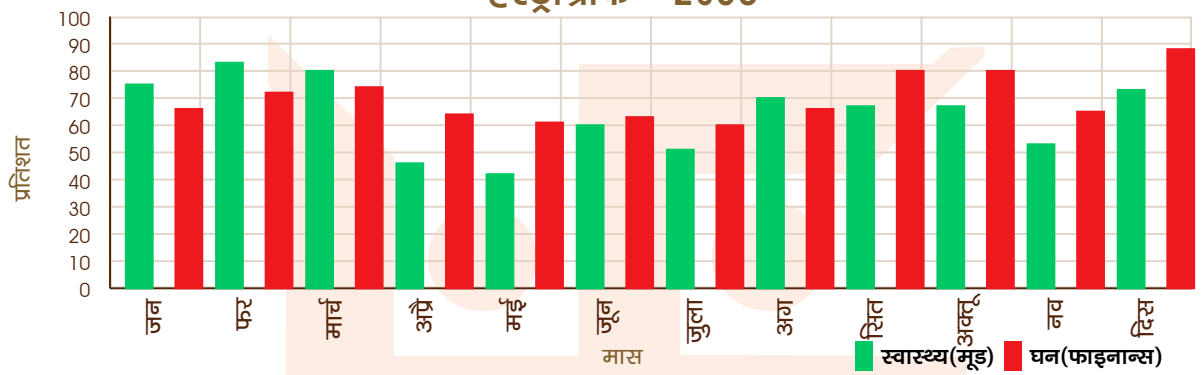

एस्ट्रोग्राफ - 2036

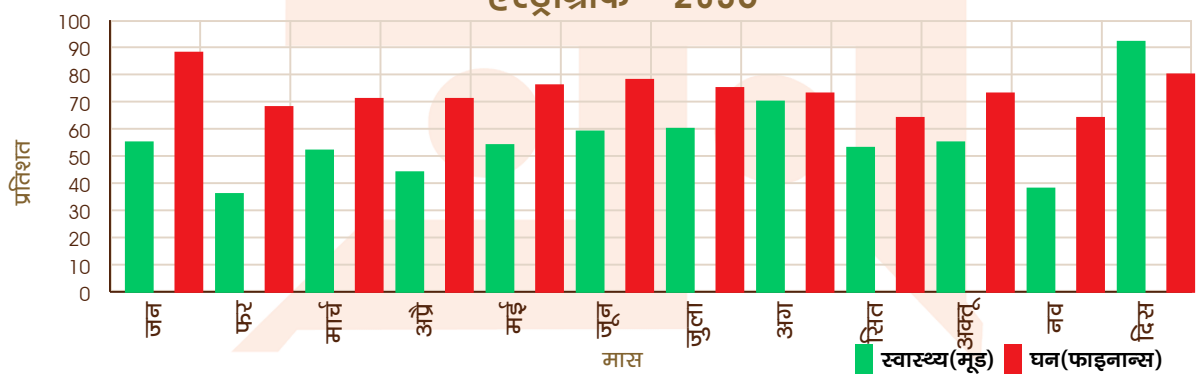

एस्ट्रोग्राफ - 2037

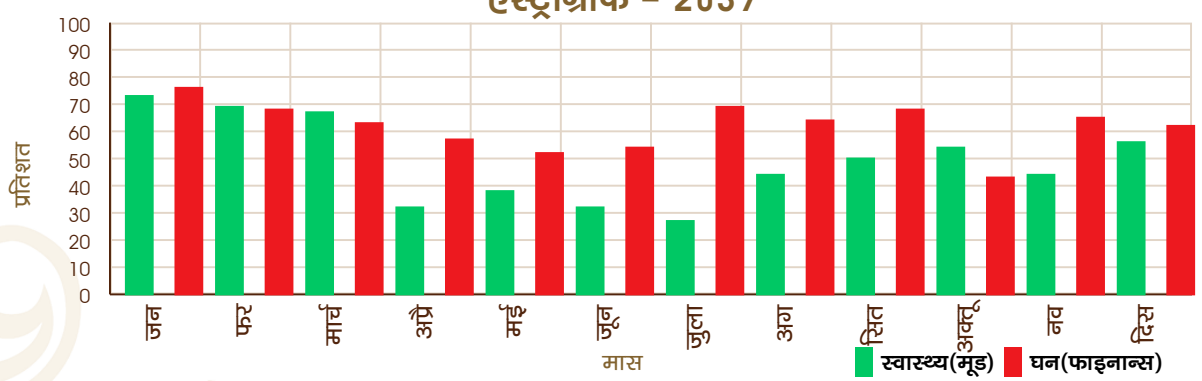

एस्ट्रोग्राफ - 2038

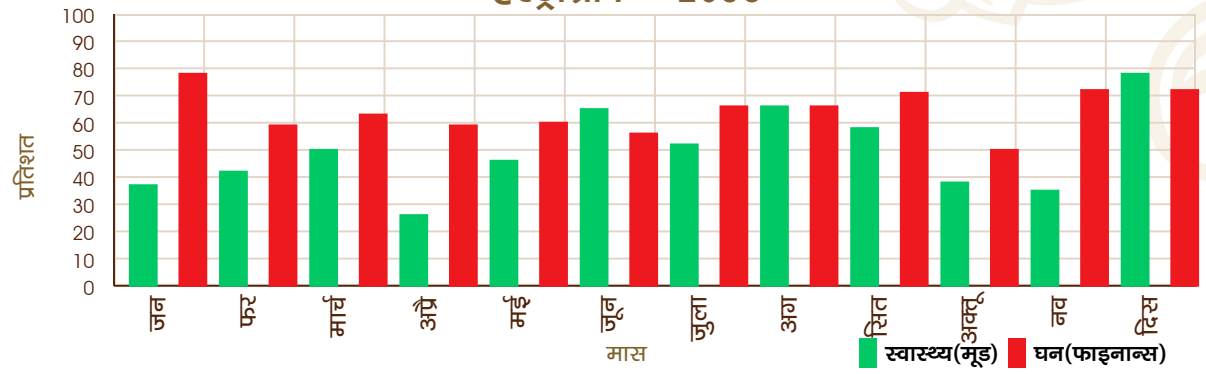

एस्ट्रोग्राफ - 2039

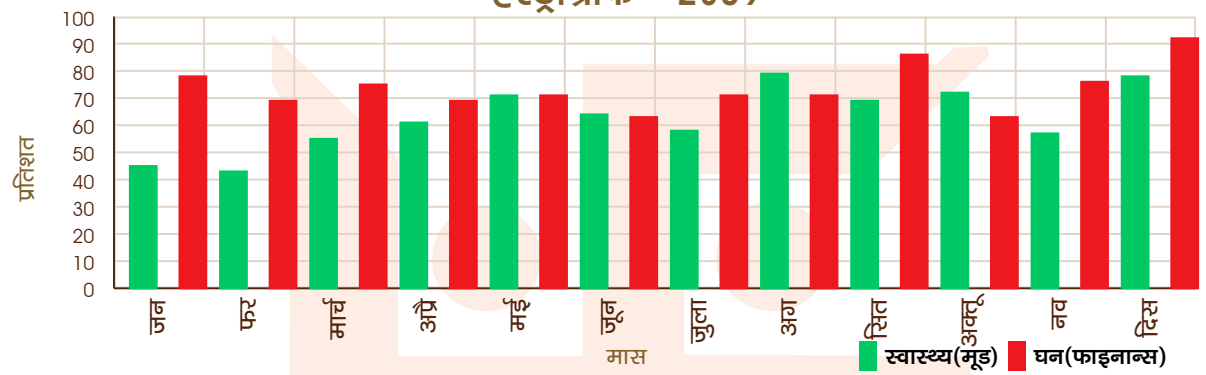

एस्ट्रोग्राफ - 2040

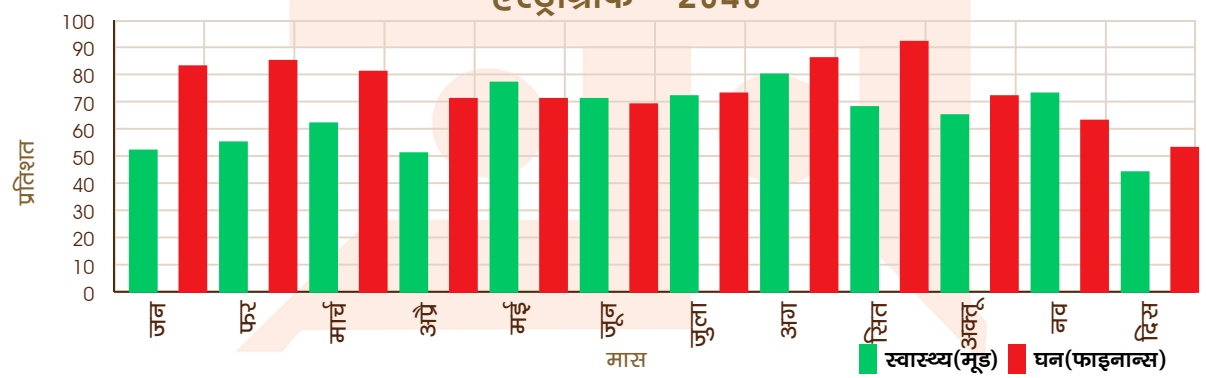

एस्ट्रोग्राफ - 2041

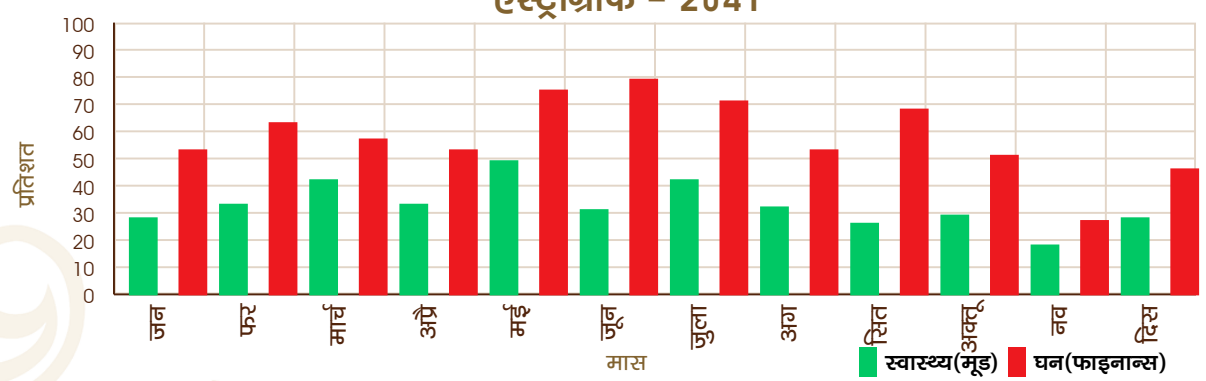

एस्ट्रोग्राफ - 2042

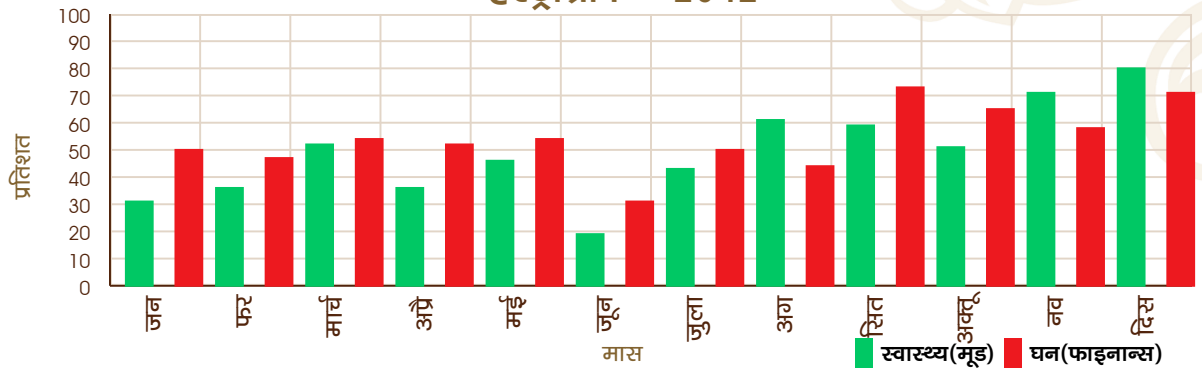

एस्ट्रोग्राफ - 2043

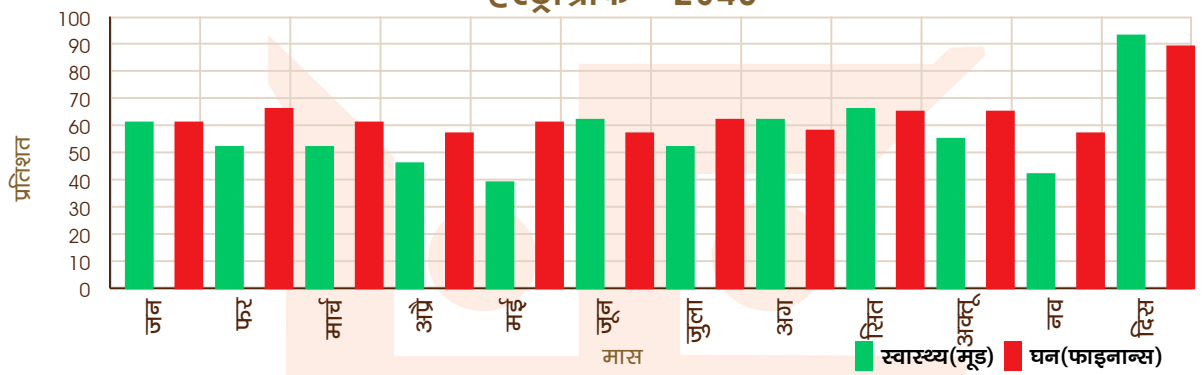

एस्ट्रोग्राफ - 2044

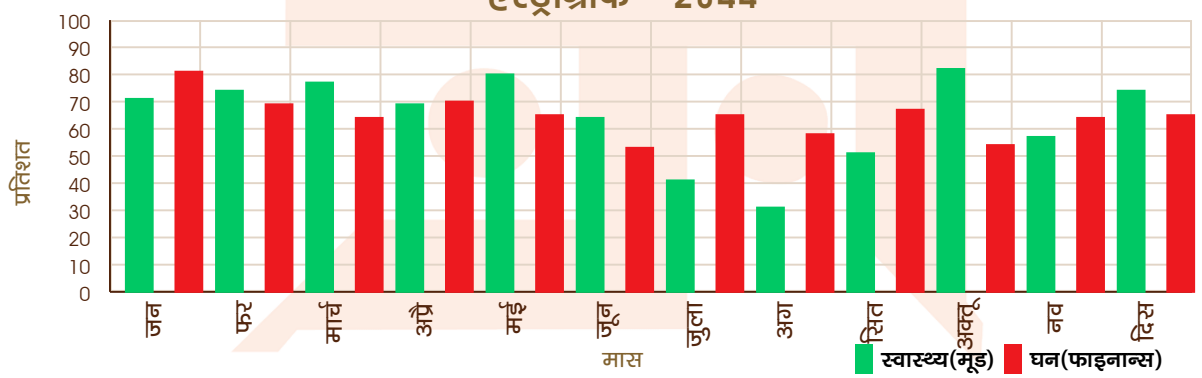

एस्ट्रोग्राफ - 2045

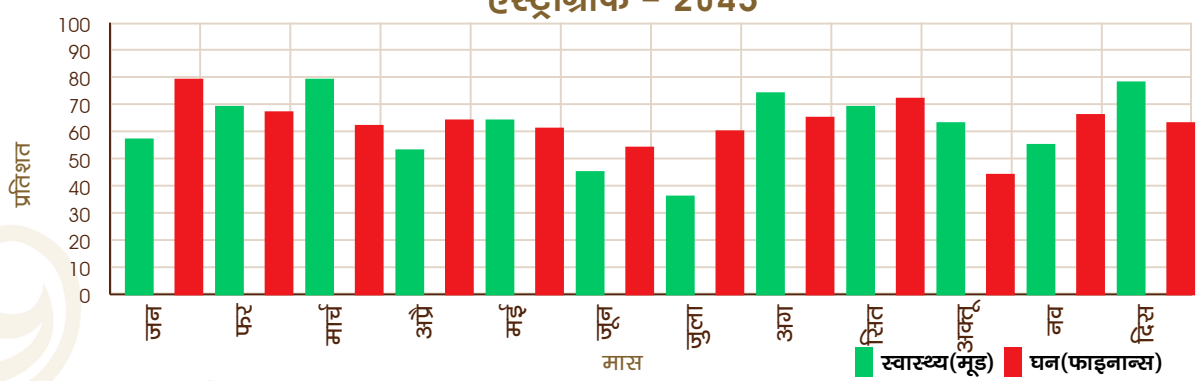

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा-
विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यास्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।
।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गों के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

वाशि योग

सूर्यादव्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।

योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35, 36।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको

कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

त्रिकालज्ञ योग

भृगौ सौम्यसमायुक्ते दृष्टे ताभ्यां शुभांशके ।
त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-53 ।।

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र बुध से युक्त हो, गुरु अपने नवांश में मृद्वंश से युक्त हो बुध शुक्र से दृष्ट हो तो त्रिकालज्ञ योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूत-भविष्य वर्तमान के ज्ञाता होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।

।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका

जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु,मंगल योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।